हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीगी तक़रीरें

दावत व तब्लीग़

हिस्सा अव्वल

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी (एम. ए.)

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीग़ी तक़रीरें

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब — दावत व तब्लीग़ (1)

तक़रीरें — मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह.

मुरत्तिब — मौलाना शफ़ीक़ अहमद क़ासमी
व मौलाना अज़्फ़र जमाल क़ासमी

हिन्दी अनुवाद — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 1100

प्रकाशन वर्ष — अक्तूबर 2004

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स
मुज़फ़्फ़र नगर 0131-2442408

मूल्यः — 75/-

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली -110002

विषय सूची

इन्तिसाब

मोहतरम मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी के नाम जिन्होंने इस किताब की तरतीब व इशाअ़त का हौसला दिया।

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

इज़्हारे शुक्रिया

जनाब मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी की ख़िदमत में जिन्होंने इस किताब की तरतीब व इशाअ़त का हौसला दिया।

मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर के सदरुल्-मुदर्रिसीन उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना नबीह मुहम्मद साहिब दामत बरकातुहुम की ख़िदमत में, जिन्होंने हर तक़रीर अव्वल से आख़िर तक पढ़कर तरतीब के सिलसिले में अपने इत्मीनन का इज़्हार किया।

अ़ज़ीज़े ग्रामी मौलवी हाफ़िज़ ज़करिया के लिए दुआ़एँ जिनका टेपरिकार्डर इस किताब की तरतीब का ज़रिया बना।

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

अपनी बात

शराबे कोहन फिर पिला साक़िया!
वही जाम गर्दिश में ला साक़िया!

(अ़ल्लामा इक़बाल)

कोई 21 नवम्बर 1994 ई० सोमवार का दिन था। घड़ी दिन के दस बजा रही थी। मैं मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर के दफ़्तर में अपने काम में मशग़ूल था, मेरे मोहतरम और करम-फ़रमा जनाब अ़ब्दुल हलीम साहिब क़ासमी नगपुरी दफ़्तर में तशरीफ़ लाए।

कुछ ही दिन पहले वह ज़िला हरिद्वार के अनेक मुक़ामात पर एक चिल्ला लगाकर घर वापस हुए थे। पहले उन्होंने कुछ सफ़र की रूदाद और चिल्ले की कारगुज़ारी सुनाई और उसके बाद फ़रमायाः

"अजी शफ़ीक़! तुम एक काम कर डालते तो बड़ा अच्छा होता। बड़ा इल्मी ज़ख़ीरा और बड़े काम की चीज़ें महफ़ूज़ हो जातीं। तुम्हारा ज़ौक़ भी है और अल्लाह ने साधन भी दिए हैं। मुझे यक़ीन है कि अगर तुम कोशिश करोगे तो यह काम बड़ी हद तक अन्जाम पा जाएगा"।

मैंने कहा हज़रत फ़रमाईए तो सही!

"दाई-ए-हक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की तक़रीरें तरतीब दे डालो और उन्हें छपवा दो......" मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब ने जवाब में इरशाद फ़रमाया।

मैं कुछ दिन तो कश्मकश में रहा। मिलने वालों और अपने दोस्तों

से मश्विरे भी करता रहा लेकिन इतने बड़े काम के लिए हिम्मत न हो रही थी ...... मदरसा रियाज़ुल उलूम गुरैनी के उस्ताज़े हदीस हमारे दोस्त और सबक़ के साथी जनाब मौलाना सआदत अ़ली साहिब क़ासमी इलाहाबादी की बातों ने और ज़्यादा प्रेरणा दी ...... फिर मैंने एक रात दस बजे के बाद अल्लाह की बारगाह में सर सज्दे में रखा और इतने बड़े काम को आसान करने और उसमें इख़्लास के लिए दुआएँ माँगीं, और काम की शुरुआ़त कर दी।

आज मैं बहुत ख़ुश हूँ और अल्लाह तआ़ला का बहुत ही शुक्र-गुज़ार, कि वह अहम और बड़ा काम जिसकी जानिब हज़रत मौलाना अ़ब्दुल हलीम साहिब दामत बरकातुहुम ने तवज्जोह दिलाई थी, उसमें का कुछ हिस्सा मन्ज़रे-आ़म पर लाने की सआ़दत नसीब हो रही है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी दामत बरकातुहुम के दीनी बयानों के मजमूए का नाम "दावत व तब्लीग़" रखा गया है, और यह "दावत व तब्लीग़" की पहली जिल्द है। इस किताब की दूसरी जिल्द इन्शा-अल्लाह जल्द ही पेश की जायेगी।

इस किताब के छपकर सामने आने में शायद बहुत देर लग जाती लेकिन अल्लाह तआ़ला बेहतरीन बदला और जज़ा इनायत फ़रमाये उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना अल्-हाज ज़मीर अहमद साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के साहिबज़ादे मौलाना मुहम्मद अज़्फ़र जमाल साहिब क़ासमी को जिन्होंने मेरी तरह-तरह की मस्रूफ़ियात (व्यस्तताओं) को देखते हुए ख़ुद फ़रमाया कि मैं इस सिलसिले में हर मुम्किन मदद और सहयोग के लिए हाज़िर हूँ...... अल्लाह तआ़ला ने मौलाना अज़्फ़र जमाल साहिब को किताब लिखने और तरतीब देने का अच्छा ज़ौक़ दिया है। इस किताब की तरतीब में उनकी भरपूर मदद मेरे साथ रही।

हमें यक़ीन है कि अगर इस किताब को आप सच्चे दिल से पढ़ेंगे

तो इन्शा-अल्लाह दीन की वह दावत आपकी समझ में अच्छी तरह आ जाएगी जो दाइ-ए-हक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब दामत बरकातुहुम ने दिल के पूरे दर्द और तड़प के साथ दी है।

अल्लाह तआ़ला हमारे हर काम में इख़्लास अ़ता फ़रमाएँ और दीन का दाई (दावत देने वाला) बनाएँ। आमीन

दुआ़ओं और मुफ़ीद मश्विरों का उम्मीदवार

शफ़ीक़ अहमद क़ासमी

उस्ताद मदरसा करामतिया
दारुल्-फ़ैज़, जलालपुर
ज़िला अम्बेडकर नगर (उ. प्र.)
तारीख़ 21 रमज़ान मुबारक 1416 हिजरी
11 फ़रवरी 1996 ई०

परिचय

अज़ हज़रत मौलाना नबीह मुहम्मद साहिब मद्-द ज़िल्लहू सदरुल्-मुदर्रिसीन मदरसा करामतिया दारुल्-फ़ैज़ जलालपुर

हामिदंव्-व मुसल्लियन्। अल्लाह के रसूल ख़ातिमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उमूमी फ़रमान "फ़ल्-युबल्लिग़िश्- शाहिदुल् ग़ाइ-ब" (पस चाहिए कि जो मौजूद है वह उसको पहुँचा दे जो मौजूद न हो) ने उम्मत के हर उस आदमी पर जो दीन की बात सुनने या जानने वाला है, ज़रूरी कर दिया कि दीन की बात उन लोगों तक पहुँचाए जिन्होंने नहीं सुना, नहीं जाना। अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दों ने तब से अब तक इस फ़रमान पर अ़मल को जारी रखा, कभी तहरीर से, कभी तक़रीर से, कभी ख़ुसूसी समझाने-बुझाने से, कभी उमूमी सम्बोधन से। ग़रज़ जिस तरह का भी मौक़ा मयस्सर हुआ, उससे फ़ायदा उठाते हुए उसे ग़नीमत समझते हुए इस फ़रीज़े को अन्जाम दिया, और दे रहे हैं। लेकिन अल्लाह ने किसी भी काम की सलाहियत हर शख़्स को बराबर नहीं दी। हर शख़्स अपनी सलाहियत और योग्यता के अनुसार ही काम कर सकता है। किसी के बयान में जो रवानी, वज़ाहत और तासीर हो, ज़रूरी नहीं कि दूसरे के बयान में भी ये चीज़ें उसी दर्जे में हों। चुनाँचे कुछ बयान ऐसे असरदार (प्रभावकारी) होते हैं कि कहा गया:

إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا

यानी बाज़े बयान करने वाले जादू का असर रखते हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की दीनी मेहनत से जुड़े हुए लोगों में इस वक़्त हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी (अल्लाह उनकी उम्र को लम्बी करे और उनके

फ़ैज़ को आ़म करे) भी अल्लाह के ऐसे चुने हुए बन्दों में से हैं, जिनके बयान की यही शान नुमायाँ है।

जहाँ में ग़लग़ले हैं उस ज़ात की जादू बयानी के
मगर जादू-बयानी वह कि जिसमें है दर्से ईमानी

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी के बयानात को और ज़्यादा आ़म करने की एक शक्ल यह भी थी कि उन बयानों को लिखकर किताबी शक्ल में शाया किया जाए। इससे जहाँ एक तरफ़ बयान की इशाअ़त (प्रसार) होगी तो दूसरी तरफ़ यह फ़ायदा भी हो सकता है कि दूसरों को उस अन्दाज़ पर बात करने का सलीक़ा मयस्सर होगा। वैसे तो असल चीज़ बयान करने वाले और बात के कहने वाले के अन्दर का दिली दर्द और ज़ेहनी फ़िक्र है।

अज़ दिल ख़ेज़द बर दिल रेज़द

जो चीज़ दिल से निकलती है वह सीधी दिल पर असर करती है।

दर्द वाले और बेदर्द का रोना बराबर नहीं हो सकता। हज़रत मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया था कि जब तुम इख़्लास और सही फ़िक्र व दर्द के साथ दीन के दाई (दावत देने वाले) बनोगे तो अल्लाह तुम से वे हिक्मत की बातें कहलाएँगे जो तुमने पहले से सोचा न होगा।

अ़ज़ीज़म मौलवी शफ़ीक़ अहमद सल्ल-मह़ू ने मौलाना मुहम्मद उमर साहिब पालनपुरी के बयानात को किताबी शक्ल में लाने का सिलसिला शुरू किया है। इन तक़रीरों का मुसौदा मैंने पूरा एक-एक शब्द देखा है और इससे लाभान्वित हुआ हूँ। अल्लाह तआ़ला इख़्लास (नेक-नीयती) व साबित-क़दमी) नसीब फ़रमाए और उनकी इस कोशिश को बेहतरीन शक्ल में सामने लाये। आमीन

नबीह मुहम्मद

11 शाबान 1416 हिजरी

तक़रीर (1)

जो तब्लीग़ी इज्तिमा भोपाल में की गई।

मेरे मोहतरम दोस्तो!

चारों तरफ़ से लोग मर-मरकर जहन्नम के अन्दर जा रहे हैं और हमारे दिलों में इसकी फ़िक्र न हो। ऐसी बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह के नबियों वाला दर्द, नबियों वाला ग़म, नबियों वाली बेचैनी जमाअ़तों में फिरकर हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए। यह नबियों वाली बेचैनी और नबियों वाला जो ग़म होगा वह काम करवाएगा, कम सलाहियत वाले से भी ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी और ज़्यादा माल वालों से भी, कम इल्म वालों से भी और ज़्यादा इल्म वालों से भी, काम लेने वाले अल्लाह हैं।

(इसी तकरीर का एक हिस्सा)

तक़रीर (1)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَاتَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ٥ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ٥ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ٥ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ، اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ٥ (پاره ۲۴)

وقال اللّٰه تعالٰى .... فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ. (پاره ۲۶)

हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हर इनसान की चार मन्ज़िलें हैं। एक मन्ज़िल तो माँ के पेट की है। दूसरी मन्ज़िल दुनिया के पेट की है। तीसरी मन्ज़िल क़ब्र के पेट की है और चौथी आख़िरत की है।

ये चार मन्ज़िलें हर इनसान की हैं। माँ के पेट के अन्दर तो अल्लाह पाक ने इनसान का बदन बनाया और उसमें रूह डाली, तंग जगह में और अन्धेरे के अन्दर।

दुनिया के पेट के अन्दर अल्लाह पाक ने इनसान को इस लिए भेजा ताकि क़द्र-दानी वाले रास्ते पर चले और नाक़द्री वाले रास्ते को छोड़ दे। अल्लाह पाक की उसके ऊपर जो मेहरबानियाँ हैं उनकी क़द्र पहचाने और अल्लाह की बात मानता हुआ दुनिया से जाए।

थोड़ा-सा इख़्तियार थोड़े-से वक़्त के लिए

इस दुनिया के अन्दर अल्लाह पाक ने इनसान को थोड़ा-सा इख़्तियार दिया है, थोड़े-से वक़्त के लिए दिया है। पूरा इख़्तियार नहीं दिया है। पूरा इख़्तियार देते तो दुनिया में कोई बीमार न होता, कोई बूढ़ा न होता, कोई हारता नहीं, ज़्यादातर मौत को नहीं चाहते तो कोई मरता भी नहीं। लेकिन इनसान को अल्लाह पाक ने पूरा इख़्तियार नहीं दिया है। थोड़ा इख़्तियार दिया है भले और बुरे का। यह हाथ अल्लाह पाक ने दिया है, इससे यतीमों और मिस्कीनों को जाकर रोटी तक़सीम कर सकता है। और इस हाथ के अन्दर यह भी ताक़त है कि दूसरे के हाथ से रोटी छीन सकता है। ये दोनों ताक़तें अल्लाह ने दी हैं।

माँ के पेट के अन्दर तो इनसान बिल्कुल मजबूर है। जैसा बनाया वैसा बन गया। लड़का बनाया या लड़की बनाया, काला बनाया या गोरा बनाया। ज़्यादा समझ वाला बनाया या कम समझ वाला बनाया। जैसा बनाया वैसा बन गया। वहाँ तो कोई इख़्तियार नहीं, जौनसे

ख़ानदान में और जौनसी क़ौम में पैदा कर दिया।

इस दुनिया में आने के बाद इनसान को थोड़ा-सा इख़्तियार है, थोड़े-से वक़्त के लिए। और वह थोड़ा वक़्त मौत तक का है। इसके अन्दर अगर अपने इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो यह आदमी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होगा। और अगर इसके अन्दर इनसान ने अपने इख़्तियार को अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो दुनिया व आख़िरत में यह परेशान, तबाह व बरबाद होगा।

अल्लाह की नाराज़गी मुसीबत का सबब है

एक तो है अल्लाह की मर्ज़ी और एक है अपनी मर्ज़ी। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने में एक मुजाहदा (मेहनत) है। वह यह कि अपनी मर्ज़ी छोड़ देनी पड़ती है। और अपनी मर्ज़ी पर चलने के अन्दर शुरू में एक सहूलियत है, वह यह कि आदमी "जी चाही" पर चलता है। लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी के छूट जाने पर अल्लाह नाराज़ होता है। और अल्लाह पाक का नाराज़ होना बहुत बड़ी मुसीबत है।

ज़मीन व आसमान पैदा करने वाले अल्लाह हैं। चाँद व सूरज को पैदा करने वाले अल्लाह हैं, और इस इनसान को अन्धेरे के अन्दर और तंग जगह के अन्दर पैदा करने वाले जो अल्लाह हैं, क़ादिरे मुतलक़ अल्लाह हैं। जब वह नाराज़ हो जाते हैं तो आदमी बहुत परेशान हो जाता है।

फ़ौरन पकड़ नहीं

लेकिन इतनी मेहरबानी तो अल्लाह तआला फिर भी करते हैं कि जब इनसान अल्लाह को नाराज़ करने वाला काम करता है तो उसकी फ़ौरन पकड़ नहीं करते बल्कि उसके लिए हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं। उसके सुधरने का इन्तिज़ाम करते हैं। फिर भी अगर वह हिदायत पर नहीं आता, सुधरता नहीं, फिर भी उसकी पकड़ नहीं करते।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और फ़िरऔन की गुफ़्तगू

फ़िरऔन है, ख़ुदाई का दावा किया, लेकिन एक दम से उसकी पकड़ नहीं की। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को समझाने भेजा। उसने मज़ाक़ उड़ाया, फिर दूसरी बार समझाया फिर उसने मज़ाक़ उड़ाया। फिर तीसरी बार समझाया तो वह गुस्से में आ गया और उसने कह दिया:

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِىْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ (پ ١٩)

यानी अगर मेरे सिवा कोई और ख़ुदा तुमने माना तो तुमको जेलख़ाने भेज दूँगा।

उसको तजुर्बा था। बहुत-सों को उसने जेलख़ाने भेजा था। हज़रत मूसा ने कहा:

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَیْءٍ مُّبِيْنٍ ٥ (پاره ١٩)

यानी अगर मैं कोई खुली चीज़ तेरे पास ले आऊँ तो क्या फिर भी मेरे को तू जेलख़ाने भेजेगा?

उसके तो ज़ेहन में भी नहीं आया कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम खुली चीज़ क्या लाएँगे?

तो उसने कहा:

"قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (پ ١٩)

यानी फ़िरऔन ने कहा अगर तुम सच्चे हो तो लाओ।

हिदायत का सामान

अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डन्डे को ज़मीन पर डाल दिया तो वह बड़ा अज़्दहा बन गया और अपने हाथ मुबारक को बग़ल से निकाला तो वह बहुत चमकदार बन गया।

यह उसके लिए हिदायत का सामान और इन्तिज़ाम था। उसको

चाहिए था कि इस मोजिज़े (नुबुव्वत की निशानी) को देखकर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की बात को मान लेता कि यह अल्लाह के भेजे हुए हैं।

लेकिन नहीं माना ...... फिर मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अज़्दहा पकड़ा वह डन्डा बन गया।

उस वक़्त तो फ़िरऔ़न थोड़ा सहम गया, डर गया, घबरा गया, लेकिन फिर उसने मीटिंग जमाई। जितने मिम्बर थे सबको जमा किया। फ़िरऔ़न और सारे के सारे दरबारियों ने मिलकर सोचा कि यह तो जादूगर है, इसके लिए जादूगर जमा करो। जादूगर जमा हो गए। देखने के लिए बड़ा मजमा इकट्ठा हो गया। जादूगरों ने अपना जादू डाला। उन्होंने रस्सियाँ डालीं और चारों तरफ़ साँप-बिच्छू दौड़ने लगे।

मूसा की लाठी और जादूगरों का ईमान

अब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपना डन्डा डाला। वह अज़्दहा बन गया जो सारे साँपों को निगल गया। यह देखकर जादूगरों ने समझ लिया कि यह शख़्सियत जादूगर नहीं है। बल्कि यह अल्लाह के नबी हैं। फ़ौरन सब सज्दे में गिर गए और सबने कहा:

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○ رَبِّ مُوْسٰى وَ هَارُوْنَ ○ (پاره ۹)

यानी वे बोले कि हम ईमान लाए परवर्दिगारे आ़लम पर जो रब है मूसा और हारून का।

फ़िरऔ़न का गुस्सा

फ़िरऔ़न को यह देखकर बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा मैंने तुम्हें इनाम देने के लिए कहा, अपना क़रीबी बनाने के लिए कहा, तुम मेरे आदमी होकर उनके बन गए। फिर बहुत नाराज़ होकर कहा:

لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ○ (پاره ۹)

मैं तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा। तुम्हें इनाम तो क्या मिलता सूली पर चढ़ना पड़ेगा।

मज़बूत ईमान और आख़िरत की फ़िक्र

लेकिन उनका ईमान इतना मज़बूत हो चुका था और उन्हें आख़िरत की इतनी फ़िक्र हो चुकी थी कि उन्होंने कहा चाहे यह हमें सूली पर चढ़ा दे लेकिन हमारी आख़िरत न बिगड़े। क्योंकि आख़िरत का मामला हमेशा का है।

तो एक मन्ज़िल तो माँ के पेट की है और एक मन्ज़िल दुनिया के पेट की। इसके अन्दर आदमी अपनी मर्ज़ी पर चले या अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर चले, इन्हीं दो रास्तों पर यह चलेगा कभी इस रास्ते पर कभी उस रास्ते पर। कुछ लोग सीधे रास्ते पर चलेंगे कुछ लोग टेढ़े रास्ते पर।

क़ब्र की मन्ज़िल

उसके बाद तीसरी मन्ज़िल आएगी वह है क़ब्र की जो दुनिया में सीधे रास्ते पर चला होगा, क़ब्र की मन्ज़िल के अन्दर उसको बहुत राहत व आराम मिलेगा। और जो टेढ़े रास्ते पर चला होगा उसे बहुत तकलीफ़ होगी।

आँखों से ओझल

लेकिन क़ब्र के अन्दर राहत व आराम और क़ब्र के अन्दर की जो तकलीफ़ है, वह दुनिया में रहने वालों को दिखाई नहीं देती। इनको मालूम नहीं होती। और जो क़ब्र वाली ज़िन्दगी के क़ायल (मानने वाले) हैं अगर उसका बार-बार मुज़ाकरा न करें तो उनके ज़ेहन से भी उतर जाती है।

और क़ब्र वाली मन्ज़िल जो है वह क़ियामत तक रहेगी। अगर सुधरा हुआ और ईमान व आ़माल वाला आदमी क़ब्र के अन्दर पहुँचने

वाला होता है तो उसको मरने के वक़्त ही ख़ुशख़बरियाँ सुनानी शुरू कर दी जाएँगी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

اِنَّ الَّذِ يْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا (پاره ۲۴)

जिन लोगों ने कह दिया कि हमारा पालनहार और हमारा परवर्दिगार अल्लाह है, और उसके ऊपर वह मौत तक जमे रहे और इस यक़ीन के साथ जमे रहे कि अल्लाह पाक का हुक्म हमारी तबीयत के ख़िलाफ़ तो हो सकता है, हमारी तरबियत के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ (پاره – ۱)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

और दुआ भी मंगवाई:

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ (پاره– ۱)

अगर अल्लाह को रब माना और उसके ऊपर मौत तक जमे रहे, तो क्या होगा?

تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ. (پاره– ۲٤)

मौत के वक़्त फ़रिश्ते उतरेंगे। और वे तीन बातें कहेंगे: एक तो कहेंगे:

اَلَّا تَخَافُوْا

यानी आगे क्या होगा, इससे घबराओ नहीं। तुम्हारे लिए कोई घबराने की बात नहीं। उसके बाद कहेंगे:

وَلَا تَحْزَنُوْا

और जो तुम्हारी दुनिया छूट गई, इसका भी ग़म मत करो। थोड़ा-सा छूटा है, मिलेगा बहुत ज़्यादा।

وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ٥ (پاره– ۲٤)

और जौनसी जन्नत का तुमसे वायदा किया जाता था, उसकी

ख़ुशख़बरी ले लो।

और फिर वे फ़रिश्ते यूँ कहेंगे:

نَحۡنُ اَوۡلِيٰٓـئُكُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ (پاره- ۲۴)

हम तुम्हारे साथी दुनिया के अन्दर भी थे और आख़िरत में भी हम तुम्हारे साथी हैं।

फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि दुनिया के अन्दर फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते और मौत आ गई तो फ़रिश्ते दिखाई देते हैं।

आज का "मुशाहद" (दिखाई देने वाला) कल "ग़ायब" हो जाएगा। और आजका "ग़ायब" कल "मुशाहद" (दिखाई देने वाला) हो जाएगा। जो आज दिखाई दे रहा है वह मौत पर दिखाई नहीं देगा, और जो मौत पर दिखाई देगा वह आज दिखाई नहीं देता।

दुनिया में इनसान को दिखाई देने वाली चीज़ें

आज इनसान को क्या दिखाई देता है? मुल्क, माल, रुपये-पैसे, सोना-चाँदी, दुकान, खेत, यह सब जितना मेरे हाथ में होगा उतनी ही मेरी ज़िन्दगी बनेगी।

क्या नहीं दिखाई देता?

यह कि मेरे अन्दर ईमान और आमाल होंगे तो मेरी ज़िन्दगी बनेगी, यह नहीं दिखाई देता। और जब मौत आएगी तो मुल्क व माल और रुपये-पैसे से जो कामयाबी दिखाई देती थी वह दिखाई देनी बन्द हो जाएगी और ईमान व आमाल पर जो कामयाबी मिलनी चाहिए वह दिखाई दे जाएगी। और उसकी तैयारी नहीं तो ईमान व आमाल न होने की बिना पर जो परेशानी बताई गई थी, नबियों ने, आसमानी किताबों ने जो परेशानी बताई थी अब वह परेशानी सामने आ गई। अब यह बहुत परेशान हो गया कि हो क्या गया?

तो आज जो दिखाई दे रहा है वह मौत के वक़्त दिखाई नहीं

देगा। और आज जो दिखाई नहीं देता वह मौत के वक़्त दिखाई देना शुरू हो जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आख़िरत का डर

इसी बिना पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब ख़न्जर मारा गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वहीं गिर गए। ख़ून के फ़व्वारे छूटे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत परेशान हुए उनको लाकर लिटाया गया। वह यूँ कह रहे थे कि थोड़ी देर में दुनिया ग़ायब हो जाएगी और आख़िरत मेरे सामने आ जाएगी। पता नहीं मेरे साथ क्या मामला होगा?

ऐ अल्लाह! अगर तू मेरी नेकियों और बुराईयों को बराबर कर दे तो मैं इसके लिए तैयार हूँ। इसलिए कि बुराईयों की पकड़ पर जब अल्लाह आएगा तो अल्लाह की पकड़ बड़ी सख़्त है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! कुछ तो सोचो कि आख़िरत में हमारे साथ क्या होगा?

न मालूम किसके साथ क्या हो?

मौत के बाद जब क़ब्र में रखा जाएगा तो कुछ पता नहीं कि किसके साथ क्या मामला होगा? अगर हम लोगों में दुनिया के अन्दर इसकी फ़िक्र आ गई, और क़दम-क़दम पर अपने मरने के बाद वाली ज़िन्दगी को सामने रखते रहे तो अल्लाह की ज़ात से यह उम्मीद है कि दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने वाले बनेंगे।

अल्लाह के हुक्म और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फल

यह तो होगा नहीं कि हम घर छोड़ दें, हम कारोबार छोड़ दें। जैसे हज़रत जी ने निकाह के बयान में जो चीज़ें इरशाद फ़रमाईं कि बीवी के मुँह में अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ लुक़्मा भी डालेगा तो

उस पर भी सवाब मिलेगा। तो दुनिया के जो काम हम करेंगे अगर वे अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ करेंगे तो अल्लाह पाक हमारी दुनिया की ज़रूरतें भी पूरी करेंगे और उसपर सवाब भी देंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बेचैनी व बेक़रारी

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु बेचैन थे, बड़े बेक़रार थे, रो रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया:

"अमीरुल मूमिनीन! आप इतने बेचैन व बेक़रार क्यों हैं? रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आप से ख़ुश होकर इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु आप से ख़ुश होकर तशरीफ़ ले गए। और आपके हाथों पूरे आ़लम में कितना दीन फैला और कहाँ-कहाँ कितना फैलता जा रहा है। तो आप इतने परेशान क्यों हैं?"

तो इसपर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यूँ कहा:

"ऐ रसूले करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के चचाज़ाद भाई! क्या यह बात तुम क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने भी कहोगे? इस लिए कि क़ियामत का दिन बड़ा भारी दिन है और हर इनसान का किया-कराया सामने आ जाएगा। और न मालूम आख़िरी फ़ैसला क्या हो?"

तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यूँ कहा कि "क़ियामत के दिन मैं अल्लाह के सामने यह बात कहूँगा।"

मेरे सर को मिट्टी में भर जाने दो (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का सर मुबारक अपने बेटे की रान पर था। कहा कि बेटा! अपनी रान से मेरे सर को ज़मीन पर डाल दो

और गुबार में भर जाने दो। मेरा सर किसी की रान पर रहने के क़ाबिल नहीं।

परहेज़गारी कब आएगी?

एक बात ज़ेहन में रहे कि जितना अल्लाह पाक से ताल्लुक़ क़ायम होगा। जितनी अल्लाह पाक की मारिफ़त (पहचान) मिलेगी और जितना अल्लाह पाक का ध्यान होगा और जितना अल्लाह के राज़ी करने का जज़्बा होगा, उतना ही आदमी अल्लाह पाक से डरेगा। उतना ही अल्लाह पाक का तक़्वा और डर उसके अन्दर पैदा होगा।

और जितना आदमी अल्लाह पाक से दूर होता चला जाएगा और उसको अल्लाह पाक का ध्यान नहीं होगा, उतना ही वह आदमी गुनाहों के ऊपर जुर्रत करने वाला होता चला जाएगा और उतना ही वह आदमी ख़राबियों की तरफ़ चलता चला जाएगा और अल्लाह से दूर होता चला जाएगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो इतना डर रहे हैं यह तक़्वा उनके अन्दर है जो अल्लाह पाक से जितना क़रीब होता है उतना ही अल्लाह पाक उसे तक़्वा (अपना डर और परहेज़गारी) देते हैं। और तक़्वा वाले के आमाल क़बूल होते हैं।

اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ○ (پاره-٦)

तो मैं यह बात अर्ज़ कर रहा था कि आज जो दिखाई देता है वह मौत के वक़्त दिखाई देना बन्द हो जाएगा। और आज जो दिखाई नहीं देता है वह मौत के वक़्त दिखाई देना शुरू हो जाएगा। और उस वक़्त आदमी कुछ कर नहीं सकेगा। तो फ़रिश्ते यूँ कहते हैं:

"نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ

यानी हम तुम्हारे साथी दुनिया के अन्दर भी थे और आख़िरत के अन्दर भी। फ़र्क़ यह है कि दुनिया के अन्दर हम दिखाई नहीं देते थे

और आख़िरत के अन्दर हम दिखाई देते हैं।

फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते

इस वक़्त भी ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते हैं। जैसा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़बर है कि जब अल्लाह पाक की बड़ाई, अल्लाह पाक की पाकी और अल्लाह पाक की वह्दानियत (उसका एक होना) बयान की जाती है तो ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते होते हैं।

और फ़रिश्ते ऐलान भी करते हैं:

هَلُمُّوْآ اِلٰى حَاجَتِكُمْ

यानी आ जाओ अपनी ज़रूरत की तरफ़।

तो ऐ मेरे मोहतरम दोस्तो! वे फ़रिश्ते कहेंगे कि हम दुनिया में भी तुम्हारे साथ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथ होंगे।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ (پاره– ۲۴)

फ़रिश्ते कहेंगे कि हम दुनिया में भी तुम्हारे साथ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथ होंगे।

आख़िरत और जन्नत में क्या मिलेगा तुम्हें?

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَامَا تَدَّعُوْنَ ٥ (پاره– ۲۴)

तुम्हारा जो जी चाहेगा वह तुम्हें वहाँ मिलेगा। तुम्हारी मर्ज़ी में जो बात आएगी वह वहाँ तुम्हें मिलेगी। इसलिए कि तुमने अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में कुरबान कर दिया।

अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी पर कुरबान कर दो

(अल्लाह का फ़रमान)

जब सही तरीक़े पर आदमी दस मन अनाज कुरबान करता है तो उसे सौ मन अनाज मिलता है। अगर आम की एक गुठली कुरबान

कर देता है तो उसे पूरा आम का पेड़ मिलता है।

तो यह माद्दी (भौतिकवादी) लाईन की कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने नतीजे निकाल कर दिखाए और रूहानी लाईन की कुरबानियों पर अल्लाह पाक ने यह बता दिया कि अपनी मर्ज़ी को मेरी मर्ज़ी में कुरबान कर दो तो तुम्हारी मर्ज़ी उगेगी। और उगने के बाद फिर जो माँगोगे वह तुम्हें मिलेगा।

जन्नत की नेमतें

छोटे से छोटी जन्नत अगर किसी को मिली तो पूरी दुनिया से दस गुनी बड़ी जन्नत होगी। और उसके अन्दर सत्तर बहत्तर बीवियाँ होंगी और हज़ारों की तायदाद में ख़िदमत करने वाले होंगे, और जन्नत की ज़मीन की मिट्टी ज़ाफ़रान की होगी। और पत्थर, कंकर हीरे-जवाहिरात के होंगे। और जन्नत की ईंटें सोने-चाँदी की होंगी और उनके जोड़ने का गारा मुश्क का होगा। और जन्नत में जाने वाला हर मर्द और हर औरत ३० . ३३ वर्ष की जवानी की उम्र वाला होगा, और करोड़ों साल के बाद भी बुढ़ापा नहीं आएगा, और ऐसी ज़िन्दगी मिलेगी कि करोड़ों साल के बाद भी मौत नहीं आएगी। और कपड़े ऐसे मिलेंगे जो कभी मैले नहीं होंगे। और खाना ऐसा मिलेगा जो पेट में जाकर गन्दगी नहीं बनेगा।

बस अब अगर मैं ज़्यादा तफ़सीलात की तरफ़ उतरूँगा तो जन्नत का शौक़ तो ख़ूब पैदा होगा और उसके मुक़ाबले में जहन्नम की तफ़सीलात की तरफ़ अगर हम उतरेंगे तो डर भी बहुत लगेगा। लेकिन बयान का वक़्त इसी में पूरा हो जाएगा और जहन्नम से बचने और जन्नत के अन्दर दाख़िल होने की जो तैयारियाँ हमें दुनिया के अन्दर करनी हैं वे कैसे करनी हैं? इसके लिए वक़्त नहीं बचेगा।

जन्नत का शौक़ तो पैदा हो जाएगा और जहन्नम का डर तो पैदा हो जाएगा लेकिन ईमान और आमाल के ज़रिये हम तैयारी कैसे करें?

इसके लिए वक़्त बचेगा नहीं। तो इस वजह से हम ज़्यादा तफ़सील पर नहीं जाएँगे। थोड़ा शौक़ पैदा हो गया थोड़ा ख़ौफ़ पेदा हो गया, फिर इस दुनिया के अन्दर कैसे हमें रहना है, यह बात बताई जाती है।

अल्लाह पाक की मेहमानी

तो फ़रिश्ते यूँ कहेंगे कि जो तुम्हारा जी चाहेगा वह यहाँ तुम्हें मिलेगा। जो तुम्हारी ज़बान माँगेगी वह तुमको यहाँ पर मिलेगा। और ग़फ़ूरुर्रहीम की तरफ़ से तुम लोग मेहमान होगे, अल्लाह पाक की मेहमानी होगी। और मेहमान के लिए मेज़बान उसके जी में जो चीज़ होती है वह भी देता है, ज़बान से जो माँगे वह भी देता है और मेज़बान बहुत-सी चीज़ ऐसी देता है जो मेहमान ने माँगी भी नहीं। उसके जी ने भी नहीं चाहा फिर भी वे चीज़ें लाकर रख देता है। क़िस्में बदल-बदलकर आती रहती हैं।

तो ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक देंगे जिनको किसी आँख ने देखा नहीं होगा और किसी कान ने सुना नहीं होगा और किसी दिल में कभी उसका ख़्याल नहीं गुज़रा होगा। ऐसी-ऐसी नेमतें अल्लाह पाक जन्नत के अन्दर देंगे।

जादूगरों का ईमान लाना और फ़िरऔन को दावत

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! मैंने अर्ज़ किया था कि वे जो जादूगर थे उन जादूगरों ने तय कर लिया कि हम अब ईमान तो छोड़ेंगे नहीं, चाहे यह हमको सूली पर लटका दे। और उन्होंने फ़िरऔन से भी कह दिया:

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ (پاره- ١٦)

तेरा जो जी चाहे कर ले हम तो ईमान ला चुके।

बल्कि उन जादूगरों ने फ़िरऔन को भी दावत दी और उसका असर यह हुआ कि चारों तरफ़ जो मजमा इकट्ठा हुआ था उसके

अन्दर से बहुत बड़े मजमे ने वहीं कलिमा पढ़ लिया। अब चारों तरफ़ ईमान वाले बन गए।

फ़िरऔन की हठधर्मी

यह सारा इन्तिज़ाम था फ़िरऔन की हिदायत का। वह बिगड़ा हुआ और भटका हुआ था। लेकिन एक दम से अल्लाह ने उसकी पकड़ नहीं की।

इनसान अगर अल्लाह को नाराज़ करने वाले काम करे तो अल्लाह पाक एक दम से उसे नहीं पकड़ते बल्कि अल्लाह पाक उसके सुधरने का इन्तिज़ाम करते हैं। फ़िरऔन के सुधरने का अल्लाह पाक ने इतना बड़ा इन्तिज़ाम किया। यहाँ तक कि उसकी बीवी जो थी वह भी ईमान वाली बन गई। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा, वह भी ईमान वाली बन गईं। लेकिन यह सारा हो जाने के बावजूद फ़िरऔन जो था वह ईमान पर नहीं आया।

कभी इनसान जब हठधर्मी पर उतरता है तो चाहे कितना ही उसकी समझ में बात आ जाए मगर वह अपनी हठधर्मी को नहीं छोड़ता। और फिर उसके ऊपर ऐसी ज़ोर की मार पड़ती है कि होश खट्टे हो जाते हैं। क्योंकि लात का भूत बात से नहीं माना करता। जब तक कि उसके ऊपर अच्छी तरह से लात न पड़े। यह लात का भूत था उसने बात से नहीं माना।

बुलाएँ मूसा अपने रब को

(फ़िरऔन की बद-कलामी)

ख़ैर! यह मज्लिस ख़त्म हो गई। फिर उसने अपना दरबार जमाया। बजाए हिदायत पर आने के अपना दरबार जमाया और दरबार जोड़कर यह कहने लगा कि मेरे को छोड़ दो ताकि मूसा को क़त्ल कर दूँ। फिर मूसा अपने अल्लाह से दुआ माँगते फिरें, फिर देखें

कि क्या होता है?

ये सारे दुआ से डराते हैं, ज़रा देखें तो सही कि उनकी दुआओं से क्या होता है?

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰی وَلْیَدْعُ رَبَّهٗ (پاره-۲۴)

यानी छोड़ दो! मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ। अब माँगें यह दुआ देखें क्या होता है?

उसके ज़ेहन में यह था कि दुआ से कुछ होता नहीं। ये ख़्वाह-मख़्वाह की बातें हैं।

इतना बड़ा जुर्म उसने किया कि एक नबी के क़त्ल का मन्सूबा बना रहा है, लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआ़ला ने उसको नहीं पकड़ा।

मैं यह बार-बार इसलिए कह रहा हूँ कि अगर ग़लतियों के बावजूद कोई मुसीबत न आये तो इससे यह न समझ लेना कि मुसीबत नहीं आएगी। मुसीबत आनी है और अल्लाह की पकड़ होनी है, लेकिन यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि अल्लाह पाक हिदायत का सामान करते हैं और हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं। ताकि मेरा यह बन्दा हिदायत पर आ जाये और मरने के बाद वाली जो बड़ी परेशानियाँ हैं उन परेशानियों से यह बच जाए। यह अल्लाह पाक की बहुत बड़ी इनायत और मेहरबानी है।

तो मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि फ़िरऔ़न जो था उसने इतनी ना-मुनासिब हरकतें कीं और अल्लाह को नाराज़ किया लेकिन अल्लाह ने उसकी पकड़ नहीं की। यहाँ तक कि उसने नबी के क़त्ल का इरादा किया कि मेरे को छोड़ो मूसा को क़त्ल करूँ और यह दुआ माँगें। उनकी दुआ से क्या होता है?

कबूलियत का वायदा

दोस्तो और बुज़ुर्गो! दुआ का मामला ऐसा है कि अल्लाह पाक का

वायदा है:

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ (پارہ–۲۴)

तुम मेरे से दुआ़ माँगो मैं क़बूल करूँगा।

यह अल्लाह पाक का वायदा है, बिल्कुल पक्का वायदा। लेकिन इसमें एक शर्त है, वह यह कि दुआ़ की क़बूलियत में रुकावट डालने वाली कोई चीज़ न हो।

दुआ़ क्यों क़बूल नहीं होती

बाज़ चीज़ें दुआ़ की क़बूलियत में रुकावट डालती हैं- एक तो हराम खाना और कपड़ा। इससे दुआ़ क़बूल नहीं होती। दूसरे ग़फ़लत से दुआ़ माँगी तो वह क़बूल नहीं होती।

اِنَّ اللّٰہَ لَایَقْبَلُ الدُّعَآءَ عَنْ قَلْبٍ لَاہٍ

यानी अल्लाह तआ़ला ग़ाफ़िल दिल की दुआ़ क़बूल नहीं करता।

आदमी ख़ूब ध्यान से दुआ़ माँगे और ध्यान से दुआ़ माँगने का जो वक़्त है वह आख़िरी रात का वक़्त है। चारों तरफ़ सन्नाटा हो जाता है। उस वक़्त बन्दा होता है और बन्दे का अल्लाह होता है, और अल्लाह पाक अपनी मेहरबानियों के साथ मुतवज्जह होते हैं। उस वक़्त अल्लाह से माँगिए।

और दिन में भी माँगिए। माँगने से तो चूकिए नहीं। लेकिन माँगें तो ध्यान से माँगें।

तो पहली चीज़ यह कि खाना कपड़ा हराम का हो तो दुआ़ क़बूल नहीं होती। दूसरे ग़फ़लत से दुआ़ माँगी तो क़बूल नहीं होती।

दावत के काम का छोड़ना

दुआ़ के क़बूल न होने का सबब

और तीसरी चीज़ बता दूँ बे-तकल्लुफ़, वह यह कि दावत का

काम न करे तो दुआ क़बूल नहीं होती। और मैं नहीं कहता अल्लाह के प्यारे नबी कहते हैं:

مُرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ

भली बातें बताया करो और बुरी बातों से बचाया करो। यानी दावत का काम करो। कहीं तुम लोगों पर वह दिन न आ जाए कि तुम दुआ करो और तुम्हारी दुआ क़बूल न हो।

तो क्या मालूम हुआ कि दावत का काम जब छूट जाता है तो दुआ क़बूल नहीं होती।

घबराएँ नहीं

लेकिन एक बात आप से अर्ज़ कर दूँ। आप हज़रात घबरा न जाएँ कि हमारा खाना तो हराम का, कपड़ा तो हराम का और दावत का काम हम करते नहीं, तो हमारी दुआ तो क़बूल होगी नहीं। तो फिर दुआ माँगने से क्या फ़ायदा?

नीयत तो करें

तो देखो भाई! इस वक़्त हम जितने भी लोग यहाँ बैठे हैं, फ़ौरन खाना और कपड़ा हलाल का बनाना तो मुश्किल है लेकिन यह तो हो सकता है कि हम सब नीयत कर लें कि हमारा जो खाना और कपड़ा हराम का है हम इन्शा-अल्लाह उसको धीरे-धीरे हलाल बनाने की कोशिश करेंगे। नीयत तो कर सकते हैं। नीयत कर लें और उसके बाद धीरे-धीरे कोशिश करते रहें।

दूसरी बात यह है कि दावत के काम को हमने काम नहीं बनाया तो यह न समझें कि अब हमारी दुआ क़बूल नहीं होगी। क्यों माँगें दुआ? नहीं! बल्कि हम लोग यह नीयत कर लें कि इन्शा-अल्लाह दावत के काम को हम अपना काम बनाएँगे और उसके बाद हम कोशिश करें ...... और कोशिश के लिए भी हमारे बड़े यह नहीं कहते

कि बस एक दम से कूद पड़ो। धीमे-धीमे होगी कोशिश।

तो बहरहाल! मेरे दोस्तो! नीयत करने के बाद ख़ूब दुआ माँगो और उसके बाद हाथ-पैर मारते रहो, दावत के काम में आगे बढ़ने के लिए भी और खाना व कपड़ा को हलाल बनाने के लिए भी।

बन्दे की मस्लेहत पर नज़र

लेकिन देखो! दुआ की क़बूलियत के अन्दर एक बात ज़ेहन में रखना। ईद का दिन था। हमारे मौजूदा हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहिब) दामत बरकातुहुम का बयान था। उसमें यह फ़रमाया कि आख़िरत के बारे में तो बन्दा जो माँगता है, अल्लाह पाक उसे दे देते हैं। लेकिन दुनिया के बारे में बन्दा जो माँगता है उसमें उसकी मस्लेहत को सामने रखते हैं।

दुआ के क़बूल होने की पाँच तरतीबें

अब इसके अन्दर आप हज़रात ज़ेहन में रख लें कि दुनिया के बारे में अगर आप हज़रात दुआ माँगेंगे तो उसकी क़बूलियत के अन्दर पाँच तरतीबें हैं।

पहली तरतीब

एक तरतीब तो अल्लाह पाक की यह है कि जो माँगा अगर वह मस्लेहत के मुनासिब है तो उसे अल्लाह पाक फ़ौरन और जल्दी से दे देते हैं। रात को माँगा और सुबह को मिल गया।

इतना बड़ा मजमा बैठा है, मेरे ख़्याल में आप हज़रात भी बहुत-सी बार देख चुके होंगे कि रात को माँगा और दिन को मिल गया ...... एक तरतीब तो यह है।

दूसरी तरतीब

दूसरी तरतीब यह है कि बन्दे ने माँगा वही जो मस्लेहत के

मुनासिब है लेकिन जल्दी देना मस्लेहत के मुनासिब नहीं है बल्कि देर से देना मुनासिब है। अल्लाह पाक देते तो वही चीज़ हैं जो माँगी है लेकिन रुला-रुलाकर देते हैं, ख़ूब रुलाते हैं, ख़ूब रुलाते हैं, फिर देते हैं। क्योंकि तेरा रोना जो है अल्लाह को बहुत पसन्द है। तो अगर तेरा काम बन गया तो मेरे सामने रोयेगा कौन?

तेरा रात को रोना मुझे बड़ा अच्छा मालूम होता है और जब तू रात को बिलबिलाता है और तिलमिलाता है तो मैं बड़ा ख़ुश होता हूँ।

तो मैं यह कहता हूँ कि हमारे सैकड़ों काम बन जाएँ इससे ज़्यादा अच्छा यह है कि अल्लाह को यह बन्दा पसन्द आ जाए। अल्लाह यह कहते हैं कि यह मेरे को पसन्द है।

तो कई बार अल्लाह पाक दुआ के क़बूल करने में जो चीज़ माँगी वही देते हैं लेकिन देर से देते हैं ...... यह दूसरी तरतीब है।

तीसरी तरतीब

और एक तीसरी तरतीब भी है कि बन्दे ने जो चीज़ माँगी वह उसकी मस्लेहत के मुनासिब नहीं है। तो अल्लाह पाक वह चीज़ नहीं देते बल्कि वह चीज़ देते हैं जो उसकी मस्लेहत के मुनासिब होती है ...... और बन्दे की मस्लेहत के मुनासिब क्या चीज़ है? इसको अल्लाह ख़ूब जानते हैं...... तो जो चीज़ माँगी वह तो नहीं मिली और अल्लाह पाक ने कोई और चीज़ दे दी जो मस्लेहत के मुनासिब है तो यह भी दुआ क़बूल हो गई।

हज़रत मरियम की अम्माँ जान ने माँगा था बेटा, बैतुल-मक़्दिस की ख़िदमत के लिए लेकिन अल्लाह पाक ने दे दी बेटी। अम्माँ जान बहुत परेशान हुई कि बैतुल्-मक़्दिस की ख़िदमत बेटी क्या करेगी?

لَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنثَىٰ (پاره– ۳)

अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि लड़का होता तो वह ऐसा न होता

जैसी यह लड़की है, यह एक नबी की माँ बनेगी और उसके मानने वाले करोड़ों होंगे।

हम मुसलमान भी मानते हैं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को...... तो माँगा लड़का और मिली लड़की।

तो कई बार ऐसा होता है कि अल्लाह पाक से जो चीज़ माँगो वह नहीं मिलती। और मिलती है मस्लेहत के मुनासिब कोई दूसरी चीज़....... यह तीसरी तरतीब है।

चौथी तरतीब

और एक चौथी तरतीब भी है। चौथी तरतीब यह है कि जो माँगा वह बिल्कुल नहीं मिला। दुनिया की जो चीज़ माँगी वह बिल्कुल नहीं मिली, लेकिन आसमान से कोई बला और मुसीबत आ रही थी, अल्लाह पाक ने इस दुआ़ पर उस बला और मुसीबत को रोक दिया।

उस बला का रुकना बहुत अच्छा है, क्योंकि वह अगर मिल जाता और बला भी आ जाती तो जो मिलता वह भी उस बला में ख़त्म हो जाता और जो पहले का था वह भी सारा ख़त्म हो जाता, और आदमी परेशान हो जाता।

यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि बाज़ मर्तबा वह नहीं देते तो माँगा है और दुआ़ के माँगने पर अल्लाह पाक आने वाली बला को रोक देते हैं।

एक मिसाल

मिसाल के तौर पर आपके तीन लड़के हैं और तीन बहुएँ हैं, और रहने के मकान दो हैं। दुकानें भी दो हैं तो आप चाहते हैं कि मेरे मरने से पहले तीसरे लड़के के लिए मकान और दुकान हो जाए। आप इन्तिज़ाम भी कर रहे हैं और अल्लाह के सामने रो भी रहे हैं लेकिन तीसरी दुकान और तीसरा मकान आपको मिलता नहीं।

हो सकता है कि ऊपर से कोई बला आने वाली हो, अल्लाह पाक ने उसे रोक दिया हो और तीसरा मकान व दुकान न दिया ...... और अगर तीसरी दुकान व मकान अल्लाह पाक दे दें और बला को आने दें और उस बला में तीनों दुकान व मकान हलाक हो जाएँ और तबाह हो जाएँ। तो यह अल्लाह पाक की मेहरबानी है कि बला को रोक दिया और तीसरी दुकान व मकान नहीं दिया।

और इसमें कोई घबराने की बात भी नहीं, आदमी थोड़ी तकलीफ़ उठा ले, सारा बरबाद हो जाए उससे तो अच्छा है।

और अब तो अल्लाह पाक ने हम लोगों के लिए इतनी आसानी कर दी। मियाँ-बीवी का एक जोड़ा जमाअत के अन्दर चला जाए और जब वह वक़्त पूरा करके आये तो दूसरा जोड़ा चला जाये। तो दो घरों के अन्दर गुज़ारा भी हो जाएगा और दीन की दावत भी पूरे आ़लम में चलेगी। और हिदायत फैलने का सामान भी हो जाएगा।

तो चार तरतीबें बताईं- जो माँगा कभी वह फ़ौरन मिलता हैं, जो माँगा कभी वह देर से मिलता है, जो माँगा वह नहीं मिला मस्लेहत के मुनासिब कुछ और मिला, और जो माँगा वह बिल्कुल नहीं मिला लेकिन आने वाली बला रुक गई।

पाँचवीं तरतीब

और एक पाँचवीं तरतीब भी है कि जो माँगा अल्लाह ने उसे अपने पास सुरक्षित कर दिया और दुनिया में बिल्कुल नहीं मिला। और क़ियामत के दिन अल्लाह पाक ने वह दे दिया तो बहुत बढ़िया बनाकर दिया। और बहुत आला क़िस्म का दिया और बहुत ज़्यादा दिया।

क़ियामत के दिन यह देखकर आदमी तमन्ना करेगा कि जितनी मैंने दुनिया के अन्दर दुआएँ माँगी थीं सारी आख़िरत के लिए सुरक्षित हो जातीं तो ज़्यादा अच्छा था। यह तमन्ना करेगा और सोचेगा कि दुनिया में जो दुआएँ क़बूल हुईं और मुझे जो मिला वह तो मौत के

वक़्त छूट गया।

तो अल्लाह के यहाँ दुआ के क़बूल होने की ये पाँच तरतीबें हैं।

फ़िरऔन की ग़लत सोच

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! वह फ़िरऔन जो था उसने सोचा कि माँगें यह दुआ, देखूँ इनकी दुआ से होता है क्या? तो जो बिगड़े हुए लोग होते हैं वे यही सोचते हैं कि इतनी-इतनी दुआऐं उनकी हो रही हैं और चल रही हैं लेकिन उनके काम तो बन नहीं रहे। इस सिलसिले में मैंने आप से अर्ज़ किया कि ये पाँच तरतीबें हैं।

जादू वो जो सर चढ़कर बोले

तो फ़िरऔन ने जब कहा:

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰی وَلْیَدْعُ رَبَّهٗ (پاره–۲۴)

कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को क़त्ल करूँ और यह बुलाएँ अपने रब को।

यह इतना बड़ा जुर्म था कि अल्लाह तआला फ़ौरन पकड़ करते। लेकिन अल्लाह पाक ने इतने बड़े जुर्म पर फ़ौरन नहीं पकड़ा बल्कि उसकी हिदायत का सामान कर दिया। वह यह कि दरबार के अन्दर से दरबारी खड़ा हो गया और खड़े होकर फ़िरऔन के भरे दरबार में दावत देनी शुरू कर दी। वह दरबारी ईमान ला चुका था। लेकिन मस्लेहत के तौर पर अपने ईमान को छुपा रखा था। लेकिन जब उसने देखा कि फ़िरऔन, मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल के बारे में कह रहा है तो फ़ौरन खड़ा हो गया।

फ़िरऔन के दरबार में उसके दरबारी की तक़रीर

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَکْتُمُ اِیْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَکُمْ بِالْبَیِّنٰتِ مِنْ رَّبِّکُمْ (پاره–۲۴)

ऐसी शख़्स को तुम लोग क़त्ल करने का इरादा कर रहे हो जो यह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह अल्लाह की तरफ़ से दलीलें लेकर आया है।

ख़ूब ज़ोर की तक़रीर की और पिछले वाक़िआत भी सुनाए आगे क़ियामत का दिन आने वाला है वह भी सुनाया। यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का ज़माना भी सुनाया। दुनिया का बे-हैसियत होना भी सुनाया। आख़िरत कैसी अ़ज़ीमुश्शान है यह भी सुनाया। ये सारी बातें अच्छी तरह से जमकर सुनाईं।

फ़िरऔन भी बैठा हुआ था और उसके सारे दरबारी मिम्बर पार्लियामेंट सारे के सारे बैठे हुए हैं और सब सुन रहे हैं, फ़िरऔन भी सुन रहा है। और उसने कहा:

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ وَاُفَوِّضُ اَمْرِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ، اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ○ (پاره-٢٤)

याद करो मैं जो बात कहता हूँ। जिस तरह ख़ुदा बहुत-सी क़ौमों को तबाह कर चुका है इसी तरह ख़ुदा तेरे को भी तबाह व बरबाद करेगा और आईन्दा तेरे को जहन्नम में जाना पड़ेगा...... जो कुछ मैं कहता हूँ तेरे को याद आएगा। और मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ और अल्लाह अपने बन्दों को देखता है।

उसने खड़े होकर अल्लाह तआ़ला की ताक़त का ख़ूब बयान किया। ज़बरदस्त तरीक़े पर बयान किया और हम लोगों को भी अल्लाह की क़ुदरत और उसकीं ताक़त को जा-जाकर दुनिया भर में बयान करना है।

अल्लाह बड़ी ताक़त वाले हैं।

अल्लाह जो हैं वह बड़ी ताक़त वाले हैं। बड़ी क़ुदरत वाले हैं। अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में सारी दुनिया की ताक़तें जो हैं ये

मकड़ी के जाले हैं, उनकी कोई हैसियत नहीं। जैसे मकड़ी के जाले की कोई हैसियत नहीं रहती इसी तरह इन सारी ताक़तों की कोई हैसियत नहीं।

फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ताक़त मकड़ी के जाले की तरह तबाह व बरबाद हो गई। और आईन्दा चलकर दज्जाल और याजूज-माजूज की ताक़तें मकड़ी के जाले की तरह तबाह व बरबाद हो जाएँगी।

मकड़ी जाला कब तानती है?

लेकिन मकड़ी जाला कब तानती है? जब घर वीरान हो चुका हो। मकड़ी आबाद घर में जाला नहीं तानती...... इसी तरह आज जितने मकड़े और मकड़ियाँ जाला तान रहे हैं। यह उस वक़्त जाला तानते हैं जब दुनिया दीन की दावत से वीरान हो जाए। तालीम के हल्क़ों से वीरान हो जाए। अल्लाह के ज़िक्र से वीरान हो जाए। और उम्दा व ऊँचे अख़्लाक़ से वीरान हो जाए।

न काला न गोरा, बुनियाद बस ईमान है

ईमान वालों का आपस में मिलना और जुड़ना और क़ौमी व ख़ानदानी चीज़ों का न उठाना...... चाहे क़ौम का हो या न हो, ख़ानदान का हो या न हो, रंग का हो या न हो, लेकिन ईमान वाला है तो आपस में एक-दूसरे का इक्राम (अदब व सम्मान) करके ऐकता और संगठन को पैदा करे, जितनी ऐकता और संगठन पैदा करेंगे अल्लाह की मदद साथ होगी।

وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (پاره-١٠)

इख़्तिलाफ़ से बचो

आपस के अन्दर खींचातानी मत करो। अगर आपस में खींचातानी

और झगड़ा करोगे तो दो नुक़सान होंगेः

एक तो कम हिम्मत हो जाओगे, और दूसरों के अन्दर से तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। ये दो बातें अल्लाह पाक ने बयान फ़रमाईं।

अपनी घरेलू तरतीब के अन्दर भी आपस में खींचातानी और तकरार मत करो। अपनी क़ौम के अन्दर अपने ख़ानदान के अन्दर और जौनसा दीनी काम कर रहे हो उसके अन्दर।

ये दीन का काम करने वाले भी आपस में तकरार और खींचातानी न करें। यह कोई न कहे कि यह तो यूँ कर रहा है, वह तो यूँ कर रहा है। हर एक दूसरे को कुसूरवार क़रार देकर यह उसके ख़िलाफ़ लिख रहा है, वह इसके ख़िलाफ़ लिख रहा है। नहींः

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (پاره- ١٠)

आपस में खींचातानी और तकरार मत करो वरना तुम कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।

तो दुनिया जब अख़्लाक़ से वीरान हो जाती है, इख़्लास से वीरान हो जाती है, दीन की दावत से वीरान हो जाती है तो फिर उसके अन्दर मकड़े और मकड़ियाँ जाले तानते हैं।

मकड़ी का फ़ख़्र और उसका हश्र

जैसे वीरान घर के अन्दर मकड़ी ने जाला तान दिया और कबूतरी ने घौंसला बना दिया और घौंसले के अन्दर अण्डे भी दिए। अब इस जाले के ऊपर घौंसले के तिनके गिर रहे हैं और अण्डे के छिलके गिर रहे हैं...... अब मकड़ी फ़ख़्र (गर्व) में आ गई कि तिनके पर तिनके और छिलके पर छिलके मेरे जाले पर गिरे लेकिन मेरा जाला नहीं टूटा। और फिर यह मकड़ी जो जाती है तो छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े उसे मिल गए। उन्हें वह खा गई। अच्छी मोटी-ताज़ी हो गई और बड़ा फ़ख़्र और घमंड उसमें आ गया। फिर मकड़ी अपने

प्रोग्राम बनाने लगी, कभी इधर से उधर जा रही है, कभी उधर से इधर आ रही है।

अब जब मकड़ों ने देखा कि मकड़ी ख़ूब कूद-फाँद रही है तो उन्होंने भी अपने जाले तान दिए। तो पूरा घर मकड़ी और मकड़ों के जालों से भर गया।

दुनिया भर की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं

ख़ुदा-ए-पाक की क़सम! दुनिया भर की ताक़तें ये मकड़ी के जाले हैं। अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में इनकी कोई हैसियत नहीं है।

अगर दुनिया को दीन से आबाद किया जाए। दुनिया को इनसानियत से आबाद किया जाए और दुनिया को नेक आमाल से आबाद किया जाए तो इन मकड़ियों के जालों को अल्लाह पाक साफ़ कर देगा। अल्लाह तआ़ला की ताक़त के मुक़ाबले में उनकी कोई हैसियत नहीं है।

और यह बात मैं नहीं कहता हूँ मेरा अल्लाह कहता है:

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اِتَّخَذَتْ

بَيْتًا، وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ، لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ٥ (پاره-٢٠)

यह अल्लाह पाक कहते हैं कि ये सारी की सारी ताक़तें मकड़ी के जाले हैं। मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब कोई घर को आबाद करना चाहता है तो सब से पहले जाले साफ़ करता है और जालों को साफ़ करने में देर नहीं लगती। झाड़ू ली और चारों तरफ़ फेर दी, तो मकड़ी भी ख़त्म और जाला भी ख़त्म। देर नहीं लगती।

अ़ज़ाब की एक झाड़ू से फ़िरऔ़न के मुल्क का जाला साफ़ हो गया

जिस तरीक़े से फ़िरऔ़न इसके बावजूद कि अल्लाह ने उसकी

हिदायत का इतना सामान किया लेकिन फिर भी वह हिदायत के ऊपर नहीं आया और अपनी हठधर्मी के ऊपर रहा।

तो फिर अल्लाह पाक ने जब इरादा किया मिस्र को दीन से आबाद करने का और देखा कि यह हठधर्मी करने वाला मान कर नहीं देता तो अब इस ज़हरीले फोड़े का ऑप्रेशन करना है और इस ज़हरीले फोड़े को उखाड़ कर फेंक देना है। यह अल्लाह पाक ने जब तय किया तो अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की एक झाड़ू आयी और फ़िरऔन के मुल्क का जाला साफ़ हो गया।

विज़ारत और दौलत का जाला ख़त्म

और अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की दूसरी झाड़ू आयी तो हामान की विज़ारत (मंत्री पद) का जाला साफ़ हो गया। और अल्लाह पाक के अ़ज़ाब की तीसरी झाड़ू आयी तो क़ारून के धन दौलत का जाला साफ़ हो गया। इन सारे जालों को साफ़ करके अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल के लिए मिस्र के अन्दर दीन के चालू करने की एक फ़िज़ा बना दी।

अल्लाह की पकड़ बहुत सख़्त है

आज भी अल्लाह पाक इसी ताक़त के साथ हैं। हम सारी दुनिया से कहते हैं कि अल्लाह की ताक़त को मानो। अगर अल्लाह की ताक़त को नहीं मानोगे और अल्लाह की ताक़त को नहीं तस्लीम करोगे तो जब तक अल्लाह पाक तुम्हें ढील देगा उस वक़्त तक तुम्हें पता नहीं चलेगा। लेकिन जिस वक़्त अल्लाह की पकड़ आएगी तो ऐ दुनिया के सारे धन दौलत वालो! अल्लाह की पकड़ से किसी की कोई ताक़त बचा नहीं सकती।

इसलिए मैं कहता हूँ कि सारी दुनिया के अन्दर जमाअ़तों में फिरो। और फिर-फिरकर जमकर अल्लाह की ताक़त बयान करो।

हम कमज़ोर हैं

हम उस अल्लाह के मानने वाले हैं जो बड़ी ताक़त वाला है। हम लोगों से अपनी ताक़त नहीं मनवाते। हमारी कोई ताक़त नहीं।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (پاره- ۵)

इनसान को बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है। अपनी तो कमज़ोरी का एतिराफ़ करना है।

ख़ुदा के ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं

ताक़त वाला तो अल्लाह है। वह इतनी बड़ी ताक़त वाला है कि एक हुक्म दे दिया, और देखो कैसा आसमान व ज़मीन बना दिया। इतनी बड़ी ताक़त वाला अल्लाह है कि रोज़ाना तक़रीबन तीन लाख से ज़्यादा बच्चे पैदा होते हैं और हर बच्चे को दो-दो आँख देता है, रोज़ाना छह लाख आँखें सपलाई करता है लेकिन उसके ख़ज़ाने के अन्दर कोई कमी नहीं आती। हर इनसान की सूरत अलग बनाता है, आवाज़ अलग बनाता है, मिज़ाज अलग बनाता है, जज़्बा और भावना अलग बनाता है, लेकिन उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आती।

तो उस अल्लाह की ताक़त को और अल्लाह के ख़ज़ानों को जमकर बयान करना है, पूरे आ़लम में, ख़ुसूसी गश्तों में और उमूमी गश्तों में बयान करना है। लेकिन तरतीब के साथ। बे-तरतीबी के साथ नहीं। अगर बे-तरतीबी के साथ बयान करोगे तो लोग अल्लाह पाक का मज़ाक़ उड़ाएँगे और हम मज़ाक़ उड़वाने वाले बनेंगे। हमें अल्लाह पाक का मज़ाक़ नहीं उड़ावाना। जमकर दावत देनी है और उसे सीखना है और उसके लिए जमाअ़तों में फिरना है। और उसके लिए मक़ामी काम करना है, और जमकर यह बात कहनी है कि अल्लाह की ताक़त को मानो।

قُمْ فَاَنْذِرْ ٥ وَرَبَّکَ فَکَبِّرْ ٥ (پاره- ۲۹)

अल्लाह की बड़ाई बयान करो

खड़े हो जाओ और अल्लाह से डराओ और अल्लाह की बड़ाई को बयान करो। अज़ान के अन्दर भी अल्लाह की बड़ाई, तकबीर के अन्दर भी अल्लाह की बड़ाई, नमाज़ के अन्दर बार-बार अल्लाहु अकबर। जनाज़े की नमाज़ पढ़े तो अल्लाहु अकबर चार बार, बच्चा पैदा हो तो दाएँ कान में अज़ान और बाएँ कान में तकबीर पैदा होते ही कान के अन्दर अल्लाह की बड़ाई पड़ गई। जानवर ज़िबह करे तो "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर"। ईद का दिन आए तो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अकबरु अल्लाहु अकबरु ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु, अल्लाहु अकबरु व लिल्लाहिल् हम्दु।

तो ईद के दिन भी अल्लाहु अकबर, जनाज़े की नमाज़ हो तो अल्लाहु अकबर, बच्चा पैदा हो तो अल्लाहु अकबर।

फ़ज्र की नमाज़ से अल्लाहु अकबर की आवाज़ चलती है। रात को सोते वक़्त तस्बीहे-फ़ातिमी पढ़ते हैं तो उसमें भी **सुब्हानल्लाहि** 33 बार फिर **अल्हम्दु लिल्लाहि** 33 बार फिर **अल्लाहु अकबर** 34 बार, नमाज़ के बाद भी यह तस्बीह पढ़ी जाती है।

पूरी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़

फ़ीजी से अल्लाहु अकबर की आवाज़ चलती है और चारों तरफ़ अल्लाहु अकबर की फ़िज़ा बन जाती है। उसके बाद फिर फ़िजी के बाद वाले जो देश हैं, आस्ट्रेलिया के अन्दर यह आवाज़, फिर न्यूज़ीलैण्ड के अन्दर यह आवाज़, फिर आस्ट्रेलिया के बाद चलो फ़िल्पाइन है, जापान है, कोरिया है। वहाँ पर ये आवाज़ें लगनी शुरू हो गईं। उसके बाद फिर आगे चलो मलैशिया है, इण्डोनेशिया है, थाईलैण्ड है, बंगलादेश है, सीलोन है, बरमा है, वहाँ पर अल्लाहु अकबर की

आवाज़। सारी दुनिया में अल्लाहु अकबर की आवाज़ लग रही है......
खुश क़िस्मत हैं वे लोग जो आगे बढ़ें और अल्लाह की बड़ाई बयान करें। मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह की बड़ाई तस्लीम करने वालों और अल्लाह की बड़ाई बयान करने वालों के साथ ही अल्लाह की मदद है।

बेईमानों के मुतालबात

और यह जो बेईमान लोग हैं, इन्होंने हर ज़माने के अन्दर दूसरे अम्बिया से भी यह बात कही और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी यह बात कही गई:

قَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ٥ (پارہ–٢٣)

क़ियामत का कौन इन्तिज़ार करे। हमारे लिए तो क़ियामत वाला अज़ाब आज ही उतार दो।

यह उन बेईमानों ने कहा, लेकिन अज़ाब नहीं आया। क्यों नहीं आया? इसलिए कि अल्लाह पाक फ़ौरन नहीं पकड़ करते बल्कि हिदायत का सामान और हिदायत का इन्तिज़ाम करते हैं।

फिर उन्होंने कहा:

اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ٥ (پارہ–٩)

अगर यह कुरआन तेरा कलाम और तेरी किताब है तो आसमान से हमारे ऊपर पत्थर बरसा दे और हमें बरबाद कर दे।

लेकिन अल्लाह का अज़ाब फिर भी नहीं आया।

तो फिर उन्होंने उछलना-कूदना शुरू किया कि देखो ना! कुछ भी नहीं हो रहा है। फिर कुरआन की सूरतें और आयतें उतरीं और पिछले नबियों के क़िस्से सुनाए कि पिछले नबियों के ज़माने में भी लोगों ने ऐसे ही कहा था। देखो अल्लाह पाक ने आख़िर में जाकर उनको कैसा ग़ारत किया। और अल्लाह पाक की बड़ाई तस्लीम करने

वालों की और नबियों की बात मानने वालों की अल्लाह तआला ने कैसी मदद की।

और बेईमान लोग यही कहते रहे कि ये तो पुरानी कहानियाँ हैं। आज करके बताओ।

अल्लाह की मदद आ गई

फिर उसके बाद **बदर** का क़िस्सा हुआ। और अल्लाह पाक ने करके बता दिया। अब उनके होश खट्टे हो गए। अब लोग समझे कि वाक़ई ये जो अल्लाहु अकबर कहने वाले हैं इनके साथ अल्लाह पाक की मदद आ गई। अब उनसे ज़्यादा छेड़ख़ानी नहीं करनी।

आज भी जब यह बात कही जाती है कि सारी दुनिया के आदमी कहते हैं कि अरे बदर का क़िस्सा सुनाया, नबियों का क़िस्सा सुनाया, हज़रत उमर फ़ारूक़ का क़िस्सा सुनाया, अरे आज करके बताओ।

करने वाली ज़ात अल्लाह की है

तो भाई करने वाले हम तो हैं नहीं, करने वाली तो अल्लाह की ज़ात है। वह मस्लेहतों को जानती है कि कितने मुजाहदे के बाद दीन के काम करने वालों की मदद करनी चाहिए। और कितने बिगाड़ के बाद मुजरिमों की पकड़ करनी चाहिए।

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से मुतालबा

हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम से भी उन बेईमानों और मुजरिमों ने कहा:

فَاسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفاً مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِيْنَ ٥ (پاره– ۹)

अगर तुम सच्चे नबी हो तो आसमान के टुकड़े हमारे ऊपर गिराकर हमें तबाह कर दो।

तो हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने इसका जवाब दिया:

قَالَ رَبِّیْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (پارہ–۱۹)

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने यूँ कहा कि जो तुम्हारे करतूत हैं उसको अल्लाह जानता है।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! कितने जुर्म पर किसको पकड़ना और कितने मुजाहदे पर किसकी मदद करना है यह अल्लाह की मस्लेहतों और हिक्मतों के साथ है। इसमें हमें दख़ल नहीं देना।

लेकिन देखो! एक बात ज़ेहन में रहे कि कहीं दो-चार बार अल्लाह की मदद आ गई तो ख़ुदा न करे दीन का काम करने वालों में फ़ख़र (गर्व और घमंड) न आ जाए। अपनी कमज़ोरियों का एहसास रहे कि हम बिल्कुल कमज़ोर हैं।

इनसान इतना कमज़ोर, इतना कमज़ोर है कि जिसकी कमज़ोरी की कोई हद नहीं, और अल्लाह पाक इतनी बड़ी ताक़त वाला है कि जिसको आप सुन रहे हैं।

हमारी चुनौती

इनसान इतना कमज़ोर है कि अगर लाखों आदमी मिलकर सैकड़ों साल तक मेहनत करें तो सारे मुल्क व माल वाले और सारे वैज्ञानिक (साईंसदान) मिलकर मछली की एक आँख नहीं बना सकते, मच्छर की एक टाँग नहीं बना सकते, मक्खी का एक पर नहीं बना सकते। चुनौती है पूरी दुनिया को...... नहीं बना सकते।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (پارہ–۵)

पैदा किया गया है इनसान को कमज़ोर।

अपनी कमज़ोरी को मानो और अल्लाह की ताक़त को मानो। तो फिर अल्लाह की ताक़त तेरी हिमायत में आ जाएगी तो दुनिया भर में तेरे बेड़े पार होंगे। और आख़िरत में भी तेरे बेड़े पार होंगे।

यह जो इतना चीख़-चीख़कर हम अल्लाह की बड़ाई को बयान करते हैं। यह हम अपनी ताक़त नहीं बतला रहे हैं। हमारी कोई ताक़त

नहीं। हम तो इतने कमज़ोर हैं कि हम को मारने के लिए पिस्तौल और तलवार की भी ज़रूरत नहीं। एक आदमी आकर हमें एक घूँसा मार दे और हमारी मौत का वक़्त आ चुका है तो हम उसी वक़्त मर जाएँगे। हम तो इतने कमज़ोर हैं। हम अपनी ताक़त को नहीं मनवा रहे हैं। हमारी कोई ताक़त नहीं।

अल्लाह सब का है

लेकिन ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला जो अल्लाह है वह अल्लाह मुसलमानों का भी है और ग़ैर-मुस्लिमों का भी है। हम उस अल्लाह की ताक़त को मनवा रहे हैं।

ख़ुदा की ताक़त को मानोगे तो बेड़े पार होंगे। यह आवाज़ पूरी दुनिया के अन्दर लगानी है। खेतों में भी लगानी है। मकानों में भी लगानी है। दुकानों में भी लगानी है। दावत के ज़रिये अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ को हर जगह लगाना है।

और तुम्हारे ज़ेहन में कहीं आए कि इस मजमे के सामने तुम चीख़ रहे हो यह आवाज़ तो लगानी चाहिए जो बड़े बड़े मुल्कों को चलाने वाले हैं उनको जाकर कहना चाहिए। इस मजमे के सामने कहने से क्या फ़ायदा?

नहीं! बल्कि हमारे सामने तो जितना हमारा बस होगा उतना हम अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ लगाएँगे। गश्तों के अन्दर, ख़ुसूसी गश्तों के अन्दर, जितना आवाज़ लगाना बस में है उतनी आवाज़ लगाई जाएगी। और जहाँ हमारे बस से बाहर है वहाँ तक आवाज़ का पहुँचाना यह अल्लाह का काम है।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चींवटी का गश्त और बेक़रारी

देख लो! सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चींवटी को। जब हज़रत

सुलैमान अ़लैहिस्सलाम लश्कर लेकर चले तो वह चींवटी बड़ी परेशान हो गई। उसने देखा कि लश्कर आ रहा है और तुम सारी रौंदी जाओगी। तो तुम अपने बिलों के अन्दर घुस जाओ। यह चींवटी बेक़रार हो गई और उसने गश्त शुरू कर दिया और चींवटियों से यह कह दिया कि तुम बिलों के अन्दर घुस जाओ।

قَالَتْ نَمْلَةٌ يَّآاَيُّهَاالنَّمْلُ ادْخُلُوْامَسَاكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَايَشْعُرُوْنَ ٥ (پاره– ١٩)

उसने यूँ कहा कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के लश्कर को पता नहीं चलेगा और तुम सारी रौंदी जाओगी। इसलिए अपने बिलों के अन्दर जल्दी से घुस जाओ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उसके बस में नहीं था कि इतने बड़े हाकिम और इतने बड़े नबी तक अपनी बात पहुँचाए तो जितना उसके बस में था उसने किया, हालाँकि वह चींवटी ग़ैर-मुकल्लफ़ (शरीअ़त के अहकाम की पाबन्द नहीं) है, और आप हज़रात का बिस्तरे लेकर चारों तरफ़ घूमना-फिरना और आवाज़ें लगाना हम और आप इसके मुकल्लफ़ (ज़िम्मेदार और पाबन्द) हैं।

जब ग़ैर-मुकल्लफ़ चींवटी ने आवाज़ लगाई तो अल्लाह पाक ने यह आवाज़ सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा दी और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम वहीं पर मुस्कुरा दिए।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا (پاره– ١٩)

हंसने लगे सुलैमान अ़लैहिस्सलाम कि देखो चींवटियों के बचाने का कैसा इन्तिज़ाम कर रही है।

और यह आवाज़ सिर्फ़ सुलैमान अ़लैहिस्सलाम तक नहीं पहुँची बल्कि चींवटी की यह बात सारे मजमे तक पहुँच गई।

हालाँकि चींवटी अगर हमारी रान पर हो तो हम पहचान नहीं सकते और बात तो पहुँचना दर किनार। लेकिन हज़ारों साल के पहले

चींवटी की आवाज़ लगी और हज़ारों साल के बाद रमज़ान शरीफ़ के महीने में और भी दूसरे वक़्तो में सूरः नमूल पढ़ी जाती है और करोड़ों मुसलमान इस बात को सुनते हैं।

कुल मुख़्तार अल्लाह है

तो अल्लाह ऐसा क़ादिरे मुतलक़ (कुल मुख़्तार) है कि ग़ैर-मुकल्लफ़ चींवटी की आवाज़ को जो दर्दभरी आवाज़ थी उसको हज़ारों साल के बाद लाखों और करोड़ों इनसानों तक पहुँचा दिया।

तो हम और तुम बिस्तर उठाए-उठाए सारी दुनिया के अन्दर फैलकर अल्लाह की बड़ाई को बताएँ हमारा वह अल्लाह क़ादिर है कि जहाँ तक हमारी आवाज़ नहीं पहुँचती वहाँ तक वह हमारी आवाज़ को पहुँचा दे। आवाज़ का लगाना हमारा काम है और आवाज़ का पहुँचाना अल्लाह का काम है।

देर है अन्धेर नहीं

हर ज़माने में यह बात होती है कि तुम्हारा इतना बड़ा अल्लाह तुम्हारी मदद क्यों नहीं करता?

लेकिन हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम पर मदद आई साढ़े नौ सौ साल के बाद, और दूसरे नबियों पर भी मदद आई एक मुद्दत के बाद।

अल्लाह पाक ख़ूब मुजाहदे (मेहनत और तपस्या) कराकर और ख़ूब आज़माईशों में डालकर रूहानियत के अन्दर ज़बरदस्त ताक़त पैदा करता है। और उसके बाद हैरत-अंगेज़ (आश्चर्यजनक) मददें लाता है।

हर नबी को उन बिगड़े हुए और भटके हुए लोगों ने जिनको अपनी ताक़त पर घमण्ड था, और जिनको अपने धन दौलत पर घमण्ड था और जिन्हें अपने मजमे के बड़ा होने पर घमण्ड था, हर ज़माने के अन्दर नबियों से उन बिगड़े हुए और भटके हुए लोगों ने यह कह दिया कि तुम हमारी बस्ती से निकल जाओ नहीं तो हम तुमको ख़त्म कर देंगे। या तो हमारे जैसे बनकर रहो, और अगर

हमारे जैसे बनकर नहीं रहते तो हमारी बस्ती और हमारे शहर से निकल जाओ।

अल्लाह का वायदा

लेकिन ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला ख़ुदा इसका जवाब देता है कि अगर तुम सुधार का काम करने वालों को निकालने की फ़िक्र करते हो तो हम तुमको दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर देंगे। और सुधरे हुए लोगों को हम यहाँ पर बसाएँगे। यह अल्लाह पाक ने कुरआन पाक में हमें बताया।

हर नबी जब दावत का काम लेकर उठा तो भटके हुए लोगों ने उसको ख़ूब सताया और ख़ूब बुरा-भला कहा:

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَا اَوْلَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا

(پارہ–۱۳)

नबियों से उस ज़माने के बिगड़े हुए लोगों ने और अपनी मर्ज़ी पर चलने वाले लोगों ने कहा:

"या तो हमारे जैसे बन जाओ, और अगर हमारे जैसे नहीं बनते तो हम तुमको इस बस्ती से निकाल देंगे।"

यह उन्होंने कहा, क्योंकि उनको अपनी ताक़त पर घमण्ड था। लेकिन ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला ख़ुदा, चाँद और सूरज का पैदा करने वाला ख़ुदा और जन्नत व जहन्नम का पैदा करने वाला ख़ुदा, समुद्रों को पैदा करने वाला ख़ुदा, आसमान से पका-पकाया खाना उतारने वाला ख़ुदा, समुद्र में बारह रास्ते बनाने वाला ख़ुदा, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को जेलख़ाने से निकालकर मिस्र के ख़ज़ाने को उनके क़दमों में डालने वाला ख़ुदा और क़ादिरे मुतलक़ उस अल्लाह ने क्या ख़बर दी:

فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ (پارہ–۱۳)

अल्लाह पाक ने आसमानी वह्य (पैग़ाम) भेजी कि जो तुमको अपनी बस्ती और अपने शहर से निकालने के लिए कह रहे हैं हम उनको दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर देंगे:

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ ۢ بَعْدِهِمْ ، (پاره–١٣)

और ज़मीन पर उनके बाद हम तुमको बसाएँगे।

तो जो यह मक्का के बेईमान लोग थे, उनके साथ भी अल्लाह पाक ने यही मामला किया।

उन लोगों ने आपस में प्रोग्राम बनाया कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को या तो क़त्ल कर दें या उनको कहीं पर घेरकर रख लें, या उनको बाहर कर दें।

कुआँ खोदने वाले के सामने कुआँ होता है

लेकिन अल्लाह पाक ने बता दिया कि बदर के अन्दर वही क़त्ल हुए जो क़त्ल करने की फ़िक्र करते थे और वही क़ैद हुए जो क़ैद करने की फ़िक्र करते थे। और उन्होंने ही अपने वतन को छोड़ा जो आपको वतन से निकालने वाले थे।

उन बेईमानों ने तीन बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ सोची थीं और वे तीनों बातें उनके साथ हो गईं। और अल्लाह पाक ने ईमान वालों से कहा:

وَاذْكُرُوْآ اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ o (پاره–٩)

नवाज़िश और करम का ज़िक्र

अल्लाह पाक कहता है ऐ ईमान वालो! याद करो उस दिन को जब तुम थोड़े-से थे और ज़मीन के अन्दर मक्के वाले तुम्हें बहुत कमज़ोर समझ रहे थे और तुमको डर था कि लोग हमे उचक लेंगे

और लोग हमें नामालूम क्या कर डालेंगे। तो अल्लाह पाक ने मदीना मुनव्वरा में तुम्हें ठिकाना दिया और अल्लाह पाक ने ग़ैबी मदद तुम्हारे साथ की और अल्लाह पाक ने पाक रोज़ी तुमको दी। ताकि तुम अल्लाह पाक का शुक्र करो।

तो मेरे दोस्तो! दूसरे ज़माने के क़िस्से रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुनाए तो उन बेईमानो ने कहाः

"ये तो कहानियाँ हैं"

लेकिन अल्लाह पाक ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में वह काम करके बता दिया तब उनके हौसले टूटे और उनके होश खट्टे हुए।

हम कहते हैं कि आज भी हमारा अल्लाह उसी ताक़त के साथ है और यह अल्लाह सिर्फ़ हमारा नहीं है बल्कि यह पूरी इनसानियत का अल्लाह है।

सब बे-हक़ीक़त

अल्लाह की ताक़त के मुक़ाबले में राकेट और ऊँट दोनों बराबर हैं। और अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में डंडा, तलवार और ऐटम बम यह सब बराबर हैं। खुदा उसी मुकम्मल क़ुदरत के साथ है।

पूरी दुनिया को दावत

हम सारी दुनिया को डंके की चोट पर दावत देते हैं कि ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले खुदा की ताक़त को तस्लीम करो तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर नहीं करोगे तो जब तक ढील देगा पता नहीं चलेगा और जिस दिन अल्लाह पाक की पकड़ आएगी उस दिन अल्लाह की पकड़ से कोई नहीं बचा सकेगा।

हमने यह सारे नबियों के क़िस्से सुनाए और नबियों को उनकी बस्ती वालों ने जो कुछ कहा अल्लाह पाक ने वह्य (अपना पैग़ाम) भेजी और उन बेईमानों को दुनिया ही से निकाल कर बाहर कर दिया।

ईमान वालों को अल्लाह पाक ने बसाया और यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी कर दिया, और आज के बारे में बता दूँ।

आख़िरत का ख़ौफ़ आबादी और ख़ुशहाली का सबब

हमारा अल्लाह यह कहता है कि जैसे मैंने उनको बसाया और आबाद किया और भटके हुए लोगों को बरबाद किया अगर क़ियामत तक किसी को आबाद होना है तो अल्लाह के सामने खड़े होने का डर पैदा हो जाए और अल्लाह तआ़ला की वईदों (सज़ा की धमकियों, डाँटों) का और धमकियों का डर पैदा हो जाए। अगर अल्लाह पाक का डर पैदा हो गया। अल्लाह के सामने क़ियामत के दिन खड़े होने का डर और अल्लाह पाक ने जो वईदें बताई हैं अगर इसका डर पैदा हो जाए तो हम उन सारे बस्ती वालों को आबाद रखेंगे, बरबाद नहीं करेंगे। खुद अल्लाह पाक कहते हैं:

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ ٥ (١٣)

तो देखो पूरी दुनिया के अन्दर आख़िरत के ख़ूब चर्चे किए जाएँ। हर जगह आख़िरत के चर्चे किए जाएँ। अपने बीवी बच्चों के सामने भी, अपने ग्राहकों के सामने भी और जहाँ भी जाओ वहाँ पर आख़िरत के ख़ूब चर्चे करो। पूरे आ़लम के अन्दर आख़िरत के चर्चे करो।

तो अगर आख़िरत के चर्चे ख़ूब किए और दुनिया के बसने वाले इनसान क़ियामत के दिन खुदा के सामने खड़े होने से डर गए और क़ियामत के दिन की खुदा की धमकियों से डर गए तो अल्लाह पाक उनको बरबाद नहीं करेगा। बल्कि आबाद रखेगा।

सब के बेड़े पार हों

हम पूरी दुनिया की आबादी चाहते हैं। हम दुनिया की बरबादी

नहीं चाहते। हम लोगों को बरबाद कराना नहीं चाहते, हम पूरी दुनिया के इनसानों के बेड़े डूबोना नहीं चाहते। हम उन सब इनसानों के बेड़े पार कराना चाहते हैं।

अगर अल्लाह पाक की ताक़त को मान लें तो अल्लाह पाक सब के बेड़े पार कर देगा।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का अपनी क़ौम को डराना

اِنَّـآ اَرْسَلْنَا نُوْحاً اِلٰی قَوْمِہٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَکَ (پارہ – ۲۹)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा कि अपनी क़ौम को डराओ।

जैसे पिस्तौल लेकर बन्दूक़ लेकर और उसके अन्दर गोली डालकर आदमी बन्दूक़ की नाली यूँ सीधी कर दे। वह सिर्फ़ डरा रहा है देख ठीक हो जा। देख पिस्तौल। तो इस तरह तुम डराओ। लेकिन गोली मत मार देना। तो इसी तरह अल्लाह के अ़ज़ाब को माँगना नहीं है। सारी दुनिया को अ़ज़ाब से डराना है। लेकिन साथ में अल्लाह ने यह भी कह दिया:

مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْ تِیَھُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ٥ (پارہ – ۲۹)

अल्लाह पाक का अ़ज़ाब आए इससे पहले-पहले डराओ।

लेकिन जब अल्लाह पाक का अ़ज़ाब आ जाएगा तो फिर किसी के हटाने से नहीं हटेगा।

तो अल्लाह पाक नाराज़ होकर पूरी दुनिया पर अ़ज़ाब लायें इसके पहले पूरी दुनिया में चलकर अल्लाह के बन्दों को अल्लाह के अ़ज़ाब से डराया जाए।

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ٥

हमें अपनी ज़िन्दगी के आमाल को भी ठीक करना है, ईमान के अन्दर ताक़त पैदा करनी है, आमाल के अन्दर ताक़त पैदा करनी है,

रमज़ान के महीने के अन्दर रोज़ा रखना है, रमज़ान के महीने में सवाब भी बहुत बढ़ जाता है।

ज़कात न देने का वबाल

और जिन लोगों पर ज़कात फ़र्ज़ है उन्हें ज़कात देनी चाहिए इसलिए कि अगर वे ज़कात नहीं देते तो यह माल जो है उसके पतरे बनाकर माल वाले को क़ियामत के दिन दाग़ा जाएगा। और वह माल जो है वह अज़्दहा बनाकर उसकी गर्दन के अन्दर डाला जाएगा। और वह उसे डसेगा।

और यह ज़कात का माल बग़ैर ज़कात के माल में मिल जाए तो यह दूसरे माल के ऊपर भी वबाल लाता है। भाई! जब साल पूरा हो जाए तो आदमी ज़कात के माल को बाहर निकाल दे, रोलिंग में न ले, अगर रोलिंग में लिया तो ख़तरा है, डर है कि कहीं दूसरे माल के ऊपर भी वबाल न आ जाए। अगर एक दम से देने का तेरे लिए मौक़ा नहीं है और हक़दार नहीं मिलते तो भी उसे अलग कर दे।

आमाल के असरात

इसलिए कि जैसे दुनिया की चीज़ों में असरात होते हैं उसी तरह इनसान के आमाल के अन्दर भी असरात हैं। अगर इनसान अच्छे अ़मल करता है तो जन्नत की नेमतें तैयार होती हैं। और अगर इनसान बुरे अ़मल करता है तो जहन्नम का अ़ज़ाब और जहन्नम के अंगारे और हथकड़ियाँ तैयार होती हैं। जैसे अगर सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह पढ़े तो जन्नत के अन्दर पेड़ तैयार होते हैं। और अगर ज़कात न दे तो वहाँ पर साँप तैयार होता है। हर भले और बुरे अ़मल की एक शक्ल बनती है।

चीज़ों के सही और ग़लत इस्तेमाल के परिणाम

जैसे मैं एक महसूस की जाने वाली मिसाल दूँ:-

दिया सलाई है दिया सलाई। अब उसको किसी आदमी ने यूँ रगड़ा और रगड़कर उसको लकड़ी के ऊपर लगा दिया और लकड़ी जल गई। और उस लकड़ी से दूसरी लकड़ी जलाई तो पाँच हज़ार देगें बिरयानी कोरमे और पुलाव की तैयार हो गईं। एक दिया सलाई का यह सही इस्तेमाल है।

और अगर उसी दिया सलाई को रगड़कर पैट्रोल की टंकी में डाल दिया तो वहाँ फ़ौरन आग के शोले भड़कने लगेंगे। फिर उसके अन्दर एक लकड़ी लगाकर बीस हज़ार दुकानें जो राशन की थीं उसके अन्दर डाल दिया तो उनके अन्दर आग भड़क गयी, फिर एक लकड़ी लगाकर रूई के गोदाम में डाल दिया तो रूई के गोदाम जलकर ख़त्म हो गये।

तो एक दिया सलाई का ग़लत इस्तेमाल आग के शोलों को लाता है और एक दिया सलाई का सही इस्तेमाल पुलाव और ज़र्दे की देगें पकवाता है।

इसी तरह सवा पाँच (5¼) फ़िट के इनसान का बदन, इसका अगर सही इस्तेमाल हुआ। नमाज़ों के अन्दर, तालीम के हल्क़ों के अन्दर, अल्लाह के ज़िक्र के अन्दर, कुरआन पाक की तिलावत के अन्दर, और दूसरों के साथ अच्छे अख़्लाक़ के बरतने के अन्दर।

ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अच्छे अख़्लाक़ बरतने की तालीम

मुसलमानों के साथ भी अख़्लाक़ बरतना। ग़ैर-मुस्लिमों के साथ भी अख़्लाक़ बरतना। आप अपने घर के ऊपर बैठे हुए हों और किसी बुढ़िया के चीख़ने और कराहने की आवाज़ आई, आपने अपनी बीवी को फ़ौरन भेजा और पाँच सौ रुपये देकर भेजा, देखा तो वह एक ग़ैर-मुस्लिम बूढ़ी औरत थी। और उसको पाँच सौ रुपये दे दिये।

यह हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाया है

कि ग़ैर-मुस्लिम भी परेशान हाल हो तो उसकी भी परेशानी दूर करने की कोशिश की जाए। इसके अन्दर मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का मामला न रहे।

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं

अगर किसी मुसलमान ने किसी ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबा ली तो ऐसे मौक़े पर हम मुसलमानों को उस ग़ैर-मुस्लिम की हिमायत करनी होगी और मुसलमान को समझाना होगा कि भाई यह ज़मीन वापस कर दे वरना सातों ज़मीनों में से यह ज़मीन निकाल कर तेरे गले के अन्दर तौक़ बनाकर पहनाया जाएगा। इसको वापस कर दे।

हम इसको मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम का मसला नहीं बनाएँगे। यहाँ पर तो ग़ैर-मुस्लिम मज़लूम है और मुसलमान ज़ालिम है। अगर मुसलमान ज़ालिम हो तो उसके साथ हमदर्दी यह है कि उसको ज़ुल्म से रोका जाए। इसलिए कि:

नाव काग़ज़ की कभी चलती नहीं

ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं

दीनदार बेटा और दुनियादार बाप

तो मुसलमान अगर ज़ुल्म कर रहा है तो हम उसकी ठोड़ी में हाथ डालकर कहें कि अरे तेरा बाप है, मुसलमान है, उसने ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबाई है। तू जा अपने बाप को समझा कि अब्बा जान! यह ज़मीन वापस कर दो। लेकिन अब्बा जान चूँकि अच्छे माहौल में नहीं रहे थे उनके अन्दर दुनिया की मुहब्बत बहुत है इसलिए अब्बा जान कहते हैं कि बेटा मैं तो वापस नहीं करता।

अब आपने देखा कि मेरा बाप क़ियामत के दिन बड़ी मुसीबत में आएगा। इसलिए कि वह इस बेचारे ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दबाए बैठा है। तो आपने अब्बा जान के साथ हमदर्दी की और यूँ कहा कि अब्बा

जान! जितनी ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन आपने दबाई है मैं उतनी ज़मीन आपको देने के लिए तैयार हूँ। मेरी ज़मीन ले लो, ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन दे दो।

अपनी ज़मीन देना बतौर अख़्लाक़ के होगा और ग़ैर-मुस्लिम की ज़मीन वापस करना यह बतौर इन्साफ़ के होगा।

लेकिन बाप ऐसा दुनियादार निकला कि उसने यूँ कहा कि बेटा तेरी ज़मीन भी लूँगा और उसकी ज़मीन भी नहीं छोड़ूँगा। कुछ लोग इसी तरह के होते हैं। जब उम्रें ज़्यादा हो जाती हैं तो माल की मुहब्बत बढ़ जाती है। हाँ! अगर अल्लाह ही किसी की हिफ़ाज़त करें तो और बात है।

हक़ को हक़ कहना है

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! बाप माना नहीं और वह बात कचेहरी के अन्दर गयी तो कचेहरी के अन्दर जज के सामने भी उसके बेटे को कहना होगा कि जज साहिब! यह मेरे अब्बा हैं। इनका सम्मान करना मेरे ज़िम्मे ज़रूरी है, इनका अदब करना मेरे लिए ज़रूरी है। लेकिन मेरे अब्बा जैसे अल्लाह के बन्दे हैं उसी तरह यह ग़ैर-मुस्लिम भी अल्लाह का बन्दा है। मैं गवाही देता हूँ कि यह ज़मीन ग़ैर-मुस्लिम की है। मेरे अब्बा की नहीं।

यह हमको रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाया है, इसके अन्दर मुस्लिम ग़ैर-मुस्लिम के मसले को नहीं लाना चाहिए।

दुकान से भी दावत का काम

आपने सुबह दुकान खोली, दुकान के अन्दर आप चावल भी बेचते हैं और न मालूम क्या-क्या चीज़ें बेचते हैं। आप पचास रुपये के दस किलो चावल देते हैं। दुकान खुली, लोग आ गए। सबको आपने दस-दस किलो चावल दिए।

तुम्हारे मौहल्ले की एक ग़ैर-मुस्लिम बुढ़िया है यह भी सुबह-सुबह

लकड़ी टेकते हुए तुम्हारी दुकान पर पहुँच गई और उसने जाकर यूँ कहा कि पचास रुपये के मेरे को चावल दे दो। उसको आपने बजाए दस किलो के बीस किलो दे दिए। इसलिए कि उसकी परेशानी से आप वाक़िफ़ थे। अब वे जो दूसरे ख़रीदार थे, लाला जी, सरदार जी और वह मुतवल्ली जी भी थे जिन्होंने बोर्ड लगा दिया था कि हमारी मस्जिद में कोई बयान न करे, तो ये सारे के सारे चीं-चीं करने लगे कि इसको पचास रुपये में बीस किलो और हमको दस किलो। तो आपने कहा देखो! मेरा भाव तो पचास रुपये में दस किलो का ही है, और जो मैंने इस बूढ़ी औ़रत को दस किलो ज़्यादा दिए यह हमदर्दी के तौर पर हैं। यह मेरे मौहल्ले की औ़रत है और मैं रात को इसकी चीख़ व पुकार को सुनता हूँ।

उसके बाद आपने फिर उस बुढ़िया से पूछा बड़ी बी! रात को तुम कराहती बहुत हो क्या परेशानी है?

तो उस ग़ैर-मुस्लिम बूढ़ी औ़रत ने यूँ कहा कि मेरे सात बेटे हैं। मैंने उन सब की शादियाँ कर दीं, वे अपनी बीवियों को लेकर चले गए और मेरी कोई ख़ैर-ख़बर नहीं लेता। यह कहकर वह रोने लगी। जब वह रोने लगी तो उसका रोना देखकर आपको भी रोना आ गया।

क्यों?

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को
वरना ताअ़त के लिये कुछ कम न थे कर्रो-बयाँ

इबादत के लिए तो फ़रिश्ते बहुत हैं। इनसान को दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया है।

लेकिन देखो यह मतलब नहीं कि इबादत के वास्ते नहीं पैदा किया।

وَمَاخَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥ (پارہ-٢٧)

जिन्नात और इनसान को अल्लाह पाक ने इबादत करने के लिए

पैदा किया और इनसान की इबादत ऐसी होगी कि लोगों का दर्द भी दिल के अन्दर पैदा करेगी।

तो आप रोने लगे। वह बूढ़ी भी रो रही है। वे सारे के सारे देख रहे हैं और ताज्जुब कर रहे हैं कि कोई रिश्तेदारी नहीं और फिर भी इतनी हमदर्दी कर रहा है। फिर आपने अपने बेटे से कहा कि बेटा! यह जो तुम दुकान के अन्दर तौलने और बेचने का काम करते हो तो वह ज़रा नौकरों के हवाले कर दो और तुम इस बड़ी बी को अपनी मोटर साइकिल पर बैठाओ और बैठाकर अस्पताल में दाख़िल करो और यह लो तीन हज़ार रुपये यह डॉक्टर को एडवांस दे दो। और मैं फ़ोन करता हूँ कि इस बड़ी बी के इलाज का जो ख़र्चा होगा वह मेरी दुकान से तुम्हारे पास पहुँच जाएगा। और बेटा बड़ी बी की ख़िदमत के लिए कोई औरत तजवीज़ करो। उस औरत की जो तन्ख़्वाह होगी वह भी हम देंगे।

बेटा मोटर साइकिल पर बैठाकर उस बड़ी बी को लेकर चला गया। आपने टेलीफ़ोन भी कर दिया।

अब यह सब देखकर लाला जी भी ख़ुश, सरदार जी भी ख़ुश, मुतवल्ली जी भी ख़ुश। अब ये सारे मानूस हो गए। और जब ये मानूस हो गए तो अब उनको अल्लाह से जोड़ने की फ़िक्र करो।

अब आपने कहा कि लाला जी और सरदार जी और मुतवल्ली जी मेरा जी यूँ चाहता है कि आप लोग मेरे घर पर आएँ और बैठकर एक वक़्त हम सब खाना खाएँ और चाय पियें। आपका अख़्लाक़ देखकर सब ख़ुशी-ख़ुशी आपके यहाँ आ गए। आपने जो उनको रोटी खिलाई तो उसके साथ-साथ ईमान की बातें भी पिलाईं। वे बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए।

कम-ख़र्च बाला-नशीं

फिर आपके बच्चे की शादी तय हुई। आपने उन लोगों को अपने

लड़के की शादी में बुलाया, सब उसमें भी खुशी-खुशी आ गए।

आप तो अरबपती खरबपती हैं, लेकिन आपने अपने लड़के की शादी जो कि वह चन्द हज़ार में की। अब मुतवल्ली जी कहने लगे कि इतने बड़े मालदार और शादी में ख़ाली चन्द हज़ार ख़र्च किए! तो आपने कहा देखो हमारे लड़के रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की लड़कियों से अफ़ज़ल (बेहतर) नहीं हैं। जब उन लड़कियों की शादी सीधे-सादे तरीक़े पर हुई तो हमारे लड़के की शादी भी सादे तरीक़े पर होगी।

शादी के पैसे बचाकर क्या किया?

और मुतवल्ली जी! यह जो शादी के पैसे मैंने बचाए तो इसका मैंने बैंक बेलैंस नहीं किया बल्कि मैंने यह पैसे जो बचाए तो उसके ज़रिये बहुत-से ग़ैर-शादीशुदा (अविवाहित) लड़के और लड़कियों की शादियाँ कर दीं।

मैंने कॉलोनी बनाई

और मैंने एक कॉलोनी भी बनाई है। उस कॉलोनी में मैंने एक कमरा अपने और अपनी बीवी के लिए, एक कमरा मेरे बेटे और उसकी बीवी के लिए और बाक़ी जितने कमरे थे उनके लिए मैं ग़रीबों के पास गया और मैंने उनसे बातचीत की और कहा कि देखो तुम पिछत्तर रुपये हर महीने का किराया देते हो और पच्चीस साल से तुम किरायेदार हो। हमारी कॉलोनी का कमरा बारह हज़ार में बना है। हर महीने अगर तुम एक सौ रुपये दोगे तो एक साल में बारह सौ रुपये होंगे। इस तरह दस साल में उसकी पूरी क़ीमत अदा हो जाएगी। तो तुम दस साल में मकान के मालिक बन जाओगे। और इसमें तुम पच्चीस साल से किरायेदार ही हो।

इस तरह वे लोग मेरी कॉलोनी में आकर बस गए। उनमें से बाज़ों ने हर महीने एक सौ के बजाय दो सौ दिए किसी ने पाँच सौ

दिए और वह कॉलोनी पाँच साल में फ़्री हो गई।

उनमें से कुछ आदमी पैसे नहीं दे सके लेकिन हमने उनकी इ़ज़्ज़त पर हाथ नहीं डाला। दूसरे रास्ते से हमने उन तक ज़कात के पैसे पहुँचा दिए, हदिये के पैसे पहुँचा दिए। हमने उनको ज़लील नहीं किया। हम उन ग़रीबों को अपनी कॉलोनी के अन्दर बग़ैर पैसों के भी कमरा दे सकते थे लेकिन अगर उन ग़रीबों को हम बग़ैर पैसे का कमरा दे देते तो फिर ये ग़रीब माँगकर खाने वाले बन जाते। उन ग़रीबों को हम अपनी जूती नहीं बनाना चाहते। हम तो उन ग़रीबों को अपने सर की टोपी बनाना चाहते हैं कि इ़ज़्ज़त व आबरू के साथ ये रहें, तो तुम लोग चाहो तो मैं तुम्हें अपनी कॉलोनी भी दिखा दूँ।

कॉलोनी में ईमान की मजलिस और ईमान की बातें

अब लाला जी, सरदार जी, मुतवल्ली जी यह कॉलोनी देखने गए तो चारों तरफ़ ग़रीब आबाद। एक कमरा उनका और एक कमरा उनके बेटे का। बीच में मस्जिद बनी हुई। उसमें कोई जमाअ़त आ रही है कोई जा रही है। कहीं तालीम के हल्क़े तो कहीं अल्लाह का ज़िक्र, कहीं ईमान की मजलिस। बड़ी चहल-पहल, न कोई दरबान रखने की ज़रूरत पड़ती है न और कुछ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! यह सारा मन्ज़र (दृश्य) लोगों ने देखा तो बड़े ख़ुश हुए और उन लोगों ने कहा कि सारी दुनिया के अन्दर तो छीना-झपटी है। सब लेने वाले बने हुए हैं इसलिए लड़ाई है। और तुम्हारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देने का मिज़ाज बनाया है। छीनने के बजाय बाँटना। तुम्हारे नबी ने तो बाँटना सिखाया। जितना बाँटेगा उतना जोड़ होगा, जितना छीनेगा उतना तोड़ होगा।

तोड़ के रास्ते

पूरे आ़लम में छीनने का मिज़ाज है। झूठ, सूद, धोखा, ग़बन,

ख़ियानत, नाप-तौल में कमी, चोरी, डकैती ये सारे छीनने के रास्ते हैं।

पूरी दुनिया का निज़ाम जो है वह "लेने" की बुनियाद पर है। अगर देगा भी तो लेने के लिए देगा। और यह बात भी बता दूँ कि जो लेने वाला बनेगा वह कंगाल बनेगा और जो देने वाला बनेगा अल्लाह उसके दिल को ग़िना (मालदारी और बेनियाज़ी) से भर देगा।

अब तुम यह कहोगे कि मौलवी साहिब! देना- देना- देना, ... सदक़े के अन्दर देना, हदिये के अन्दर देना, अपने रिश्तेदारों को देना, ग़रीबों को देना और ग़ैर-मुस्लिम को देना। तो तुम लोगों के ज़ेहन में यह बात आई होगी कि मौलवी साहिब! तुम तो बस देना- देना- देना, की ही बात करते हो, कहीं लेने की जगह भी तो बताओ?

ख़ुदाई ख़ज़ाने, लेने की जगहें

तो मैं लेने की जगह भी बता दूँ। लेने की जगह ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं। एक हाथ फैला अल्लाह की तरफ़ लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला बन्दों की तरफ़ देने के लिए। अल्लाह से लेने वाला बन और अल्लाह का प्यारा बन और बन्दों को देने वाला बन और अल्लाह की मख़्लूक़ का प्यारा बन।

तू अल्लाह का भी महबूब और प्यारा होगा और बन्दों का भी महबूब होगा। तेरे चेहरे को देखकर लोगों को ख़ुशी होगी कि देखो कैसा भला आदमी है।

तो मेरे दोस्तो! अगर देने का जज़्बा बना और लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही का जज़्बा बना तो बड़ी बरकतें आप अपनी नज़रों से देखोगे, और अगर छीना-झपटी का जज़्बा बना तो उसके अन्दर सिवाय लड़ाई-झगड़े के और कुछ नहीं।

हमदर्दी वाले लोग

मैं एक मिसाल दूँ। हल्वा है हल्वा। पाँच आदमी खाने वाले बैठे और ये पाँचों आदमी एक दूसरे की हमदर्दी करने वाले, तो पाँचों ने

सोचा कि दूसरे खा लें, मैं न खाऊँ। इसलिए कोई नहीं खा रहा है। फिर एक ने हिम्मत की। लुक़्मा उठाया और एक के मुँह में डाला, इस तरह चारों के मुँह में एक-एक लुक़्मा डाला। फिर उसने लुक़्मे उठाए और फिर चारों के मुँह में एक-एक लुक़्मा डाला।

और यह भी जो थे हमदर्दी वाले थे, छीना-झपटी वाले तो थे नहीं। उनके अन्दर भी ईसार और हमदर्दी का जज़्बा था। उन्होंने कहा कि भाई! खुद तो खाते नहीं और हमको खिलाते हो, तो उन लोगों ने भी एक-एक लुक़्मा लेकर उसके मुँह में डाला और इस तरह हल्वा जो था वह ख़त्म हो गया और आपस में मुहब्बतें बढ़ गईं।

अब वे चारों यूँ कहते हैं कि तुम कितने भले आदमी हो कि हमने तो तुमको एक लुक़्मा खिलाया और तुमने हमको दो लुक़्मे खिलाए। तो यह यूँ कहता है कि मेरे से ज़्यादा भले तो तुम हो कि मैंने तुमको दो-दो लुक़्मे खिलाए और तुम चारों ने मिलकर मेरे को चार लुक़्मे खिलाए।

देखो! बाँटने वाला फ़ायदे में रहा, देने वाला नफ़े में रहा। लेकिन यह उस वक़्त होगा जब ईसार (अपनी ज़रूरत पर दूसरे की ज़रूरत को प्राथमिकता देना) और हमदर्दी की वह सिफ़त पैदा हो जाए जो बताई जा रही है।

हिर्स वाले और लालची लोग

इसके मुक़ाबले में वह हल्वा लेकर पाँच आदमी बैठे और ये पाँचों लालची हैं, और हिर्स रखते हैं और छीना-झपटी वाले हैं। ये पाँचों बैठे और पाँचों के ज़ेहन में यह है कि सारा हल्वा मैं अकेला खा जाऊँ। लेकिन खा नहीं सकते इसलिए कि दूसरे भी ऐसे ही लालची बैठे हैं।

अब खाना जो शुरू किया तो थोड़ी देर में हल्वा ख़त्म! अब उनकी बातें सुनो!

उनकी बातें तो मुहब्बत की थीं जिन्होंने ईसार व हमदर्दी का

मामला किया। और इनकी बातें आपस के अन्दर लड़ाई-झगड़े की हैं।

उनमें से एक ने यूँ कहा कि अरे लालची कहीं के! मैंने जितनी देर में एक लुक़्मा खाया तू उतनी देर में तीन लुक़्मे खा गया। और तीन लुक़्मे खाने वाला यूँ कहने लगा कि तेरा जो एक लुक़्मा था वह मेरे छह लुक़्मों के बराबर था। इसलिए तेरे को देर लगी।

कम ज़्यादा तो दोनों को मिला, जो देने वाले थे उनको भी कम ज़्यादा मिला, सब को दो-दो लुक़्मे और एक को चार लुक़्मे। और जो छीना-झपटी वाले थे उनको भी कम ज़्यादा मिला। लेकिन वहाँ जो कम ज़्यादा मिला वह मुहब्बत के साथ मिला। और यहाँ जो कम ज़्यादा मिला, यह दुश्मनी के साथ मिला।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक हाथ फैला अल्लाह की तरफ़ लेने के लिए इबादत के रास्ते से, और दूसरा हाथ फैला बन्दों को देने के लिए अख़्लाक़ के रास्ते से। अल्लाह से लेकर अल्लाह का महबूब बन, और बन्दों को देकर बन्दों का महबूब बन।

बात समझ में आ गई ना! आप हज़रात के ......

तो देखिए बात अब लम्बी करूँ तो लम्बी होती चली जाएगी। अब यह पाक ज़िन्दगी जो हम सुन रहे हैं, नबियों की सुनी, रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुनी। जो नबियों के ज़माने में अल्लाह पाक ने किया वह क़ियामत तक करते रहेंगे। यह अल्लाह का वायदा है।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ٥ (پاره-٢٩)

नेक काम करने वालों के जैसा जो काम करेगा तो अल्लाह पाक उनके साथ वही मामला करेंगे जो नबियों के साथ किया। ग़ैबी मदद होगी।

और बावजूद इसके अगर भटके हुए लोग सुधार पर नहीं आते तो फिर अल्लाह पाक का मामला उनके साथ क्या होगा? जो क़ौमे

आद के साथ हुआ।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ٥ (پ-٢٩)

उन मुजरिमों के साथ हमारा वही मामला होगा, ग़ैबी पकड़ का।

दावत की फ़िज़ा कैसे बने?

इसलिए दावत की एक फ़िज़ा बनाई जाए। दावत की फ़िज़ा बनाने में ईमानियात की जड़ लगे और तालीम के हल्क़ों का पानी हो और कुरबानी की खाद हो और चारों तरफ़ गुनाहों से बचने की बाढ़ हो। और ज़िक्र, तिलावत, रोना-धोना, बिलबिलाना उसकी फ़िज़ा हो।

जैसे पेड़ एक दम से नहीं उगता बल्कि उसके लिए पहले ज़मीन हमवार की जाती है। जड़ लगाई जाती है और बहुत कुछ किया जाता है।

गर्म आँसू और ठण्डी आहें

तो अगर दीन का पेड़ लगाना है तो पहले दावत की ज़मीन हमवार करो। ईमानियात की जड़ लगाओ। तालीम के हल्क़ों का पानी दो। और इसी तरह कुरबानी की खाद दो और गुनाहों से बचने की बाढ़ लगाओ और ज़िक्र व तिलावत और रोना-धोना, बिलबिलाना, तिलमिलाना, गर्म-गर्म आँसुओं का बहाना, ठण्डी-ठण्डी आहों का भरना उसकी फ़िज़ा हो। और इस्लाम के जो रुक्न हैं उनका तना हो और उसके पास रहन-सहन और मामलात का अ़द्ल और इन्साफ़ के साथ चलाने का पेड़ हो और उसके ऊपर अख़्लाक़ के फल हों और अख़्लाक़ के फल के अन्दर इख़्लास का रस हो, तो अब दीन का पेड़ तैयार हो गया। अब दूर-दूर से लोग आयेंगे।

तू तीर आज़मा हम जिगर आज़माएँगे

लेकिन जो भटके हुए लोग होंगे वे क्या करेंगे?

वे नीचे से पत्थर मारेंगे तो पेड़ जो है वह ऊपर से फल देगा। ये

तो नीचे से मारेंगे पत्थर और वह पेड़ ऊपर से फेंकेगा फल।

लेकिन मुझे डर लग रहा है कि ये जितने बिगड़े हुए लोग हैं कहीं उनकी हिम्मतें बढ़ न जाएँ कि यह तो बावले बेवकूफ़ हैं। चलो उनको पत्थर मारते रहो और ये फल देते रहेंगे।

हवा के रुख़ पर थूकने वालों के मुँह पर आता है

सारी दुनिया के भटके और बिगड़े हुए लोग कान खोलकर सुन लें कि हमारा काम तो यह होगा कि तुम मारोगे पत्थर और हम बरसाएँगे फल। लेकिन ज़मीन व आसमान का बनाने वाला अल्लाह यह कहता है कि ओ पत्थर मारने वाले! वह पत्थर तेरे ही ऊपर आकर लौटेगा।

اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰىٓ اَنْفُسِكُمْ . (پاره– ١١)

तेरी शरारत तेरे ही ऊपर आएगी।

हर चे बर मास्त अज़् मास्त

हमारे ऊपर जो कुछ भी है वह हमारी ही वजह से है।

जो कुछ तुम्हारे ऊपर आएगा वह तुम्हारी करतूत ही तुम पर फेंकी जाएँगी।

इसलिए भटके हुए लोगों को हम अल्लाह से डराते हैं। चाहे सुधरे हुए लोग अख़्लाक़ बरतें लेकिन अल्लाह पाक जब देखेगा कि हद से आगे बढ़ रहे हो तो फिर अल्लाह पाक इतनी ज़ोर की पकड़ करेगा जिसकी कोई हद नहीं।

चार मन्ज़िलें जो मैंने पहले बताईं

मैं अपने बयान को जल्दी ख़त्म करना चाहता हूँ अल्लाह करे कि जल्दी ख़त्म हो जाए। मैंने चार बातें और चार मन्ज़िलें बताईं। माँ का पेट, दुनिया का पेट, क़ब्र का पेट और आख़िरत, लेकिन क़ब्र और आख़िरत जो है वह आँखों से ओझल है।

चार मर्हले

और दुनिया के अन्दर भी चार मर्हले हैं। एक मर्हला तो है दावत के वजूद का। दूसरा मर्हला है तरबियत के अन्तराल का। जब आदमी दावत के काम के ऊपर लग जाएँगे तो एक वक़्फ़ा (अन्तराल) तरबियत का आता है।

सब्र और शुक्र दोनों में इम्तिहान

कभी अल्लाह नेमतें डालते हैं कि बन्दा शुक्रगुज़ारी करता है या नहीं। कभी अल्लाह पाक तकलीफ़ें डालते हैं कि बन्दा सब्र करता है या नहीं।

अगर कुरआन व हदीस और सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी को सामने रखकर उसने तरबियत के वक़्फ़े (अन्तराल) को भी पूरा किया और दावत के काम को बनाया और उसके ऊपर जो उतार-चढ़ाव और हालात आएँ उनमें अल्लाह व रसूल के कहने के मुताबिक़ अपनी तरबियत करता रहा तो उसके बाद के जो दो काम हैं वे अल्लाह के हैं...... अल्लाह की तरफ़ से उनका वायदा है।

देखो मेरे दोस्तो! जब दावत की फ़िज़ा (माहौल) बनेगी तो ईमान का पानी मिलेगा। और जब ईमान का पानी मिलेगा तो ज़ाहिरी आमाल तैयार होंगे। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सदक़ा, ख़ैरात वग़ैरह।

ये ज़ाहिरी आमाल मक़बूल भी होते हैं ग़ैर-मक़बूल भी होते हैं। इनको मक़बूल कराने का तरीक़ा यह है कि अपने अन्दर ईमानी सिफ़तें पैदा की जाएँ। और ईमानी सिफ़तों में तक़्वा (परहेज़गारी) है। अल्लाह पर भरोसा है, सब्र है, शुक्र है। जब ये सिफ़तें पैदा हो जाएँगी तो अल्लाह खुश होंगे। और जब अल्लाह खुश होंगे तो आमाल मक़बूल होंगे और ग़ैबी मदद आएगी।

गुमराह लोगों की तीन क़िस्में

और जब अल्लाह पाक ग़ैबी मदद करेंगे तो भटके हुए लोगों की

तीन क़िस्में बन जायेंगी। एक क़िस्म तो वह होगी जो सुधर जाएगी। दूसरी क़िस्म वह होगी जो सहम जाएगी। और तीसरी क़िस्म वह होगी जो हठधर्मी पर आ जाएगी।

ये तीन क़िस्में भटके हुओं की हो जाएँगी।

क्या से क्या बन गए?

देखिए! अबू जहल का बेटा, हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बन गए। अबू जहल का भाई हज़रत हारिस बिन हिशाम बन गए। अबू सुफ़ियान की बीवी हज़रत हिन्दा बन गईं। रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन।

मेरे मोहतरम दोस्तो! एक मजमा तो वह होगा जो हिदायत पर आ जाएगा और एक मजमा वह होगा जो हिदायत पर नहीं आएगा, लेकिन सहम (डर और घबरा) ज़रूर जाएगा।

जैसे बनी नजरान का वफ़्द (डेलीगेशन) रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और उन्होंने देखा कि अगर हमने इनके साथ 'मुबाहला' (विवादित मसले को ख़ुदा पर छोड़ते हुए एक-दूसरे पर बद-दुआ़ करना कि जो हक़ पर न हो वह बरबाद हो जाये) कर लिया और क़स्मा-क़स्मी कर ली तो हम सारे बरबाद हो जाएँगे। तो ये वहीं पर सहम गए और जिज़्या (टैक्स) देना तय कर लिया। तो एक क़िस्म सहम जाती है।

अहले बातिल की हैसियत कूड़ा-कबाड़ा और मैल-कुचैल से ज़्यादा कुछ नहीं

लेकिन एक तीसरी क़िस्म हर ज़माने में होती है जो हठधर्मी पर उतर आती है। फ़िरऔन, क़ारून, हामान की तरह। और क़ौमे आ़द की तरह।

जब वह तीसरी क़िस्म हठधर्मी पर उतरती है तो फिर वह अहले

हक़ पर छा जाती है। अहले बातिल और भटके हुए लोग अहले हक़ पर, सुधरने वालों पर और काम करने वालों पर छा जाते हैं।

कैसे छा जाते हैं?

जैसे बारिश का पानी गिरता है तो नालियाँ और नाले चलते हैं तो उसके ऊपर कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है, या जैसे सोने-चाँदी के ज़ेवर और ताँबे-पीतल के बरतन आपको बनाने हैं तो आप नीचे आग जलाते हैं तो उसके ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है। तो जैसे आग जलाने से सोने-चाँदी के ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है और जैसे बारिश का पानी बरसने से नाले और नालियों के अन्दर कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है। इसी तरह अहले बातिल (गुमराह और सही रास्ते से भटके हुए लोग) कूड़े-कबाड़े और मैल-कुचैल की तरह अहले हक़ के ऊपर छा जाएँगे। लेकिन यह कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल फेंक दिया जाएगा और सोना-चाँदी, पीतल-ताँबा और पानी बाक़ी रहेगा।

तो इसी तरह अल्लाह पाक भटके हुओं को कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह फेंक देगा और जो अहले हक़ होंगे वे बाक़ी रहेंगे, हर ज़माने में हमारा अल्लाह यह करता आया है।

फ़िरऔन और उसका लश्कर तबाह

फ़िरऔन का पूरा लश्कर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह बनी इस्राईल और मूसा अ़लैहिस्सलाम पर छा गया। अल्लाह पाक ने उसको फेंक दिया और मूसा अ़लैहिस्सलाम और बनी इस्राईल बच गए।

जालूत नाकाम, तालूत कामयाब

इसी तरह जालूत यह कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गया, लेकिन अल्लाह ने उसको फेंक दिया और हज़रत तालूत बाक़ी रहे और फिर उनको कैसा नवाज़ा।

अबू जहल और क़ैसर व किस्रा की बरबादी

इसी तरह जंगे बदर का क़िस्सा हुआ, तो अबू जहल का मजमा कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गया। लेकिन अल्लाह पाक ने उसे फेंक दिया और दीन व ईमान वाले बाक़ी रहे।

इसी तरह ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के अन्दर बनू नज़ीर के यहूदी और बनू ग़त्फ़ान के लोग ईमान वालों के ऊपर छा गए। कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह, अल्लाह पाक ने उनको फेंक दिया। और हक़ दुनिया के अन्दर बाक़ी रहा।

इसी तरह हज़रत उमर फ़ारूक़ के दौर के अन्दर, क़ैसर व किस्रा (ईरान और रूम के बादशाह) बड़ी भारी ताक़तों वाले, ये सहाबा के ऊपर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा गए। अल्लाह पाक ने उनको फेंक दिया और ईमान वाले बाक़ी रहे।

इस ज़माने की मुझे कुछ नहीं कहनी, वक़्त भी नहीं और वक़्त में गुन्जाईश भी नहीं, हाँ! आगे जो होने वाला है जिसकी ख़बर अल्लाह ने दी और रसूल ने दी, वह यह कि दज्जाल अपने हज़ारों लश्करों के साथ ईमान वालों पर और अहले हक़ पर कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा जाएगा। लेकिन अल्लाह पाक उसको और उसके लश्कर को उठाकर फेंक देंगे।

याजूज और माजूज की तबाही

फिर आख़िर में आएँगे याजूज और माजूज।

اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ. (پاره-١٦)

यह याजूज और माजूज जुल्क़रनैन की दीवार को तोड़कर चारों तरफ़ छा जाएँगे। ये लोगों को मार डालेंगे। समुद्र का पानी भी पी जायेंगे और ईमान वालों पर छा जाएँगे और ईमान वाले पहाड़ों के ग़ारों (गुफाओं) में छुप जाएँगे।

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ٥

(پاره-١٧)

अल्लाह बताता है कि देखो मैं उन असहायों और बेबसों की कैसे मदद करता हूँ।

अल्लाह पाक याजूज और माजूज की गर्दनों पर फुंसी निकाल कर उन सबको फेंक देगा और ईमान वाले बाहर निकलेंगे, दुआ मागेंगे। बारिश बरसेगी और बड़ी बरकत होगी। याजूज और माजूज जो एक मुसीबत बन चुके होंगे उनको अल्लाह तआला दूर कर देंगे और चारों तरफ़ दीन व ईमान और हिदायत फैली होगी।

तो आईन्दा के दज्जाल और याजूज-माजूज जब कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह छा जाएँगे तो अल्लाह उन्हें फेंक देगा। जो अल्लाह पहले कर चुका है वह अल्लाह बाद में भी करेगा। और वह अल्लाह उसी ताक़त के साथ आज भी मौजूद है।

और यह मिसाल मैं नहीं दे रहा हूँ ज़मीन आसमान का पैदा करने वाला अल्लाह दे रहा है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! ईमान और हिदायत का बीज जो अल्लाह ने 'आ़लमे अरवाह' (रूहों की दुनिया) में हर इनसान के अन्दर डाला है। यहाँ तक कि अबू जहल और फ़िरऔ़न के दिल में भी डाला है, लेकिन वह बीज उगकर पेड़ कब बनता है? जब आसमानी 'वह्य' (अल्लाह के पैग़ाम) का पानी मिले। आसमानी 'वह्य' का पानी मिले तो पूरा दीन का पेड़ बनेगा।

दीन के पेड़ को ज़ाया होने से बचाएँ

और इस दीन के पेड़ को ज़ाया, तबाह और बरबाद करने वाली कुछ ख़राबियाँ होती हैं।

एक तो दुनिया-तलबी (यानी दुनिया के पीछे भागना) दूसरे

ख़ुदग़र्ज़ी (स्वार्थी होना) तीसरे हसद, चौथे तकब्बुर, पाँचवे रिया और दिखावा, और न मालूम क्या-क्या ख़राबियाँ होती हैं।

ये सारी ख़राबियाँ दीन के पेड़ को तबाह और बरबाद कर देती हैं। तो इसके लिए इश्क़े-इलाही (अल्लाह से मुहब्बत और ताल्लुक़) की आग लगनी चाहिए जो इन सारी ख़राबियों को जलाकर ख़ाक कर दे।

आसमानी पैग़ाम के पानी से तो बीज उगकर पेड़ बनेगा और उस पेड़ को ज़ाया और बरबाद करने वाली जो ख़राबियाँ हैं, दुनिया-तलबी, ख़ुदग़र्ज़ी, तकब्बुर, हसद, एक-दूसरे को उखाड़ना-पछाड़ना वग़ैरह इसको जलाने के लिए इश्क़े-इलाही की आग दिल के अन्दर लगेगी तो ये सारी चीज़ें जलेंगी।

अल्लाह पाक कई जगहों पर आग और पानी की मिसाल देते हैं। क़ुरआन पाक के पहले पारे के अन्दर भी आग और पानी की मिसाल है और जो मैं यह बता रहा हूँ इसके अन्दर भी अल्लाह पाक आग और पानी की मिसाल देते हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह भटके हुए लोगों को अल्लाह तआ़ला फेंक देंगे और सुधरे हुए लोग दुनिया के अन्दर बाक़ी रहेंगे। और पूरी दुनिया के अन्दर अमन व अमान आ सकता है, करने वाली ज़ात अल्लाह की है।

आग और पानी की मिसाल

अब मैं वह आयते करीमा आपके सामने पढ़ दूँ जिसको मैंने बहुत तफ़सील से बयान किया:

اَنْـزَلَ مِـنَ السَّـمَـآءِ مَـآءً ا فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ ۢ بِـقَـدَرِهَـا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا (پاره–١٣)

यह तो अल्लाह पाक ने पानी की मिसाल दी। नालियाँ और नाले बहे और कूड़ा-कबाड़ा छा गया। आगे अल्लाह पाक आग की मिसाल देते हैं:

وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ، (پاره- ١٣)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि पानी के ऊपर जो कूड़ा-कबाड़ा छा जाता है और जो तुम आग जलाते हो सोने-चाँदी के ज़ेवर और दूसरे सामान बनाने के लिए, तो सोने-चाँदी के ऊपर मैल-कुचैल छा जाता है।

كَذَالِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ، (پاره- ١٣)

अल्लाह पाक इसी तरह हक़ और बातिल की मिसाल देते हैं।

हक़ जो है वह तो पानी और सोने-चाँदी की तरह है। और बातिल जो है वह कूड़े-कबाड़ और मैल-कुचैल की तरह है।

फिर आगे अल्लाह पाक क्या करते हैं?

فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ (پاره- ١٣)

यह कूड़ा-कबाड़ा और मैल-कुचैल जो है, यह फेंक दिया जाता है।

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ.

और लोगों को नफ़ा देने वाला ख़ालिस पानी और लोगों को नफ़ा देने वाला ख़ालिस सोना-चाँदी ही बाक़ी रहता है।

كَذَالِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ.(پاره- ١٣)

अल्लाह तआ़ला इसी तरह मिसाल दे-देकर समझाता है।

और दोस्तो! एक बात ज़रा मुझे और कहनी है। वह यह कि नीचे ख़ालिस पानी हो और ख़ालिस सोना और चाँदी हो तो ऊपर का कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल फेंक दिया जाएगा। लेकिन अगर नीचे के पानी में भी कूड़ा-कबाड़ मिला हुआ है और नीचे के सोना-चाँदी में भी अगर मैल-कुचैल मिला हुआ है तो यह अच्छी निशानी नहीं है।

इसलिए दीन का काम करने वालों को चाहिए कि दीन के काम के साथ कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल न मिला हो। यानी दुनिया-तलबी (दुनिया कमाने का लालच) और ख़ुद-ग़र्ज़ी न हो। अगर दुनिया-तलबी

व ख़ुद-गर्ज़ी हो तो गोया ख़ालिस पानी और ख़ालिस सोने-चाँदी के अन्दर कूड़ा-कबाड़ और मैल-कुचैल मिल गया और इसके लिए ज़रूरी है एक तो अल्लाह पाक से रो-रोकर दुआएँ माँगना और एक अपनी निगरानी करना। हर आदमी अपनी निगरानी करे और कुरबानियों के अन्दर आगे बढ़ जाए।

हर आदमी दावत के काम को अपना काम बनाए

और यह नीयत कर लो कि जब तक दुनिया के अन्दर ज़िन्दा रहना है हम दावत के काम को अपना काम बनाएँगे। इस नुक्ते को सामने रखकर हमें काम करना है। मर्दों को भी करना है, औरतों को भी करना है और बच्चों को भी करना है।

कुरबानी देने से ही दीन की फ़िज़ा बनेगी

जैसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ज़माने का यह मजमा तैयार कर दिया है और बहुत बड़ी कुरबानियाँ दे-देकर उन्होंने काम किया है और पूरे आलम में उसकी फ़िज़ाएँ बनी हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु किस क़द्र देख-भाल करते थे और बेचैन व फ़िक्रमन्द (चिन्तित) रहते थे, आज भी अल्लाह का फ़ज़्ल है, उसका करम है, उसका एहसान है कि बहुत-से घराने अल्लाह पाक ने ऐसे खड़े कर दिये जो अल्लाह के बन्दों के लिए फ़िक्रमन्द रहते हैं। और हर तरह की कुरबानियाँ देते हैं।

दीनदार और समझदार बीवी

एक आदमी की साल भर की तश्कील हुई। वह तैयार हो गया। बीवी से जाकर मश्विरा किया, बीवी बड़ी दीनदार थी, बीवी ने कहा तुम अल्लाह के रास्ते में जाओ बच्चों की तरबियत और उनकी देखभाल मैं करती रहूँगी। इस तरीक़े से अल्लाह के रास्ते में जाना मेरे लिए तो मुश्किल है। तुम अल्लाह के रास्ते में जाओ। तुम अल्लाह के

दीन का काम करोगे तो अल्लाह पाक मुझे भी सवाब देगा।

शौहर अल्लाह के रास्ते में चले गए और बीवी अपने बच्चों की ख़ैर-ख़बर लेती रही। ईद का दिन आया तो मौहल्ले के जो बच्चे थे उस तब्लीग़ में गये हुए आदमी के बच्चों को चिढ़ाने लगे और कहने लगे कि तुम्हारे अब्बा तो जमाअ़त में गए और हमारे अब्बा हमारे पास हैं। और हमारी तो ईद है और देखो कैसे अच्छे-अच्छे कपड़े और देखो कैसा अच्छा-अच्छा खाना। हम तो घूमने-फिरने जाएँगे। तुम्हें कौन ले जाएगा?

ये छोटे बच्चे थे रोने लगे। हिचकियाँ मार-मारकर रोए और रोते-रोते माँ के पास आए। ज़िन्दगी में यह पहली ईद थी कि बच्चों के अब्बा जमाअ़त में चले गए। अब ये बच्चे माँ को लिपट गए और लिपट कर ख़ूब रोए और माँ भी रोई।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ में कुरबानी और भलाई की दुआ़

मेरे दोस्तो! यह दीन कुरबानी से चला है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी इस दीन के लिए ख़ूब-ख़ूब कुरबानियाँ दी हैं।

ताइफ़ (मक्का शरीफ़ के क़रीब यह एक शहर है) के अन्दर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर इतने पत्थर पड़े कि आप बेहोश होकर गिर पड़े। ज़ैद इब्ने हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु साथ हैं। कन्धे पर उठाकर उतबा के बाग़ में ले आए और पानी का छिड़काव किया तब जाकर आँख खुली। फ़रिश्ते आए और यूँ कहा कि अगर आप कहो तो हम दोनों पहाड़ों को मिलाकर उन्हें तबाह और ग़ारत कर दें? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं! अगर ये नहीं मानते तो हो सकता है कि उनकी औलाद माने। और आपने फ़रमाया कि हमें उनका बेड़ा ग़र्क़ नहीं करना है। हमें उनके बेड़े पार करने हैं। ये नहीं मानते तो इनकी औलाद मानेगी।

अब उनकी औलाद में कौन था? वह क़बीला-ए-बनू सक़ीफ़ वाले थे जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचाई।

हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी

सिर्फ़ ईमान ही नहीं लाए बल्कि दीन के दाई बने

अब क़बीला-ए-बनू सक़ीफ़ की नस्ल चली और उसमें हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि पैदा हुए और उन्होंने हिल और सिन्ध का सफ़र किया। उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी लोगों ने देखी और देखकर वे सारे ईमान वाले बने। और उनकी नस्ल चली।

हमारे मुल्क के जितने भी करोड़ों कलिमे वाले हैं और हमारे पड़ोस के दो मुल्कों के अन्दर जितने भी करोड़ों कलिमे वाले हैं, इसके अन्दर असर है हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि और उनकी जमाअ़त की क़ुरबानी का। बीच में और भी बहुत-से दाई (दीन की दावत देने वाले) आए मैं उनका इनकार नहीं करता।

और यह मुहम्मद बिन क़ासिम सक़फ़ी जो थे यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ की क़ुरबानी पर बाद में पैदा हुए। तो हम लोगों को जितना भी ईमान मिला है यह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ वाली क़ुरबानी पर मिला है।

बच्चे हंस पड़े

बहरहाल! मैं आपको वह वाक़िआ़ सुना रहा था कि बच्चे और माँ ख़ूब लिपटकर रोये। जब रोने से फ़ारिग़ हो गए तो माँ ने बच्चों को बैठाया और माँ ने यूँ कहा देखो बच्चो! मौहल्ले के बच्चों की ईद आज है और कल बासी, परसों ख़त्म। और हमारी ईद जो जन्नत में आएगी वह हमेशा ताज़ी रहेगी और बढ़ती रहेगी। और जन्नत में जाकर क्या-क्या मिलेगा वे सारी आयतें पढ़कर सुनाईं। जन्नत के

अंगूर कैसे? जन्नत की खजूर कैसी? जन्नत का दूध कैसा? वहाँ का शहद कैसा? ये सारी बातें सुनकर बच्चे हंस पड़े और बच्चों ने कहा बस अम्माँ हमारा तो काम बन गया। हमारी तो ऐसी ईद होगी जो कभी बासी ही नहीं होगी।

ये बच्चे बाहर गए। फिर वे बच्चे आए। उन्होंने चिढ़ाया। इन बच्चों ने कहा बैठो, सारे बच्चे बैठ गए।

बच्चे भी दीन के दाई

उन्होंने यूँ कहा कि देखो! तुम्हारी ईद तो कल बासी और परसों तो ख़त्म। और हमने अपनी माँ से सुना है कि हम को जो जन्नत की ईद मिलेगी वह बासी नहीं होगी, वह हमेशा ताज़ी रहेगी। और भी जन्नत की सारी नेमतें उन बच्चों ने गिनानी शुरू कीं तो वे सारे बच्चे ख़ामोशी से बैठकर सुनते रहे।

तो एक तरफ़ अब्बा ईद के दिन दीन की दावत में लगे हुए। यह बीवी भी दीन की ख़िदमतगार और बच्चे भी दावत दे रहे हैं...... यह मन्ज़र हमें पूरे आलम के अन्दर क़ायम करना है। करने वाले अल्लाह हैं हमें हाथ-पैर मारने की कोशिश करनी है।

बहरहाल! उन बच्चों के अब्बा जो थे वह जौनसे इलाक़े में फिर रहे थे उस इलाक़े वाले तब्लीग़ के काम को अच्छा नहीं समझते थे। उनके ज़ेहन में किसी ने यह डाल दिया था कि ये तब्लीग़ का काम करने वाले दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ते। और तब्लीग़ का काम करने वाले जो हैं, उनके दिलों में रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एहतिराम (सम्मान और अदब) नहीं, और ये औलिया-अल्लाह को नहीं मानते। यह उनके दिमाग़ में किसी ने डाल दिया था, तो गाँव वालों ने जमाअ़त के लोगों को गाँव में ठहरने नहीं दिया। उन लोगों ने गाँव से बाहर पेड़ों के नीचे बसेरा किया।

दोनों तरफ़ है आग बराबर लगी हुई

गाँव वाले भी बेचारे माज़ूर हैं मजबूर हैं, वे बजाय उनकी बात

सुनने और मानने के उनकी पिटाई करते हैं...... मारने वाले भी रसूले पाक की मुहब्बत में मार रहे हैं और मार खाने वाले भी रसूले पाक की मुहब्बत में मार खा रहे हैं। असल मुजरिम तो वे हैं जिन्होंने उनको ग़लत-फ़हमी के अन्दर डाला।

और ऐसे लोग जब लग जाते हैं तो वे काम भी ख़ूब करते हैं।

पासबाँ मिल गए काबे को सनम-ख़ाने से

लग गया एक सरफिरा और बिल्कुल बिगड़ा हुआ जमाअ़त में। अल्लाह ने उसे क़बूल कर लिया और तौफ़ीक़ बख़्शी। एक जगह पर वह जमाअ़त लेकर गया। गाँव के लोगों को किसी ने ग़लत-फ़हमी में डाल रखा था। जमाअ़त के पहुँचने से एक शोर मच गया। निकालो, मारो, पीटो। फिर गाँव वालों ने जमाअ़त को निकालने के लिए एक शराबी को भेजा, अब वह आया और गालियाँ देने लगा। बुरा-भला कहा और कहा कि निकल जाओ, हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ियाँ करने वालो!

अब यह जमाअ़त का जो अमीर था, यह भी किसी ज़माने में ऐसा ही सरफिरा रह चुका था। उसने भी ज़ोर से यूँ कहा, अरे हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ियाँ करने वाले को तू सिर्फ़ गालियाँ देता है, नामर्द कहीं के! हिजड़े! शर्म नहीं आती, अरे उनको तो गोलियों से भून देना चाहिए।

इसलिए कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान? फिर उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने अक़्दस के बारे में बातें बतानी शुरू कीं और ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से कहीं। तो उस शराबी का मुँह उधर फिर गया। आया, बैठा और बैठकर बात सुनी, और उसने कहा हमको बहुत धोखे में रखा गया।

इसके बाद वह बाहर निकला और आस्तीनें चढ़ाईं और गाँव के लोगों से कहा कि चलो सारे के सारे उनकी बात सुनो, नहीं तो अब

तुमको मारूँगा।

सारे लोग आए और बात सुनी। आज. वहाँ से न जाने कितनी जमाअतें निकल रही हैं। यह हमारे सरफिरे जो होते हैं ना! तो यह भी ज़रा मौके-महल पर थोड़े खुरदरे बनते हैं लेकिन मैं उनकी हिम्मत नहीं बढ़ाता, इसलिए कि हर जगह खुरदुरापन नहीं चलता। खुरदुरेपन से कहीं-कहीं मामला ख़राब हो जाता है। इसलिए सख़्ती की इजाज़त नहीं है। नर्मी के साथ जितना काम हो उतना अच्छा है। और सख़्ती करना हर एक का काम भी नहीं है।

हज़रत उमर बहुत रोये

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़्ती की नक़ल हर आदमी न उतारे क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अन्दर सख़्ती के साथ तक़्वा (परहेज़गारी और अल्लाह का डर) भी था।

ताजिरों (व्यापारियों) का एक क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा में आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को फ़िक्र हुई कि कहीं चोरी न हो जाए। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़ुद पहरेदार बन गए और हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ को साथ में ले गए और तहज्जुद की नमाज़ भी दोनों हज़रात ने वहीं पढ़ी।

क़ाफ़िले से बार-बार एक बच्चे के रोने की आवाज़ आती थी। हज़रत उमर रज़ि० जाकर उसकी माँ से फ़रमाते थे कि बच्चे को क्यों रुलाती है? रात के आख़िरी हिस्से में फिर उस बच्चे के रोने की आवाज़ आई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जाकर फ़रमाया कि तू अच्छी माँ नहीं है, तेरे लड़के को रात भर क़रार नहीं आया। वह औ़रत बोली ऐ ख़ुदा के बन्दे! तूने मुझे परेशान कर दिया। बात यह है कि मैं इसका दूध छुड़ाना चाहती हूँ मगर वह अभी छोड़ता नहीं। इसलिए बेक़रार रहता है। आपने कहा कि इसका दूध इतनी जल्दी क्यों छुड़ाती है? औ़रत ने कहा उमर बिन ख़त्ताब वज़ीफ़ा उसी बच्चे का

मुक़र्रर करते हैं जो दूध छोड़ चुका होता है। तो मैं इस बच्चे का दूध छुड़ा रही हूँ ताकि इसका भी वज़ीफ़ा मुझको मिलने लगे और हमारा ख़र्च पूरा हो।

जब यह बात हज़रत उमर को मालूम हुई तो हज़रत उमर बहुत रोये और यूँ कहा कि उमर! न मालूम तेरी हुकूमत के अन्दर कितने बच्चों को उनकी माएँ रुला रही होंगी। और क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने जब तेरी पेशी होगी तो बच्चों के रोने का तू क्या जवाब देगा।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पूरा क़ियामत का मन्ज़र था। वह बहुत रोये।

इनसान का अ़मल उसके गले का हार

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने ये सारी आयतें थीं:

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ۝ (پاره – ۱۵)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हर इनसान का भला या बुरा अ़मल वह उसके गले का हार है। और क़ियामत के दिन रजिस्टर खुला हुआ हर आदमी के सामने आयेगा। और भला व बुरा उसके अन्दर लिखा होगा।

आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ، كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ (پاره–۱۵)

अपना रजिस्टर तू ख़ुद पढ़ ले और अपना हिसाब तू ख़ुद कर ले।

तेरे रजिस्टर में जुर्म की धाराएँ क्या हैं, वह तो देख ले। और किस जुर्म की क्या सज़ा है वह क़ुरआन में देख ले जो अ़र्शे-इलाही के पास लटका हुआ है। और अपना हिसाब तू ख़ुद कर ले।

आदमी हैरान हो जाएगा कि की हुई हर छोटी-बड़ी चीज़ वहाँ

सामने आ जाएगी। और आदमी कहेगा:

مَالِ هٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّا اَحْصٰهَا وَوَجَدُ وْامَاعَمِلُوْا حَاضِرًا، وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ٥ (پاره-١٥)

क्या हो गया इस रजिस्टर को कि छोटी-बड़ी कोई चीज़ नहीं छोड़ी। और जो कुछ किया वह सारा सामने आ गया। और अल्लाह पाक किसी के ऊपर ज़ुल्म नहीं करता।

ये सारी आयतें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने थीं। वह हिचकियाँ मार-मारकर रोये। फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई उसमें भी हिचकियाँ बंधी हुई थीं।

हज़रत उमर का फ़रमान

जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो अपने काम करने वालों को जमा करके यूँ कहा कि न मालूम कितने बच्चे रो रहे होंगे, बच्चों का वज़ीफ़ा पैदा होते ही मुक़र्रर कर दिया जाए। और हर जगह इस तरह के फ़रमान के पत्र लिख दिए जाएँ ताकि कोई माँ अपने बच्चे को रुलाए नहीं। तो हज़रत उमर की सख़्ती की नक़ल तो लोग उतारते हैं लेकिन उनके तक़्वे और परहेज़गारी की नक़ल नहीं उतारते।

इसलिए मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो! इस तक़्वा को हमें अपने अ़न्दर पैदा करना है और जैसे वह अल्लाह के रास्ते में जाने वाला, उसकी बीवी और बच्चे सबने क़ुरबानियाँ दीं और उनकी क़ुरबानी के ऊपर पूरा इलाक़ा काम के ऊपर खड़ा हो गया, हम और आप भी चारों तरफ़ और पूरे आ़लम में फैल जाएँ और हर तरफ़ काम करें।

मेहनत चारों तरफ़

हम एक तरफ़ मक़ामी काम भी करें। घर वालों को नमाज़ की ताकीद करें, हमारी अपनी नमाज़ भी कभी ज़ाया न होने पाए। ख़ूब ख़ुशू व ख़ुज़ू (ध्यान और आ़जिज़ी) वाली नमाज़ें हम पढ़ रहे हों, घरों

के अन्दर तालीम के हल्के हों और ढाई घन्टे मस्जिद को आबाद करने के लिए दे रहे हों। गश्त भी कर रहे हों और रातों को उठकर खुदा के सामने रो भी रहे हों।

जमाअ़तों में फिरकर नबियों वाला ग़म पैदा करें

मेरे मोहतरम दोस्तो! चारों तरफ़ से लोग मर-मरकर जहन्नम के अन्दर जा रहे हैं और हमारे दिलों में इसकी फ़िक्र न हो। ऐसी बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

अल्लाह के नबियों वाला दर्द, नबियों वाला ग़म, नबियों वाली बेचैनी जमाअ़तों में फिरकर हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए। यह नबियों वाली बेचैनी और नबियों वाला जो ग़म होगा वह काम करवाएगा, कम सलाहियत वाले से भी ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी और ज़्यादा माल वालों से भी, कम इल्म वालों से भी और ज़्यादा इल्म वालों से भी, काम लेने वाले अल्लाह हैं।

जमकर बैठें और मजमे को जमाने का सवाब लें

अब आप हज़रात से मेरी गुज़ारिश है कि जैसे जमकर आप हज़रात ने बयान सुना, अब हमें तश्कील करनी है। इस तश्कील के अन्दर भी आप हज़रात को जमकर बैठना है। अगर आप जमकर बैठे और आपके बैठने की वजह से तश्कील क़ाबू में आ गई तो इन्शा-अल्लाह आपको इसका सवाब मिलेगा। और उसे क़ियामत के दिन आप अपनी आँखों से देख लेंगे।

जमकर बैठो। मजमे के जमाने का सवाब लो। और उठकर मजमे को उखाड़ने वाले न बनो।

मस्जिद के बाहर एक बहुत बड़ा मजमा हमारे प्यारे दोस्तों का है। न मालूम उनको कितनी ठंडक लग रही होगी। अल्लाह पाक उनकी इस क़ुरबानी को क़बूल करे। वहाँ पर भी तश्कील करने वाले काग़ज़-क़लम लेकर पहुँच जाएँ। और लोग खड़े हो-होकर चार-चार

महीने के नाम लिखवाएँ छह-छह महीने के, आठ-आठ महीने के, साल-साल के, डेढ़-डेढ़ साल के नाम लिखवाएँ।

जो लोग पहले नाम लिखवा चुके हैं और उनकी तरतीब भी बन चुकी वे लोग मेहरबानी करके नाम न लिखवाएँ। इस वक़्त तो वे लोग अपना नाम लिखवाएँ जो नये हैं।

मेरी दिली दुआएँ

जो भी इस वक़्त में नाम लिखवाए जो भी अपने वक़्त को बढ़ाए मेरा जी चाहता है कि उनके लिए हम दुआ करें कि ऐ अल्लाह! उनके जान व माल में, उनके ईमान में, उनकी आबरू में, उनके घर में, उनके कारोबार में, उनकी हर लाईन में अल्लाह पाक बरकत नसीब फ़रमाए। और अल्लाह पाक उनकी दुनिया व आख़िरत की ज़रूरतों को आफ़ियत (चैन-सुकून) के साथ ग़ैबी तरीक़े पर पूरा फ़रमाए।

यह दुआ उन लोगों के लिए है जो आए थे सिर्फ़ बयान सुनने और खड़े होकर तीन चिल्ले लिखवा दिये। या जो आया था एक चिल्ले के लिए और खड़े होकर तीन चिल्ले लिखवा दिये। अब खड़े हो-होकर अपने नाम लिखवाओ। अल्लाह क़बूल करे। चारों तरफ़ से आवाज़ें आएँ और चारों तरफ़ से नाम आएँ।

और तुम लोग सारे के सारे जमकर बैठे रहो, जी चाहता है कि तुम्हारे लिए भी यह दुआ करूँ कि अल्लाह पाक तुम्हें बैठने का बहुत बड़ा बदला दुनिया व आख़िरत में नसीब फ़रमाए। क्योंकि तुमने हम पर रहम किया...... और बोलो भाई...... नया नाम चाहिए और अगर पुराना नाम हो तो वक़्त बढ़ाकर बोलें।

चार-चार महीने के ढेर लगा दो। ताकि पूरे मुल्क में पैदल जमाअ़तें बनकर जा सकें इन्शा-अल्लाह...... अल्लाह पाक कामिल और पूरी क़ुदरत वाला है।

लोगों को कलिमे भी याद नहीं। नमाज़ भी याद नहीं। ख़ुशनसीबी होगी, बोलते रहो भाई।

दुआ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ، الٓمّٓ ، اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ، وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ، يَآ اَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ٥ رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ٥ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ، اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنَّا، اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مِنْهُ مَالَمْ نَعْلَمْ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَاسَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَااسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ٥

ऐ अल्लाह! तू हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमारी तमाम ग़लतियों से दरगुज़र फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम तेरे कुसूरवार बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! हम तेरे ख़तावार बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! तू हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे।

ऐ अल्लाह! यह पूरा का पूरा मजमा तेरे सामने हाथ फैलाए बैठा है। ऐ अल्लाह! इसके हाथ फैलाने को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू रुश्द व हिदायत के और रहमतों के दरवाज़े खोल दे। मुसीबतों, बलाओं, परेशानियों और गुमराही व बेदीनी के दरवाज़ों को बन्द फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू ज़ल्ज़लों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू ख़ून बहाने से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हवा के तूफ़ान से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमारा बन जा और हमें अपना बना ले।

ऐ अल्लाह! हम सब का अपने-अपने वक़्त पर ईमान पर ख़ात्मा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम कमज़ोर हैं, हम ज़ईफ़ हैं,

ऐ अल्लाह! तू ज़ईफ़ों का रब है।

ऐ अल्लाह! तू हमारे हाल पर रहम व करम का मामला फ़रमा।

ऐ अल्लाह! पूरे आ़लम के अन्दर दीन के फैलने की ग़ैब से सूरतें पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तेरे करोड़ों बन्दे बग़ैर ईमान के जी रहे हैं।

ऐ अल्लाह! तू ऐसी ग़ैबी सूरतें पैदा फ़रमा कि जो ईमान वाले नहीं हैं वे ईमान वाले बन जाएँ।

ऐ अल्लाह! हम लोगों के ईमान के अन्दर तू ताक़त पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! मज़बूती पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! दुनिया की क़ौमों की हिदायत के फ़ैसले फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहिब) दामत बरकातुहूम (1) को सेहत व ताक़त और हिम्मत व आ़फ़ियत अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू बीमारों को मुकम्मल शिफ़ा अ़ता फ़रमा और जल्द अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! परेशान हाल की परेशानियों को दूर फ़रमा।

ऐ अल्लाह! क़र्ज़दारों के क़र्ज़ों की अदायगी की ग़ैब से सूरतें पैदा फ़रमा।

(1) हज़रत का इन्तिक़ाल हो चुका है। अल्लाह तआ़ला जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम से नवाज़े। आमीन

ऐ अल्लाह! जो लड़के और लड़कियाँ शादी के क़ाबिल हों, उनके लिए बेहतरीन जोड़ा तू अपने करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जिन-जिन लोगों ने ज़बान से दुआओं के लिए कहा हो या ख़त लिखा हो या इसके तलबगार रहे, ऐ अल्लाह! तू उन सब की और हम सबकी दुनिया व आख़िरत की ज़रूरतों को आफ़ियत के साथ ग़ैबी तरीक़े पर पूरी फ़रमा। और उन सब की और हम सब की दुनिया व आख़िरत की परेशानियों को आफ़ियत के साथ ग़ैबी तरीक़े पर, तू ख़त्म फ़रमा। और इसकी क़द्रदानी तू नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! पूरे आलम के अन्दर इस वक़्त जो हालात हैं, ऐ अल्लाह! बड़े परेशान करने वाले हालात हैं। ऐ अल्लाह! तू ही उन परेशानियों को दूर कर सकता है।

ऐ अल्लाह! आख़िरत की फ़िज़ा पूरे आलम के अन्दर बनने लगे। ईमान की फ़िज़ा बनने लगे। ईमान की हवाएँ चलने लगें। ऐ अल्लाह! हिदायत क़ायम होने लगे। ऐ अल्लाह! तू हिदायत की सूरतें पैदा फ़रमा।

उसके लिए जो हठधर्मी करने वाले और जो ज़िद्दी क़िस्म के लोग हैं, जो इसमें रोड़ा बनते हैं, रुकावट बनते हैं और उनके दिलों पर मोहरें लगी हुई हैं। ऐ अल्लाह! तू उनके सरग़नों (बड़ों) को और उनके जत्थों को और इसी तरह उनके अड्डों को नेस्त-नाबूद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू क़ादिरे मुतलक़ है।

ऐ अल्लाह! तू बातिल को नेस्त-नाबूद फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हक़ को पूरे आलम के अन्दर चालू फ़रमा।

ऐ अल्लाह! बातिल की आवाज़ों को बे-असर फ़रमा। और हक़ वाली आवाज़ असर डालने वाली (प्रभावकारी) फ़रमा।

ऐ अल्लाह! यह पूरा मजमा दो दिन से मुस्तक़िल तेरे दीन की बातों को सुन रहा है। और शौक़ से सुन रहा है।

और सुनता ही नहीं बल्कि अमल के लिए भी खड़ा हो रहा है।

ऐ अल्लाह! इनके सुनने और बैठने को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! न मालूम कौन तुझे कितना पसन्द आ चुका हो, इसको हम नहीं जानते। ऐ अल्लाह! तू अपनी नाराज़गी से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

अपनी रज़ामन्दी हमें नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अगर तू नाराज़ हो गया तो हमारा कोई ठिकाना नहीं है।

ऐ अल्लाह! आज तक तेरे नाराज़ करने वाले काम हमसे जितने भी हुए हैं तू अपने फ़ज़्ल से उन्हें माफ़ फ़रमा।

और तेरे राज़ी करने वाले काम तेरी मेहरबानी से जितने भी हुए हैं, तू अपने फ़ज़्ल व करम से क़बूल फ़रमा।

और आगे भी ऐ अल्लाह पूरी ज़िन्दगी तेरे को राज़ी करने वाले कामों की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा।

और तेरे को नाराज़ करने वाले कामों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हम सब के बाप-दादों की, नाना-नीनी और दादा-दादी और जितनी भी ऊपर की पुश्तें इस्लाम की हालत के अन्दर गुज़र चुकी हैं, ऐ अल्लाह! तू उनको क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा। और उनकी क़ब्रों को नूर से रोशन फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हमारी क़ियामत तक आने वाली नस्लों को दीन की दावत के लिए क़बूल फ़रमा।

हमें नमाज़ों को उनके आदाब के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! दुनिया की मुहब्बत को हमारे दिलों से आफ़ियत के साथ निकाल दे। और ऐ अल्लाह! आख़िरत की फ़िक्र हमारे दिलों के अन्दर आफ़ियत के साथ पैदा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! नाहक़ की तरफ़दारी और हक़-तल्फ़ी से ऐ अल्लाह!

तू हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू दुश्मनों के हम पर हंसने से हमारी पूरी-पूरी हिफ़ाज़त फ़रमा।

ऐ अल्लाह! तू हमें अपनी रहमत के दामन में ले ले।

ऐ अल्लाह! हम तेरे कमज़ोर बन्दे हैं।

ऐ अल्लाह! जो कुछ हमें माँगना चाहिए था, वह हम माँग नहीं सके, बग़ैर माँगे तू हमें अपने फ़ज़्ल व करम से इनायत फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जहाँ-जहाँ बारिश की ज़रूरत है, वहाँ पर रहमत की बारिश अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा।

ऐ अल्लाह! जहाँ-जहाँ लोग परेशान हैं, मुसीबत में हैं, ऐ अल्लाह! उनकी मुसीबतों को अपने लुत्फ़ व करम से तू दूर फ़रमा।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ٥ وَ تُبْ عَلَیْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ٥ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَ سَلِّمْ، سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ٥

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउ़ल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्-व बारिक् व सल्लिम्। सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल् इज़्ज़ति अ़म्मा यसिफून। व सलामुन् अ़लल् मुर्सलीन। वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

तक़रीर (2)

यह तक़रीर 2 नवम्बर 1990 ई० को बंगले वाली मस्जिद देहली में हुई।

जो अल्लाह से डरने वाले और अपने परवर्दिगार से डरने वाले हैं, उनकी जमाअ़तें बन-बनकर जन्नत की तरफ़ चलेंगी। और जन्नत के दरवाज़े पहले से उन्हें खुले मिलेंगे और पहरेदार फ़रिश्ते यूँ कहेंगेः

سَلامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خَالِدِيْنَ ٥ (پارہ– ٢٣)

सलाम पहुँचे तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा हो। सो दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा-हमेश रहने के लिए।

नींद तो पूरी हो जाएगी क़ब्र के अन्दर, नाश्ता मिलेगा अ़र्श के साए के नीचे, पानी मिलेगा हौज़े-कौसर का। और दोपहर का खाना मिलेगा जन्नत में, और रात वहाँ आएगी नहीं। अब हमेशा के लिए मज़े उड़ाओ क्योंकि तुमने अल्लाह को रब माना। अल्लाह ज़रूरतें पूरी करते थे वह तुमने अल्लाह की मेहरबानी समझी। और ज़मीन व आसमान देखकर तुमने अल्लाह को पहचाना। हर हाल में तुमने अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपने बदन को तुमने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

तक़रीर (2)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दिलों के अन्दर अल्लाह की रबूबियत (यानी उसके रब होने) का यक़ीन अगर उतर जाए तो सारे दीन पर चलना आसान हो, और दुनिया के अन्दर की बलाएँ भी अल्लाह दूर फ़रमाए। आख़िरत की तकलीफ़ों से भी अल्लाह महफ़ूज़ रखे। और दुनिया के अन्दर भी अल्लाह नेमतों के दरवाज़े खोले और आख़िरत के अन्दर भी अल्लाह जन्नत इनायत फ़रमाए।

अ़हदे अलस्त

'रूहों के आ़लम' के अन्दर सारे लोगों को जमा करके अल्लाह ने पूछा था: "अलस्तु बि-रब्बिकुम्" (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? तुम्हारा पालने वाला नहीं हूँ?) तो सब की रूहों ने कहा कि तू हमारा रब है।

अबू जहल और फ़िरऔ़न की रूहों ने भी यह कहा। ईमान वालों

की रूहों ने भी यह कहा। इसलिए कि वहाँ पर अल्लाह ही थे। इम्तिहान की कोई चीज़ नहीं थी।

यहाँ इम्तिहान है। जो ज़रूरतें पूरी करने वाले अल्लाह हैं वह दिखाई नहीं देते और जहाँ से ज़रूरतें पूरी होती दिखाई देती हैं हक़ीक़त में वहाँ से ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं। करने वाले अल्लाह हैं, दिखाई देता है असबाब (संसाधनों) में।

ये असबाब यहाँ पर इम्तिहान के दर्जे में हैं। वहाँ पर यह इम्तिहान तो था नहीं। वहाँ पर तो सिर्फ़ अल्लाह ही अल्लाह थे। तो सब की रूहों ने कह दिया कि अल्लाह आप हमारे रब हैं।

قَالُوْا بَلٰى (پارہ— ۹)

सबने कहा बेशक आप हमारे रब हैं।

और इसी तरह जब क़ियामत का दिन आएगा तो ये जितने ज़ाहिरी असबाब और साधन हैं, ये वहाँ पर नहीं होंगे।

दुकान, खेत, घर-बार, सोना-चाँदी, रुपये-पैसे वहाँ नहीं होगा। वहाँ पर अल्लाह ही अल्लाह होंगे और उनका ग़ैबी निज़ाम।

अफ़सोस और ना-उम्मीदी

जो आज ग़ैब (आँखों से ओझल) है वह सब खुला हुआ सामने आएगा। उस वक़्त में कट्टर से कट्टर बेईमान और काफ़िर भी अल्लाह को रब कहेगा।

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحاً اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ٥ (پارہ— ۱۲)

यह काफ़िर कहेगाः

"ऐ हमारे रब! हमारी आँख खुल गई। हमारे कान खुल गए। अब हमको दुनिया में वापस कर दे, अब हम अच्छे काम करेंगे। हमें यक़ीन आ गया"।

अब हमारे सामने बात आ गई कि अच्छे आमाल पर क्या मिलता

है और बुरे आमाल पर क्या बरदाश्त करना पड़ता है। वह हमारे सामने आ गया। दुनिया के अन्दर हमारे कान खुले हुए नहीं थे। और हमारी आँखें खुली हुई नहीं थीं। इस बिना पर हमको दुनिया के अन्दर दिखाई देता था चीज़ों में, और अल्लाह ने रखा था अ़मलों के अन्दर।

नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ

यह अल्लाह की तरफ़ से इम्तिहान है कि अल्लाह ने रखा है अ़मलों में और दिखाते हैं चीज़ों में, और मुकल्लफ़ (पाबन्द) बनाया है इस बात का कि जहाँ तुम्हें नज़र आता है वहाँ से यक़ीन को हटाओ। और जहाँ की हम ख़बर दे रहे हैं उसपर यक़ीन लाओ। नज़र वाले रास्ते से यक़ीन को हटाओ और ख़बर वाले रास्ते पर यक़ीन को लाओ।

नज़र तो आता है मुल्क व माल और रुपये-पैसे से ज़िन्दगियों का बनना और ख़बर है ज़िन्दगियों में बनने की ईमान और नेक आमाल पर।

नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सदक़ा व ख़ैरात जो भी अ़मल हम करेंगे उस पर ज़िन्दगी बनेगी, यह ख़बर है।

अब जिन अ़मलों में ज़िन्दगी बनने की ख़बर है। ज़िन्दगी का बनना उसके अन्दर छुपा दिया।

आमाल के ख़राब होने में ज़िन्दगियों का उजड़ना यह भी छुपा हुआ है और आमाल के अच्छे होने में ज़िन्दगियों का बनना छुपा हुआ है। ज़ाहिर होगा उसके वक़्त पर। और असल ज़ाहिर होने का जो वक़्त है वह है मौत का। लेकिन अल्लाह तआ़ला ख़राब अ़मल वाले को किसी मौक़े पर दुनिया में भी अनोखे तरीक़े से पकड़ते हैं। और अच्छे अ़मल करने वाले को किसी मौक़े पर अनोखे ढंग से नवाज़ते हैं। 'अनोखे' का लफ़्ज़ याद रखना।

ज़ाहिरी तरतीब में सब बराबर

एक तो ज़ाहिरी तरतीब है। ज़ाहिरी तरतीब में तो मुसलमान हो या काफ़िर, सब बराबर। बादल सबके खेतों में बरसेगा। अनाज सबके खेतों में होगा। और फल सबके बाग़ीचे में आएँगे। और मुर्ग़ियाँ सबकी अण्डे देंगी। दूध के जानवर सबको दूध देंगे। तो यह ज़ाहिरी तरतीब तो सबके लिए बराबर। एक नबी है उसको भी पत्थर मारा गया तो ख़ून निकला। नबी पर भी जादू किया जाए तो असर होगा। और एक काफ़िर को भी पत्थर मारो तो उसको भी लगेगा। और अगर काफ़िर को भी शहद चटा दो तो शहद उसको भी मीठा मालूम होगा। तो जितनी ज़ाहिरी तरतीब अल्लाह ने दुनिया में क़ायम की है उसमें सबको बराबर कर दिया।

आज का ग़ैब कल आँखों के सामने होगा

लेकिन अल्लाह का जो ग़ैबी निज़ाम है, छुपा हुआ। जिसकी ख़बर नबियों के ज़रिये और आसमानी किताबों के ज़रिये दी वह छुपा हुआ जो ग़ैबी निज़ाम है वह खुलकर मौत के वक़्त सामने आएगा।

आज का जो ग़ैब है यह मौत पर आँखों के सामने होगा। और आज जो दिखाई दे रहा है यह मौत पर छुप जाएगा। आज जो दिखाई देता है वह मौत पर छुपेगा और आज जो छुपा हुआ है वह मौत पर दिखाई देगा।

इस वक़्त में हमारे सामने चीज़ों से ज़िन्दगियों का बनना यह दिखाई देता है लेकिन आमाल अगर ख़राब हों तो ज़िन्दगियों का उजड़ना यह दिखाई नहीं देता। इस वक़्त में फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते, जन्नत और जहन्नम दिखाई नहीं देतीं। लेकिन मौत आई और आदमी क़ब्र में गया तो जो दिखाई देता था वह बन्द हो गया। मुल्क और माल से जो ज़िन्दगी बनती दिखाई देती थी और जिस पर आपस में

लड़ाई-झगड़े, फ़ितने-फ़साद होते थे वह सारा का सारा मौत के वक़्त में बे-असर हो गया।

क़ब्र के साँप को दुनिया का डंडा नहीं मार सकता

अब क़ब्र के अन्दर अगर साँप आए तो दुनिया का डंडा उसे मार नहीं सकता। क़ब्र में जो आग लगी तो दुनिया का पानी उसे बुझा नहीं सकता। क़ब्र के अन्दर अंधेरा आ गया तो दुनिया की लाईट उसमें उजाला नहीं ला सकती।

इन सारी चीज़ों से काम न बनना यह मौत पर समझ में आ गया। और आमाल से काम का बनना यह भी समझ में आ गया।

असल कामयाबी नमाज़ पढ़ने में है

अगर मैं नमाज़ पढ़ता तो दाहिनी तरफ़ से जो अज़ाब आया है, नमाज़ उसे रोकती। लेकिन आदमी ने नमाज़ को छोड़कर लाख रुपये का ड्राफ़्ट निबटाया।

नमाज़ी ने तो लाख छोड़ा, नमाज़ पढ़ी, और बेनमाज़ी ने नमाज़ छोड़ी और लाख रुपया लिया। तो मौजूदा ज़माने में तो लाख वाला बड़ा कामयाब दिखाई दिया और नमाज़ पढ़ने वाले की जेब में पाँच पैसे भी नहीं आए।

लेकिन नमाज़ के अन्दर जो कामयाबी है वह छुपी हुई है। जो क़ब्र में ज़ाहिर होगी। और लाख रुपये लेकर जो नमाज़ छोड़ी उसके ऊपर जो बरबादी है यह भी छुपी हुई है, यह क़ब्र के अन्दर सामने आएगा।

क़ब्र के अन्दर जब दाहिनी तरफ़ से अज़ाब आया तो नमाज़ रोकती, वह थी नहीं, और लाख रुपया जो है वह यहाँ काम नहीं आता, तो मरने के वक़्त तो सब की समझ में आ गया। लेकिन मरने के वक़्त जो समझा तो काम का नहीं। तो आदमी क़ियामत के दिन कहेगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी आँख खुल गई।

ग़ैब पर ईमान लाना क्या है?

जैसे पहली रात का चाँद देखने के लिए खड़े हुए। एक आदमी तेज़ निगाह वाला, एक आदमी कमज़ोर निगाह वाला। तेज़ निगाह वाले ने बताया कि देखो वह चाँद है। कमज़ोर निगाह वाला कहता है कि भाई मेरे को तो दिखाई नहीं देता। वह कहता है कि पेड़ के ऊपर बादल के बीच में देख ले। बोले पेड़ दिखाई देता है, बादल दिखाई देता है, चाँद नहीं दिखाई देता।

अब यह कहने लगा कि झूठे! चाँद कहाँ है। दिखाई तो देता नहीं। मग़रिब की नमाज़ के बाद गए ज़रा मतला (उदयस्थल) साफ़ हो गया। बोले इधर आ, दिखाई दे रहा है? जी हाँ! दिखाई दे रहा है, तू सच्चा है।

तो उस आदमी ने उसकी ख़बर को सच्चा नहीं माना बल्कि अपनी नज़र को सच्चा माना। आदमी की ख़बर को सच्चा मानता तो जब चाँद नहीं दिखाई देता था उस वक़्त भी कहता कि भाई! मेरी निगाह कमज़ोर है और तू है सच्चा। तो आज अगर इसने नबी की बात को और अल्लाह तआला की बात को सच्चा माना इसके बावजूद कि जन्नत और जहन्नम दिखाई नहीं देते, फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते, तो फिर उसकी क़ीमत अल्लाह देंगे। उसपर अल्लाह दुनिया में भी हालात बनाएँगे और मरने के बाद के भी हालात बनेंगे।

जो अल्लाह व रसूल की बात को सच्चा माने इसका नाम "ईमान बिल्ग़ैब" (ग़ैब पर ईमान लाना) है।

हिमालय पहाड़ बड़ा है, राई का दाना नहीं

हिमालय पहाड़ बहुत बड़ा है। लेकिन अगर आप अपनी दोनों आँखों के अन्दर राई का दाना डाल दें। एक राई का दाना इधर और एक राई का दाना उधर। अब उसके बाद पहाड़ को देखें, वह पहाड़

दिखाई नहीं देगा। तो अगर कोई कम-समझ आदमी यूँ कहे कि राई का दाना इतना बड़ा, इतना बड़ा कि हिमालय पहाड़ से भी बड़ा। वह कैसे? इसलिए कि राई का दाना आ गया तो हिमालय पहाड़ दिखाई नहीं देता। तो हिमालय पहाड़ से राई का दाना बड़ा।

इसी तरह आमाल पर जो आख़िरत में जन्नत मिलेगी और जो आख़िरत में बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे उसका मुक़ाबला इस दुनिया के साथ पड़ जाए तो यह कम-समझ आदमी इसके दिल की आँख बन्द है वह भी इस दुनिया को बड़ा समझता है। जिसकी हैसियत एक मच्छर के पर के बराबर भी नहीं।

जब मुक़ाबला पड़ गया आमाल का और चीज़ों का तो यह चीज़ों को लेता है, आमाल को छोड़ता है। क्योंकि आमाल के अन्दर जो कामयाबी है वह ओझल बन गई। इस दुनिया की वजह से जो मच्छर के बराबर भी नहीं, वह इस दुनिया को बहुत बड़ी चीज़ समझता है। जैसे उसने राई के दाने को बड़ा समझा।

राई के दाने की वजह से जो हिमालय पहाड़ दिखाई नहीं देता तो उससे कहा जाएगा कि भाई राई का दाना बड़ा नहीं। तू यूँ मत कह कि राई का दाना हिमालय पहाड़ से बड़ा है। यह राई के दाने की बड़ाई नहीं, यह तेरी आँख की छोटाई है। तेरी आँख इतनी छोटी है कि राई का दाना तेरी आँख में आ जाए तो हिमालय पहाड़ भी न दिखाई दे, तो यह तेरी आँखों की छोटाई है, राई के दानों की बड़ाई नहीं।

समझ का फ़र्क़

यह तेरी समझ की कमज़ोरी है। यह दुनिया बड़ी नहीं। दुनिया तो मच्छर के पर के बराबर भी नहीं। और यह बात मरने के वक़्त फ़िरऔन की भी समझ में आ गई। अबू जहल की समझ में भी आ गई। लेकिन उस वक़्त का समझ में आना बेकार। उस वक़्त अगर माना तो उसने अपनी नज़र को माना। अल्लाह व रसूल की ख़बर को

नहीं माना।

क़ियामत के दिन यह सारा पर्दा साफ़ हो जाएगा और जो आज दुनिया का पर्दा आँखों के सामने है वह क़ियामत के दिन साफ़ हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ٥ (پارہ-٢٦)

हमने पर्दा हटा लिया तो तेरी आँख बहुत तेज़ी के साथ देख रही है, जन्नत को, जहन्नम को, और आमाल की तासीर को।

अनोखी मदद

मेरे मोहतरम दोस्तो! अच्छे अ़मलों के अन्दर अल्लाह की मदद का आना छुपा हुआ है। बुरे अ़मलों के अन्दर अल्लाह की पकड़ का आना यह भी छुपा हुआ है।

लेकिन अल्लाह तआ़ला दुनिया के अन्दर भी भले काम करने वालों को अनोखी मदद दिखा देते हैं। अनोखी मदद देखकर उसकी क़द्र करनी चाहिए। और अगर अनोखी मदद देखकर आदमी उसकी क़द्र न करे तो फिर उस पर वबाल आता है। जैसे अनोखे तरीक़े पर अल्लाह ने आसमान से खाना उतारा ईसा अ़लैहिस्सलाम के कहने पर जब यह उनके साथियों ने कहा, जब वह आसमान का खाना आया तो उन्होंने नाक़द्री की तो उनके ऊपर वबाल आया।

अनोखे तरीक़े पर जो मदद आती है उसकी क़द्र करनी भी बहुत ज़रूरी है। और उसकी क़द्र करना क्या है? उसकी क़द्र करना अल्लाह का शुक्र करके और ज़्यादा अल्लाह की बात का मानना है। यह उसकी क़द्र करना है।

साहिबे मक़ाम की सोच और फ़िक्र

एक आदमी दिल्ली का रहने वाला है। उसके सामने लाल क़िला,

कुतुब मीनार और चाँदनी चौक, ये चीज़ें रोज़ाना उसके सामने आती हैं। गुज़रता है और देख लेता है।

लेकिन जो आदमी बाहर का है कभी दिल्ली आया। अब वह जो देखने गया जब फिर वापस जाएगा तो हर वक़्त उसके तज़किरे करेगा कि साहिब वहाँ की चाँदनी चौक ऐसी, वहाँ का कुतुब मीनार ऐसा और वहाँ का लाल क़िला ऐसा। एक आदमी जो उसी जगह पर रहता है उसका अन्दाज़ अलग है। तो दीन का काम करते-करते अगर साहिबे मक़ाम बन जाए तो हर वक़्त उसके साथ मददें ही मददें होती रहेंगी। और उसे इस पर ताज्जुब इसलिए नहीं होगा क्योंकि यह तो अल्लाह का वायदा है, यह तो होना ही चाहिए। अल्लाह ने जो चाहा वह हो गया। तो इस पर उसमें तकब्बुर पैदा नहीं होगा।

और एक आदमी के साथ कभी-कभार कोई अनोखी मदद हो गई, झलक देख ली। और यह आदमी साहिबे मक़ाम नहीं है। जैसे एक तो दिल्ली का रहने वाला है और एक कभी-कभार आने वाला है।

इसी तरह दीन का काम करने वालों में एक बनता है साहिबे मक़ाम, तो उसके साथ दिन-रात मददें आती हैं, और मददों पर उसके दिल के अन्दर तकब्बुर और बड़ाई नहीं पैदा होती।

वह समझता है "हय्-य अ़लस्सलाति" और "हय्-य अ़लल्-फ़लाहि" का मफ़हूम कि नमाज़ पढ़ो, कामयाबी मिलेगी। अल्लाह ने कह दिया तो कामयाबी मिलना तय है। क़र्ज़े की अदायगी की दुआ़ हमने माँगी, अल्लाह ने क़र्ज़ा अदा कर दिया। क्योंकि नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्मक्फ़िनी बि-हलालि-क अ़न् हरामि-क व अग़्निनी बि-फ़ज़्लि-क अ़म्मन् सिवा-क।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! हराम से बचाते हुए अपने हलाल ज़रिये से तू मेरी किफ़ायत फ़रमा! और अपने फ़ज़्ल के ज़रिये तू मुझे अपने

अ़लावा हर किसी से बेपरवाह फ़रमा दे।

जो आदमी यह पढ़ेगा, उसका क़र्ज़ा अदा होगा। और मैंने यह दुआ़ पढ़ी, अल्लाह ने क़र्ज़ा अदा कर दिया। तो यह अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो कहा वह हो गया। दुआ़ माँगी और काम बन गया।

तो दीन का काम करते-करते जो साहिबे मक़ाम बन जाए दिन-रात उसके लिए मददें आयेंगी। लेकिन अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि उसके अन्दर फ़ख़्र, तकब्बुर और दिखावा वग़ैरह पैदा नहीं होगा।

मैं बुज़ुर्ग बन गया

और जब कभी-कभार कोई झलक मदद की देख ली, तो हर दम उसी का तज़किरा करता रहेगा। जहाँ बैठेगा, मैं फ़लाँ जगह जमाअ़त में गया था वहाँ यूँ हुआ। और मैं इतने काम छोड़कर गया था। जब वापस लौटा तो सब काम बन गए। अब फ़ख़्र के तौर पर हर जगह इसी को बयान करता रहेगा। और उसके अन्दर बड़ाई के आने का ख़तरा है।

और जो साहिबे मक़ाम होगा उसके अन्दर यह बात नहीं होगी। और जब साहिबे मक़ाम नहीं होगा तो उसकी दुआ़ पर काम बना तो समझेगा कि मैं बुज़ुर्ग बन गया। ज़बान से तो नहीं कहेगा कि मैं बुज़ुर्ग बन गया लेकिन दिल के अन्दर ख़्याल करेगा कि अब तो मैं कुछ बन गया।

चीज़ों में तासीर...... इनसान का तजुर्बा
और अ़मल में तासीर...... ख़ुदा का वायदा

लेकिन आपने कभी नहीं देखा होगा कि एक आदमी शहद मुँह में डाले और उसका मुँह मीठा हो जाए तो वह यूँ कहे कि साहिब! मैं

बहुत बड़ा बुज़ुर्ग बन गया।

वह कैसे?

इसलिए कि शहद मुँह में जाते ही मेरा मुँह मीठा हो जाता है। और मैं बर्फ़ के पास जाता हूँ तो मेरे को ठंडक लगती है। और मैं आग के पास जाता हूँ तो मेरे को गर्मी मिलती है। और जब ख़ुशबू वाले की दुकान पर जाता हूँ तो मेरे को ख़ुशबू मिलती है। मैं बुज़ुर्ग बन गया।

अल्लाह के बन्दे! ख़ुशबू तेरे को आने लगी, और आग से गर्मी आने लगी तो इसमें बुज़ुर्ग कैसे बना?

कोई ऐसा कहता भी नहीं, लेकिन अगर नमाज़ पढ़ने पर काम बना तो यहाँ यह आ जाता है कि मैं बुज़ुर्ग बन गया।

चीज़ों के अन्दर की तासीर तो इनसान का तजुर्बा और अ़मल के अन्दर की तासीर ख़ुदा का वायदा है। अब ख़ुदा का वायदा अगर पूरा हुआ तो उसपर यह यूँ समझने लगता है कि मैं बुज़ुर्ग बन गया।

अब जब बुज़ुर्ग बनने का ख़्याल शैतान ने दिल के अन्दर डाला तब यहीं से यह गिरना शुरू हुआ।

अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

لَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ (پارہ– ۲۷)

अपने आप को बुज़ुर्ग मत समझो। अपने आपको यूँ न समझो कि मैं बहुत पाक-साफ़ बन गया।

यह अल्लाह ही जानता है:

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى (پارہ– ۲۷)

तक़्वे वाला (परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाला) कौन है, यह अल्लाह ही जानता है।

कमी और कोताही की तलाश

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब दीन का काम करते रहोगे और उसके

अन्दर अल्लाह की तरफ से आज़माईश की घाटियाँ भी आती रहती हैं। अगर उन आज़माईश की घाटियों के अन्दर भी इनसान जमा रहा और लगा रहा, फिर अल्लाह की मदद आई, फिर आज़माईश की घाटी आई, फिर अल्लाह की मदद आई। फिर आज़माईश की घाटी आई तो अल्लाह तआ़ला वह दिन लायेंगे कि आदमी साहिब मक़ाम बने।

और साहिबे मक़ाम बन जाने के बाद अगर आमाल के ज़रिये उसके काम न बने तो यह आदमी फ़ौरन सोचेगा कि मेरे आमाल में कमी कहाँ से आई। इसको यह शुब्हा नहीं होगा कि साहिब! मैंने फ़लाँ अ़मल किया फिर भी उसका असर नहीं ज़ाहिर हुआ। मैंने दुआ़ माँगी फिर भी मेरा काम नहीं बना। और मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ फिर भी मुझे कामयाबी नहीं मिली। और मैं क़र्ज़े की अदायगी की दुआ़ माँगता हूँ फिर भी मेरा क़र्ज़ा अदा नहीं होता...... यह उसकी ज़बान पर नहीं आएगा। उसकी ज़बान पर क्या आएगा?

मैं अ़मल कर रहा हूँ लेकिन उस अ़मल की तासीर ज़ाहिर नहीं होती। मालूम ऐसा होता है कि मेरे अ़मल में कोताही और कमी है।

कोताही और कमी की तलाश में लगे और कोताही की तलाश करते-करते अगर आदमी तौबा व इस्तिग़फ़ार करे, और अगर यह तौबा व इस्तिग़फ़ार आदमी को करनी आ गई तो मैं सच कहता हूँ कि वह सारी कोताही को साफ़ कर देगा।

तो भाई कोताही को ढूँढते रहो। उसको ठीक भी करते रहो। अल्लाह से माँगते भी रहो। आदमी जब तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है। और आदमी जब गिड़गिड़ाता है और बिलबिलाता है तो वह सारी कमी और कोताही जो है अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा व इस्तिग़फ़ार से पाक व साफ़ करके उसको बहुत ऊँचे मुक़ाम पर ले जाते हैं।

अल्लाह का पसन्दीदा बन्दा

वह गुनाहगार जो शर्मिन्दगी के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करके अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाये वह अल्लाह को बहुत ज़्यादा पसन्द है,

उस दीन का काम करने वाले के मुक़ाबले में जिसको दीन का काम करके तकब्बुर और घमंड पैदा हो।

एक आदमी दीन का काम कर रहा है, और उसके अन्दर फ़ख़ पैदा हो गया तो यह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक नीचे उतरेगा। और वह आदमी है तो गुनाहगार, लेकिन उसके अन्दर नदामत (शर्मिन्दगी) पैदा हो गई और वह गिड़गिड़ाने लगा तो यह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मक़बूल हो गया।

दावत की फ़िज़ा किस लिए?

यह जो दावत की फ़िज़ा है। यह इसलिए है कि उसके अन्दर अल्लाह को बार-बार बोलते, सुनते ग़ैब का यक़ीन और छुपी हुई चीज़ों का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाए।

यही बदन है सवा पाँच फ़िट का। इसका इस्तेमाल अगर कुरआन व हदीस के मुवाफ़िक़ हुआ, तो इसके अन्दर अल्लाह की मददें छुपी हुई हैं। और इसका इस्तेमाल अगर कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ हुआ तो इसमें अल्लाह की तरफ़ से पकड़ छुपी हुई है। इसमें मदद भी छुपी हुई है और पकड़ भी छुपी हुई है। और यह आदमी को मालूम होगा मौत के वक़्त। दुनिया के अन्दर तो कभी-कभार और मौत के वक़्त में तो बिल्कुल पक्की।

दिया सलाई का करिश्मा

मैं इसकी एक मिसाल दूँ। दिया सलाई है दिया सलाई। इसके अन्दर बिरयानी की देगें भी छुपी हुई हैं...... दिया सलाई जलाई और लकड़ी सुलगाई उस लकड़ी से और लकड़ी। फिर और लकड़ी जलाई तो पाँच हज़ार बिरयानी की देगें उस दिया सलाई के अन्दर छुपी हुई हैं, जब उसको सही तरतीब से इस्तेमाल किया गया।

और इसी दिया सलाई के अन्दर आग के शोले भी छुपे हुए हैं।

पचास लाख गैलन पैट्रोल का बहुत बड़ा टैंकर है। उसमें सोलह साल के लड़के ने एक दिया सलाई जलाकर डाल दी। फिर उसके अन्दर एक लकड़ी लगाकर जहाँ प्लास्टिक की दुकानें थीं वहाँ पर डाल दिया। अब वहाँ से भी शोले शुरू हो गये। फिर उसमें लकड़ी लगाकर रूई का जो गोदाम था उसके अन्दर डाल दिया, अब शोले पर शोले, चारों तरफ़ आग ही आग।

तो इस दिया सलाई के अन्दर आग के शोले भी छुपे हुए हैं और इस दिया सलाई के अन्दर बिरयानी की हज़ारों देगें भी छुपी हुई हैं।

आदमी के इस्तेमाल के तरीक़े पर अगला सारा निज़ाम चलता है।

ग़ैबी मदद और पकड़ की बुनियाद

बिल्कुल दिया सलाई की तरह यह हमारा बदन है। इसी बदन के अन्दर, इस्तेमाल अगर सही हो गया तो अल्लाह की मदद। और अगर इस्तेमाल ग़लत हो गया तो अल्लाह की पकड़।

लेकिन अल्लाह की मदद और पकड़ का जो असल वक़्त है वह है मौत का। लेकिन कभी-कभार ग़ैबी मदद और ग़ैबी पकड़ अल्लाह तआला दुनिया के अन्दर भी दिखा देते हैं।

जैसे दूसरे ज़मानें में नबियों के मानने वाले थे। तायदाद उनकी थोड़ी, ताक़त उनकी कम, सरमाया उनके पास बहुत थोड़ा, लेकिन उन्होंने अपने बदन का इस्तेमाल नबी के बाताए हुए तरीक़े पर किया तो उनके साथ अल्लाह की मदद आई। शुरू के अन्दर तो कुछ दिखाई नहीं दिया तो दूसरे मज़ाक़ उड़ाने लगे। और आज भी इस तरह के लोग कहते हैं किः

"तुम कहते हो कि अल्लाह बहुत बड़े हैं। तुम कहते हो कि अल्लाह इतनी बड़ी ताक़त वाले हैं। तुम पिछले वाक़िआत भी सुनाते हो। नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में अल्लाह की मदद कश्ती वालों पर यूँ आई। फलाँ ज़माने में यूँ आई। अब तुम्हारे अन्दर क्यों नहीं आ

रही? तुम तो बहुत परेशान हो। तुम्हारी तो हर जगह कटाई होती है, पिटाई होती है, मारा जाता है, तुम्हारी दुकानों में आगें लगाई जाती हैं, तुम्हारे आदमियों को क़त्ल किया जाता है और तुम कहते हो कि अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है।"

अल्लाह सबसे बड़ा है

जब देखो ये बेचारे "अल्लाह बड़ा है" की आवाज़ें लगा रहे हैं।

अज़ान में अल्लाह बड़ा। नमाज़ में जब तकबीर कही जाती है तो अल्लाह बड़ा। जब नमाज़ शुरू होती है तो उसके अन्दर हर जगह अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर। रुकूअ़ में जाए तो अल्लाहु अक्बर सज्दे में जाए तो अल्लाहु अक्बर। उठे तो अल्लाहु अक्बर। यहाँ तक कि बच्चा माँ के पेट से आया तो सीधे कान के अन्दर भी अल्लाहु अक्बर और उल्टे कान के अन्दर भी अल्लाहु अक्बर, जनाज़े की नमाज़ हो तो उसके अन्दर अल्लाहु अक्बर। तो तुम लोग अल्लाह को बहुत बड़ा कहते हो हालाँकि तुम अल्लाह को बड़ा कहने वाले इस क़द्र परेशान हो कि दूसरे आकर तुमको मारते हैं, लूटते भी हैं, काटते भी हैं, तुम्हारा मज़ाक़ भी उड़ाते हैं, गालियाँ भी देते हैं। लेकिन तुम हो कि एक ही रट लगी हुई है कि अल्लाह बड़ा है।

ख़ुदा के ख़ज़ाने बेशुमार हैं

तो इतना बड़ा अल्लाह, तुम उसको कहते हो कि आसमान भी बनाया, ज़मीन भी बनाई, चाँद भी बनाया, सूरज भी बनाया और 'मनी' (वीर्य) के दो क़तरों से कितना बढ़िया इनसान भी बनाया, और उस अल्लाह पाक को इतना बड़ा तुम कहते हो कि उसके ख़ज़ाने बेशुमार हैं।

जितने इनसान बनाए अल्लाह ने हर एक को अलग-अलग सूरत दे दी। और हर एक को अल्लाह ने अलग-अलग आवाज़ दे दी। उसके ख़ज़ाने में सूरतें बेशुमार, उसके ख़ज़ाने में आवाज़ें बेशुमार।

रोज़ाना तीन लाख बच्चे पैदा होते हैं और हर बच्चा नई सूरत और नई आवाज़ लेकर दुनिया में आता है। शक्ल भी नई लाता है, आवाज़ भी नई लाता है। और खुदा के ख़ज़ाने से तीन लाख बच्चे छह लाख आँखें भी लेकर पैदा होते हैं लेकिन खुदा के ख़ज़ाने में से आँखों का स्टॉक ख़त्म नहीं हुआ।

तुम्हारे अल्लाह की मदद तुम्हारे लिए क्यों नहीं?

जब तुम कहते हो कि अल्लाह इतना बड़ा है और अल्लाह बड़े ताक़त वाले हैं। इतने ताक़त वाले हैं कि बग़ैर खम्बे के आसमान को थाम रखा है। इतने बड़े अल्लाह की जो अनोखाी मददें हैं जिनको तुम पिछले वाक़िआत के अन्दर बताते हो कि किसी पर अनोखी मदद आई इस तरह कि आग को ठण्डा कर दिया और किसी के लिए छुरी को कुन्द कर दिया और किसी को मछली के पेट के अन्दर हज़्म न होने दिया। और किसी की मदद इस तरह आई कि जेलख़ाने से उठाया और मिस्र के सारे ख़ज़ानों का मालिक बना दिया।

ये सारी मददें तुम पिछले ज़माने की बताते हो तो वे मददें तुम्हारे लिए क्यों नहीं आतीं?

कुरआनी बातें भी बताते हो और अल्लाह की तारीफ़ भी करते हो, अल्लाह को बड़ा भी कहते हो। अल्लाह बड़ा है यह तुम्हारी ज़बान की नोक पर होता है, तो फिर तुम पर मदद काहे को नहीं आती?

दोस्तो! ये बातें कोई नई नहीं हैं जो हमारे ज़माने में कही जा रही हैं। इस तरह की बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में और हर नबी के ज़माने में कही गईं।

लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब कलिमा-ए-तय्यिबा की दावत देनी शुरू की और अल्लाह की बड़ाई बयान करनी

शुरू की तो "फ़-कब्बिर्" (अल्लाह की बड़ाई बयान कीजिए) के साथ अल्लाह रब्बुल् इज्ज़त ने "क़ुम् फ़-अन्ज़िर्" भी कहा (कि खड़े हो जाओ और लोगों को डराओ) लोगों को अल्लाह की पकड़ से डराओ। अल्लाह की बात नहीं मानोगे तो अल्लाह की पकड़ को तुम बरदाश्त नहीं कर पाओगे।

और भाई! डराने में तो यही कहेंगे ना...... कि अल्लाह बड़े हैं। नहीं मानोगे तो देखो! जहन्नम होगी उसमें साँप होंगे बिच्छू होंगे। हथकड़ियाँ होंगी। बेड़ियाँ होंगी। भूख-प्यास होगी। पिटाईयाँ होंगी। आग होगी। अंधेरा होगा। अल्लाह से डरो। अल्लाह बहुत बड़ा है।

और अल्लाह से डराने के लिए पिछले वाक़िआत सुनाए जाते हैं। देखो! फ़िरऔन ने अल्लाह की नहीं मानी तो अल्लाह ने कैसी पकड़ की। और देखो! फ़लाँ क़ौम की कैसी पकड़ हुई। तो भाई! तुम भी अल्लाह से डरो।

अल्लाह को एक मानो

अल्लाह को एक मानो। एक से ज़्यादा ख़ुदा न मानो। अगर एक से ज़्यादा ख़ुदा मानोगे तो तुम्हारे जितने अच्छे अ़मल होंगे क़ियामत के दिन उनका बदला तुम्हें नहीं मिलेगा। ये सारी बातें उन्हें समझाते रहे।

ख़राब और खोटे लोगों की बातें

लेकिन जो बग़ैर ईमान वाले खोटे और ख़राब लोग थे उन्होंने उनको तकलीफ़ पहुँचानी शुरू की और हर तरह की तकलीफ़ पहुँचाते रहे। और तक़लीफ़ पहुँचाते-पहुँचाते यह भी कहते थे कि भाई तुम अल्लाह को बड़ा कहते हो कि अल्लाह ऐसा, अल्लाह ऐसा, पिछले वाक़िआत और कहानियाँ भी सुनाते हो, लेकिन वह अल्लाह तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर रहा?

तो मेरे भाई! पिछले लोगों में भी जो ख़राब लोग थे वे भी इसी तरह की बातें करते थे।

क़ौमे नूह का मुतालबा

नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ९५० साल तक यही कहती रही। आख़िर में आकर उसने यूँ कहा:

فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِيْنَ ۝ (پارہ – ١٢)

तुम धमकी देते हो अल्लाह की पकड़ आएगी, अ़ज़ाब आएगा। इसके लिए क़ियामत का इन्तिज़ार कौन करे? अगर तुम सच्चे हो तो लाओ ना। तुम पकड़ यहीं ले आओ।

उसके बाद अल्लाह ने ख़बर दी कि सैलाब आने वाला है तुम कश्ती बनाओ। अब हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कश्ती बनाई तो वे सारे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

पानी का कहीं नाम व निशान नहीं और यह कश्ती बना रहे हैं। तब्लीग़ का काम करते-करते इन्होंने लकड़ी का काम शुरू कर दिया। कर रहे थे तब्लीग़ और बन गए बढ़ई।

वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने कहा:

قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ۝ (پارہ – ١٢)

तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो और हम तुम्हारे बारे में ताज्जुब करते हैं कि इतना बड़ा अ़ज़ाब आ रहा है और तुम्हें हंसी सूझ रही है?

और उसके बाद आई अल्लाह की पकड़। ज़ोर की पकड़ आ गई। जब पकड़ आ गई तो कुछ नहीं कर सके।

हर चीज़ का एक वक़्त है

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर क़ुरआन पाक उतरता रहा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पिछले वाक़िआ़त सुनाते रहे, और ये ख़राब क़िस्म के लोग उस वक़्त भी कहते रहे:

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ○ (پاره– ۷)

"यह तो पुराने लोगों की कहानियाँ हैं"।

और वे लोग कहा करते थे कि तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी मदद काहे को नहीं करता?

उन हज़रात ने कहा कि मदद करने का एक वक़्त है और तुम्हारी पकड़ करने का भी वक़्त है। और अल्लाह ने वह वक़्त हमें बताया नहीं। हाँ! इतना कह दिया है कि:

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ○ (پاره–۲۷)

मजमा तुम्हारा हारेगा, पीठ फेरकर भागेगा।

यह अल्लाह की ख़बर है:

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ○ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ○

وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ○ (پاره– ۲۳)

और पहले हो चुका हमारा हुक्म अपने बन्दों के हक़ में जो कि रसूल हैं। बेशक उन्हीं को मदद दी जाती है। और हमारा लश्कर जो है बेशक वही ग़ालिब है।

अल्लाह के लश्कर वाले लोग

और अल्लाह का लश्कर कौन है? जो अल्लाह को एक माने, बड़ा माने और नबियों के तरीक़े पर चले।

पिछले ज़माने में जिन लोगों ने नबियों की बात मानी वे अल्लाह के लश्कर। और क़ियामत तक जो भी नबियों के तरीक़े पर चलेगा वह अल्लाह का लश्कर होगा। हम नबियों वाला काम करें और ऐसे कामों से बचें जिनके करने वाले अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हुए और गुमराह लोगों के कामों से बचें और उन लोगों के जैसे काम करें जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया। हम उन लोगों में से न बनें जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, और उन लोगों में से न बनें जो

रास्ते से भटक गये। हम उन लोगों में से बन जायें जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया, तो जैसी नबियों के साथ अल्लाह की मदद आई वैसी क़ियामत तक आती रहेगी।

करने के तीन काम

हमें तीन काम करने हैं:

एक उन लोगों में से निकलना जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हैं। दूसरे गुमराह और भटके हुए लोगों से दूर रहना। तीसरे उन लोगों में शामिल होना जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फ़रमाया।

नबियों वाली तरतीब पर तीन चीज़े हैं:

एक तो दीन का सीखना। दूसरे दीन पर चलना और तीसरे दीन के फैलाने की कोशिश करना।

तो जिसने दीन सीखा नहीं और सीखे बग़ैर चला तो उसपर ख़तरा है कि वह कहीं गुमराह न हो जाए।

और एक यह कि दीन को सीख लिया और जान लिया लेकिन वह दीन पर चलता नहीं। इल्म है लेकिन अ़मल नहीं। जानता है लेकिन करता नहीं। तो उसके लिए ख़तरा है कि कहीं वह उन लोगों में शामिल न हो जाये जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ।

कमी और ज़्यादती से बचो

यह ईसाई जो थे उनके अन्दर था 'इफ़रात' (हद से आगे बढ़ना)। और यहूदी जो थे उनके अन्दर थी 'तफ़रीत' (जितना हुक्म है उसमें कमी और कोताही करना)। ईसाइयों ने जो ईसा अ़लैहिस्सलाम को बढ़ाया तो ख़ुदा कह दिया। और यहूदियों ने जो ईसा अ़लैहिस्सलाम को घटाया तो ज़िना की औलाद कह दिया।

ईसा अ़लैहिस्सलाम न तो ख़ुदा हैं और न ख़ुदा के बेटे हैं। यह अल्लाह के महबूब बन्दे और रसूल हैं। और उनकी किसी भी तरह

तौहीन जायज़ नहीं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जानना और न करना यह अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक़ लोगोंवाला रास्ता है, और न जानना और करना, सीखे बिना करना इसमें डर है कि कहीं गुमराह लोगों के रास्ते पर न चला जाये।

सिराते मुस्तक़ीम इख़्तियार करो

और आदमी वह है जो दीन को सीखता भी है और दीन पर चलता भी है। तो अल्लाह से उम्मीद है कि वह उस गिरोह से भी निकल गया जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दार हैं और उस जमाअ़त से भी निकल गया जो गुमराहों की है। अब उसे उस जमाअ़त में दाख़िल होना है जिस पर अल्लाह तआ़ला का इनाम है।

हम दुआ़ माँगते हैं:

اِهْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ (پاره- ١)

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! तू हमें सीधे रास्ते पर चला।

"इहदिना" का तर्जुमा करूँ?

सीधा रास्ता बता ...... चला ...... और पहूँचा।

यह है जामा मस्जिद का रास्ता। यह तो हुआ "बता" और चल मैं चलता हूँ तेरे साथ, और साथ चलने के बाद आख़िर तक पहुँचाया। बता...... चला...... और पहुँचा।

मुजाहदा, हिदायत के लिए क़ानून और नियम

अल्लाह ने कहा कि मैं यह करूँगा, लेकिन किसके साथ? कि जो आदमी खुद भी कोशिश करे। करने वाला तो अल्लाह है लेकिन जितनी कोशिश अल्लाह ने बन्दे को बताई उतनी कोशिश यह करे तो अल्लाह उसे दिखाएँगे, अल्लाह उसे चलाएँगे और उम्मीद है कि अल्लाह उसे पहुँचा भी देंगे। लेकिन शर्त यह है कि जो अल्लाह ने

कहा वह हम करें:

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا. (پاره— ۲۱)

और जिन्होंने मेहनत की हमारे वास्ते हम समझा देंगे उनको अपनी राहें।

देखो! एक है दीन का जानना और एक है दीन पर चलना। दीन को अगर जान लिया और चला तो उम्मीद है कि 'मग़ज़ूब अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) से निकल जाएगा और उम्मीद है कि 'ज़ाल्लीन' (जो जमाअ़त सही रास्ते से गुमराह हुए) से भी निकल जाएगा। और अगर जानता है और चलता नहीं है तो 'मग़ज़ूबि अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) में जाने का डर है।

और अगर चलता तो है दीन पर लेकिन सीखे बग़ैर चलता है तो यह 'ज़ाल्लीन' (गुमराह और राह से भटके हुए लोगों) में चला जाए, इसका डर है।

हर काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर

और एक आदमी जमाअ़तों में फिरा, नमाज़ भी सीखी और तय किया कि पूरी ज़िन्दगी जो गुज़ारूँगा तो नबवी तरीक़े की तहक़ीक़ करके गुज़ारूँगा। औलाद की तरबियत का नबवी तरीक़ा क्या है? इसको सीख लिया। औलाद ज़रा बड़ी हो गई तो फिर क्या करना है? उसकी शादी होने लगी तो क्या करना है? औलाद के लिए कारोबार की तरतीब बनानी है तो उसमें क्या करना है?

ग़रज़ यह कि इनसान पर ज़िन्दगी के जो मर्हले (दौर) आते हैं, उन मर्हलों की वह तहक़ीक़ करे कि उसमें अल्लाह के हुक़ूक़ क्या हैं? और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा क्या है?

तो वह एक तरफ़ जानता भी है और एक तरफ़ चलता भी है, तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि यह 'मग़ज़ूबि अ़लैहिम' (वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ) से निकल जायेगा।

नुबुव्वत का काम बाक़ी है

अब उसे आना है "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी उस जमाअ़त में जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) में। तो एक तीसरा काम और करना पड़ेगा। और वह है दीन की कोशिश करना। क्योंकि नबियों का आना तो अल्लाह ने बन्द कर दिया लेकिन नबियों का काम अल्लाह ने बन्द नहीं किया। नबियों का जो काम था वह आ़म हो गया यहाँ तक कि पढ़ा बे-पढ़ा ग्रेजुएट, मालदार, ग़रीब, काला, गोरा सब के सब नबियों वाला काम करें। यह अल्लाह ने सब के सुपुर्द कर दिया है। अब हमको "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी उस जमाअ़त में जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) में आना है। हम दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! तू हमको सीधे रास्ते पर चला। और सीधा रास्ता किसका है? सीधा रास्ता उनका है जिन पर तूने इनाम किया है। जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है:

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

जिन पर तूने इनाम किया उनके रास्ते पर चला।

इनाम वाले लोग

और इनाम वाले कौन लोग हैं? यह भी अल्लाह ने बता दिया:

فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصَّالِحِيْنَ .(پاره-٥)

जिन पर अल्लाह ने इनाम किया वे चार क़िस्म के लोग हैं: अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन।

नबियों ने हर तरह कोशिश की और दावत का काम किया। सिद्दीक़ नबी तो नहीं होता लेकिन बिल्कुल नबी की तरतीब के ऊपर काम करता है। सिद्दीक़ीन ने भी दावत का काम किया और कोशिश की। और शुहदा तो वे हैं जो दीन का काम करते-करते अपनी जान दे

डालें। "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) वाले रास्ते पर जिसे चलना है उसे दीन की कोशिश करनी है।

और सालिहीन, (नेक लोग) सालिहीन का ऊँचा मुक़ाम यह है कि ख़ुद नेकी करना और दूसरों के अन्दर नेकी का लाना।

وَزَكَرِيَّاوَيَحْيٰ وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ، كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِيْنَ ۝ (پاره-٧)

और हज़रत ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास अ़लैहिमुस्सलाम, ये सारे के सारे सालिहीन में से थे।

जान व माल नबवी तरतीब पर

तो भाई! एक है दीन का सीखना, दूसरा है दीन पर चलना और तीसरा है दीन की कोशिश करना। और यह मुश्किल बिल्कुल नहीं।

यही हमारा सवा पाँच फ़िट का बदन होगा और यही हमारी उम्रें जितनी अल्लाह ने दी होंगी, और यही हमारा पैसा जितना अल्लाह ने दिया वह होगा। बस इसकी तरतीब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर आ जाए। आदमी के पास दो हज़ार है उसकी तरतीब दे दे। पन्द्रह करोड़ है तो उसकी तरतीब दे दे। अब रही उम्र चाहे अल्लाह ने तीस साल दी हो चाहे अस्सी साल दी हो। उम्र के बारे में तो आदमी को मालूम नहीं कि कब पूरी होगी। इसका कुछ पता नहीं। लेकिन इस वक़्त हम जौनसी उम्र में हैं, उम्र के एतिबार से हम नबवी तरतीब पर आ जाएँ। और जितना हमारे पास माल है उस माल के एतिबार से हम नबवी तरतीब पर आ जाएँ।

अल्लाह तआ़ला यह नहीं देखते कि किसने कितना माल लगाया और कितनी जान लगाई, अल्लाह यह देखते हैं कि कितने में से कितना लगाया। बस उसके एतिबार से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मामला होता है।

एक आदमी के पास पाँच सौ रुपये हैं। वह कुल पाँच सौ ले

आया और पैदल जमाअ़त में चार महीने के लिए तैयार हो गया। और दूसरा आदमी करोड़पती है, वह पैंतीस हज़ार रुपये लेकर आया कि मैं आस्ट्रेलिया की जमाअ़त में जाने के लिए तैयार हूँ।

पैंतीस हज़ार वाले की तरफ़ सब की निगाह जाएगी और पाँच सौ रुपये वाले की तरफ़ निगाह नहीं जाएगी। लेकिन अल्लाह का मामला क्या होगा? पाँच सौ रुपये वाला पूरा माल ख़र्च करने वालों में होगा। और यह पैंतीस हज़ार जो लेकर निकला तो हो सकता है कि यह उसके माल का हज़ारवाँ हिस्सा हो। एक आदमी के पास चार लाख हैं और एक आदमी के पास एक लाख हैं। चार लाख के अन्दर एक लाख लगा दिया। और एक लाख वाले ने एक का एक लगा दिया तो एक लाख लगाने वाले को जो जन्नत मिलेगी वह उससे चार गुना ज़्यादा मिलेगी। क्योंकि उसने पूरा लगाया और इसने चौथाई लगाया।

सिद्दीक़ के लिए हैं ख़ुदा व रसूल बस!

ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपना पूरा माल लाए वह छोटी-सी गठरी बनी। और हज़रत उमर फ़ारूक़ अपना आधा माल लाए फिर भी वह बहुत बड़ा गट्ठर बना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु समझे कि आज मैं हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सवाब में आगे निकल जाऊँगा।

हज़रत सिद्दक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने छोटी-सी गठरी पेश की और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बहुत बड़ा गट्ठर पेश किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह नहीं पूछा कि तुम लाए कितना? इसलिए कि वह तो सामने है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा कि तुमने घर में कितना छोड़ा? उन्होंने कहा कि घर इतना ही छोड़कर आया हूँ। आधा लाया हूँ और आधा घर पर है। और सिद्दके अकबर से पूछा कि तुमने घर कितना छोड़ा? बोले मैं अल्लाह व रसूल का नाम छोड़कर आया हूँ। तो छोटी गठरी वाले का सवाब बड़े गट्ठर

से बढ़ गया। क्योंकि यह पूरा है।

सब के लिए अवसर

अब हमारा यह मालदार तबक़ा जो होगा वह कहेगा कि यह मौलवी साहिब जो हैं वह ग़रीबों की बड़ी हिमायत कर रहे हैं। उनके तो पाँच सौ पर भी ज़्यादा सवाब और हम पैंतीस हज़ार ख़र्च करें तो भी कम सवाब।

लेकिन भाई! जान लगाने में मालदार ग़रीबों से बढ़ेगा। यह ग़रीब आदमी अगर पच्चीस मील पैदल चले तो यह उसकी आ़दत है। वह मेहनत का आ़दी है। लेकिन मालदार आदमी जो घंटी बजाता है तो उसके दस आदमी काम करने वाले आते हैं। उसने कभी थैली भी हाथ में नहीं उठाई तो यह मालदार आदमी अगर एक मुख़्तसर-सा बिस्तर लेकर एक मस्जिद से दूसरी मस्जिद तक जाए तो उम्मीद है कि उसको पच्चीस मील पैदल चलने से ज़्यादा सवाब अल्लाह देंगे। तो क़ियामत के दिन सेठ लोग जो हैं, उनको जान लगाने का ज़्यादा सवाब मिलेगा।

और माल लगाने के अन्दर उम्मीद है कि ग़रीबों को ज़्यादा सवाब मिलेगा। इसलिए के उनके पास थोड़ा माल है। उस थोड़े में से लेकर वे चलते हैं।

तीन चीज़ें

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक तो है दीन का जानना और एक है दीन पर चलना, और एक है दीन की कोशिश करना। ये तीन चीज़ें अगर आ गईं तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि हम सीधे रास्ते पर आ गए। "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (यानी वह जमाअ़त जिस पर अल्लाह तआ़ला ने अपना इनाम फ़रमाया है) वाले रास्ते पर और अल्लाह तक पहुँचाने वाले रास्ते पर और अल्लाह की मददों को लाने वाले रास्ते पर।

लेकिन मैं फिर याद दिला दूँ कि वे मददें हैं छुपी हुई। और वह

आदमी जो टेढ़े रास्ते पर चल रहा है और उसके आमाल ख़राब हैं उसके ऊपर अल्लाह की तरफ़ से परेशानियाँ आने वाली हैं, वे भी छुपी हुई हैं।

वह इसका मज़ाक़ उड़ाएगा। तेरह साल तक मज़ाक़ उड़ा लेकिन दीन की बात बदली नहीं।

मस्जिद और बाज़ार की आवाज़ का फ़र्क़

भाई! मस्जिद वालों की बात बदला नहीं करती। बदर की लड़ाई के अन्दर ख़ूब मुजाहदा आया लेकिन बात वही। "अल्लाह बड़े" फिर मदद आई, फिर वही अल्लाह बड़े।

अ़सर के बाद का बयान आपने सुना होगा कि बूढ़े कहते "हमारी तदबीरों से जीते" जवान कहते "हमारी मेहनत से जीते" और अल्लाह कहता है कि न तो बूढ़ों की तदबीर, न जवानों की मेहनत बल्कि "हमारी मदद से जीते" अब यह माल में जहाँ कहूँग वहाँ लगेगा।

तो भाई! मदद आई तो भी "अल्लाहु अक्बर" और अगर कोई मुजाहदा आया तो भी "अल्लाहु अक्बर" ख़न्दक़ के अन्दर मुजाहदा आया तो भी अल्लाहु अक्बर। हर जगह अल्लाह ही बड़े। चाहे कितनी तकलीफ़ आ जाए अल्लाह ही बड़े।

यह मस्जिद वाली आवाज़ नहीं बदलती। बाज़ार की आवाज़ बदलती रहती है।

ख़रीदार दुकानदार से कहता है "ले पैसे और ला चीज़ें" मेरे पैसों से मेरा काम नहीं बनता, तेरी चीज़ों से मेरा काम बनेगा। ले पैसे और ला चीज़ें।

और दुकानदार की आवाज़ क्या है? चीज़ों से मेरा काम नहीं बनता है, तेरे पैसों से मेरा काम बनता है। पैसे दे चीज़ ले।

ख़रीदार की आवाज़ अलग, बेचने वाले की आवाज़ अलग, शाम तक ये आवाज़ें चलती रहती हैं। अब यह छोटे दुकानदार का माल

सारा बिक गया और पैसे आ गए। अब यह पैसे लेकर बड़े दुकानदार, थोक विक्रेताओं के पास गया। सुबह से शाम तक तो उसकी यह आवाज़ थी कि मेरे सामान से नहीं होता है। अब यह कहता है कि पैसे मेरे पास हैं। इससे मेरा काम नहीं बनता। तेरे पास जो सामान है उससे काम बनता है।

"ला सामान, ले पैसे"

सुबह को कुछ आवाज़ शाम को कुछ आवाज़, ख़रीदार की अलग आवाज़, बेचने वाले की अलग आवाज़।

ये जितने बाज़ारी लोग होते हैं ना! मुल्क और माल वाले, रुपये और पैसे वाले, सोना और चाँदी वाले, दुकान और खेत वाले, ओहदा और डिग्री वाले, इनकी आवाज़ें बदलती रहती हैं। इनकी बातें बदलती रहती हैं। लेकिन मस्जिद वाली जो आवाज़ है "अल्लाहु अक्बर" यह नहीं बदलती। चाहे जितनी परेशानी व तकलीफ़ आ जाए लेकिन ज़बान पर अल्लाहु अक्बर, अल्लाह बड़े हैं।

पालने वाले अल्लाह हैं, इसका यक़ीन ज़रूरी

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) पर चलने के लिए ज़ेहन बनना ज़रूरी है। और सबसे पहला ज़ेहन क्या बनेगा?

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए साबित हैं जो सारे जहानों का रब है और सब की ज़रूरतें पूरी करने वाला है।

'आलमे अरवाह' (रूहों की दुनिया) के अन्दर तो सबने कह दिया कि "ऐ अल्लाह! तू ही रब है"। क़ियामत का दिन आएगा तो सारे मुश्रिक व काफ़िर भी कहेंगे ऐ अल्लाह! तू ही हमारा रब है"। जैसे मैंने "रब्बना अब्सर्ना" वाली आयत आप हज़रात को सुनाई।

तो पिछली लाईन बिल्कुल साफ़ (स्पष्ट) है, अल्लाह रब है।

अब यह बीच की लाईन है दुनिया की ज़िन्दगी। बस यह लाईन भी हो जाए वाज़ेह (स्पष्ट) और पिछली कड़ी पिछली कड़ी से मिल जाए और अगली कड़ी अगली कड़ी से, तो बिल्कुल सिराते मुस्तक़ीम हो गया। इस दुनिया की ज़िन्दगी में लाईन वाज़ेह (स्पष्ट) करना बहुत ज़रूरी है।

पिछली लाईन बिल्कुल स्पष्ट। सारे लोग ही कहेंगे अल्लाह रब है। लेकिन असल मसला जो है वह इस दुनिया की ज़िन्दगी का है। इसके अन्दर आदमी कह दे कि अल्लाह रब है।

अल्लाह तआ़ला बार-बार याद दिलाते हैं:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का)।

करता-धरता अल्लाह है, वह तो दिखाई नहीं देता। दिखाई क्या देता है? कारोबार के चलने से मेरी ज़रूरतें पूरी हुईं, यह दिखाई दिया और यक़ीन बना, वह जो लाईन 'सिराते मुस्तक़ीम' (सीधे रास्ते) की स्पष्ट थी वह अब गड़बड़ हो गई। अगर आदमी के दिल के अन्दर यह बात आ गई कि मेरी ज़रूरतें पैसों से पूरी होती हैं और पैसे मेरे को कारोबार से मिलते हैं। अगर यह बात ज़ेहन में आ गई तो वह लाईन हट गई। अब यह सीधे रास्ते पर नहीं रहा। इसलिए बार-बार मुज़ाकरे की चीज़ है।

ज़रा सोचो

बेशक आपने होटल के अन्दर जाकर दस रुपये में खाना खाया। लेकिन होटल में जो आपने दिल चाहा खाया उसके बारे में ज़रा सोचो कि वह किस तरह आप तक पहुँचा। उसके अन्दर पूरा निज़ाम (सिस्टम) इस्तेमाल हुआ। बादलों का, सूरज का, चाँद का, सितारों का, ज़मीन का, आसमान का और उसमें करोड़ों-करोड़ आदमी हज़ारों साल

तक इस्तेमाल होते रहे। इस तरह चलते-चलते वह चावल आपके पेट में पहुँचा।

आपने जो सालन खाया उसके अन्दर मिर्च कहाँ से आई? उसकी भी नस्ल चली, नमक कहाँ से आया? तेल कहाँ से आया? जिस जानवर का आपने गोश्त खाया उसकी भी हज़ारों साल से नस्ल चली, नर मादा मिले, औलाद हुई। फिर नर मादा मिले फिर औलाद। इस तरह यह बोटी आपके हलक़ में गई। आपने कचूमर खाया। सिरका खाया तो यह सारा लम्बा-चौड़ा काम दस रुपये के अन्दर नहीं हो सकता।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَo

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का)।

ज़रूरतों को पूरी करने वाला अल्लाह है।

यह जो हमने कपड़े पहने, इसके अन्दर जो धागा इस्तेमाल हुआ वह रूई से बना, और रूई की भी हज़ारों साल से नस्ल चली। अगर इस तरह हम ग़ौर करते रहें तो हक़ीक़त खुलती चली जाएगी कि ज़रूरतों का पूरा करना यह अल्लाह का काम है। दस रुपये से हमारी ज़रूरत हरगिज़ न पूरी होती। यह अल्लाह ने करम फ़रमा दिया और दस रुपये में ज़रूरत पूरी कर दी। करने वाला अल्लाह है।

जिस्म के एक-एक अंग की अहमियत

फिर देखो कि अल्लाह तआला ने कितनी बड़ी-बड़ी ज़रूरतें पूरी कीं। आँखें दीं। कान दिये। ज़बान दी। हाथ दिये। पैर दिये। अक़्ल दी। दमाग़ दिया। ये सारी चीज़ें हमारी ज़रूरत की हैं।

इसके अन्दर से एक चीज़ भी अगर फ़ेल हो जाए तो देखिए आदमी कितना परेशान होगा। अगर आँख फ़ेल हो गई तो...... हम पर यह दौर गुज़र चुका। बिल्कुल नहीं दिखाई देता था। अब जो

दिखाई देता है तो हम यही कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरा करम हुआ कि छह महीने के अन्दर तूने दोनों आँखों का ऑप्रेशन कराकर रोशनी वापस कर दी। और कितने लोगों के बारे में तो हमने सुना कि बड़े से बड़े डॉक्टर ने आँख का ऑप्रेशन किया लेकिन फ़ेल हो गए।

इसी तरह हमारे कान हैं, ज़बान है, गुर्दा है। गुर्दे का काम अगर ख़त्म हो जाए तो आदमी का ज़िन्दा रहना मुश्किल है। रोज़ाना कई-कई सौ रुपये ख़र्च करो तब जाकर बाहर से वह चीज़ डॉक्टर डालते हैं जो गुर्दे से बनती है, और वह भी ज़्यादा दिनों तक नहीं चलती। आख़िर आदमी की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है।

फिर हमारे हाथ हैं, पैर हैं, जिसका हाथ कटा हुआ हो, देखिए उसको कितनी उलझनें होती हैं।

तो अल्लाह हमारी ये सारी ज़रूरतें पूरी करते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का)।

अल्लाह बेनियाज़ है

और उन ज़रूरतों के पूरा करने में अल्लाह तआ़ला की कोई ग़रज़ नहीं।

दुनिया के अन्दर अगर कारख़ाने वाला मज़दूर को पैसे देता है तो वह अपना काम लेता है। और मज़दूर अगर कारख़ाने में काम करता है तो उसकी ग़रज़ यह होती है कि मेरे को पैसा मिलेगा। बड़ी हुकूमत अगर छोटी हुकूमत की मदद करती है तो बाद में अपना कोई मतलब निकालती है। आ़म तौर पर दुनिया में ऐसा ही है कि कोई आदमी अगर किसी का काम करता है तो उसमें कोई मतलब ज़रूर छुपा होता है। और अल्लाह तआ़ला सब की ज़रूरतें पूरी करते हैं। इनसानों की भी जानवरों की भी, हमको दुकान दे दी। लेकिन जानवरों के पास तो

कोई कारोबार नहीं। अल्लाह उनकी भी ज़रूरतें पूरी करते हैं। और यह ज़रूरतों का पूरा फ़रमाना, यह अल्लाह की मेहरबानी ही मेहरबानी है। "अर्रह्मानिर्रहीम"।

मेरे बन्दे भूलना मत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَo

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन" (तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिए हैं जो पालने वाला है तमाम जहानों का) के अन्दर तो यह बताया कि ज़रूरतें अल्लाह ही पूरी करते हैं। बार-बार अल्लाह याद दिलाते हैं, मेरे बन्दे भूलना मत! इसलिए कि तू जाएगा दुकान पर, फिर तेरा ज़ेहन बनेगा कि पैसों से मेरा काम बनता है, और चीज़ों से मेरा काम बनता है।

मेरे प्यारे बन्दे देख! तेरे को बार-बार याद दिलाता हूँ। "आलमे अर्वाह" में तू कह चुका है, क़ियामत में भी तू कहेगा। आज कह! तेरा आज का कहना मोतबर होगा। और दिल से कहना मोतबर होगा सिर्फ़ ज़बान से कहना मोतबर नहीं। ईमान उस वक़्त बनेगा जब तू दिल से कहेगा। तो आप मस्जिद के अन्दर ज़बान से सीखें और दिल के अन्दर उतारें। "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन" ज़रूरतों को पूरी करने वाले अल्लाह हैं। हमारी ज़रूरतें, हमारी औरतों की ज़रूरतें, हमारे बच्चों की ज़रूरतें, सब की ज़रूरतें अल्लाह तआ़ला ग़ैब से पूरी फ़रमाते हैं।

छोटी सी बच्ची है, साल डेढ़ साल की। जब आप उसको लुक़्मा दोगे तो वह मुँह सामने करेगी। कान नहीं करेगी। इतनी सूझ-बूझ अल्लाह ने उसको भी दी। तो ज़रूरतों को पूरी करने वाले अल्लाह हैं। "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन"।

मेहरबानी ही मेहरबानी

और यह जो ज़रूरतें अल्लाह पूरी करते हैं:

اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

उनकी मेहरबानी ही मेहरबानी है।

अल्लाह को किसी से कोई ग़रज़ नहीं है। "अल्लाहुस्समदु" (अल्लाह बेनियाज़ है) अल्लाह बे-ग़रज़ है। लेकिन जब अल्लाह हमारी ज़रूरतें अपनी मेहरबानी से पूरी कर रहे हैं, और यह सारा ज़मीन व आसमान बनाया ताकि उसको देखकर अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) मिले। ईमान आए और हमारे अन्दर यह बात आ जाए कि जो इतना बड़ा ज़रूरतों को पूरा करने वाला है, हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिए।

खुदा का शुक्र क्या है?

और उसका शुक्र यह है कि यह जो बदन सवा पाँच फ़िट का है, इसको हम अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल करें। यह उसका शुक्र है।

दो क़िस्म के लोग और उनका अन्जाम

अब दो क़िस्में इनसान की हो गईं। एक तो शुक्रगुज़ार और एक नाशुक्रे। शुक्रगुज़ार तो इस बदन को अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल करें। अल्लाह की ग़ैबी ताईद उनके शामिले हाल होगी। और जिन्होंने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ बदन को इस्तेमाल नहीं किया उन्होंने नाशुक्री की और नेमत की नाशुक्री की। तो फिर उनके लिए अल्लाह की पकड़ होगी। उसका आख़िरी और फ़ाईनल जो फ़ैसला होगा वह क़ियामत के दिन होगा।

क़ियामत के दिन दो ग्रुप हो जाएँगे:

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ○ (پاره– ٢٣)

ऐ मुज्रिमो! अलग हो जाओ।

और जो ईमान वाले होंगे, उनसे फ़रिश्ते कहेंगे:

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتّٰى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ٥

(پاره-٢٤)

जो अल्लाह से डरने वाले और अपने परवर्दिगार से डरने वाले हैं, उनकी जमाअतें बन-बनकर जन्नत की तरफ़ चलेंगी। और जन्नत के दरवाज़े पहले से उन्हें खुले मिलेंगे और पहरेदार फ़रिश्ते यूँ कहेंगे:

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خَالِدِيْنَ ٥ (پاره- ٢٤)

सलाम पहुँचे तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा हो। सो दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा-हमेश रहने के लिए।

जन्नत में रात नहीं आएगी

नींद तो पूरी हो जाएगी क़ब्र के अन्दर, नाश्ता मिलेगा अ़र्श के साए के नीचे, पानी मिलेगा हौज़े-कौसर का। और दोपहर का खाना मिलेगा जन्नत में, और रात वहाँ आएगी नहीं। अब हमेशा के लिए मज़े उड़ाओ क्योंकि तुमने अल्लाह को रब माना। अल्लाह ज़रूरतें पूरी करते थे वह तुमने अल्लाह की मेहरबानी समझी। और ज़मीन व आसमान देखकर तुमने अल्लाह को पहचाना। हर हाल में तुमने अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपने बदन को तुमने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ٥

ऐ अल्लाह! जब आप हमारी ज़रूरतों को पूरी करते हैं और मेहरबानी के तौर पर पूरी करते हैं और आपकी कोई ग़रज़ नहीं और क़ियामत के दिन आप शुक्रगुज़ार और नाशुक्रे दोनों की लाईनें अलग-अलग कर देंगे, और फिर आख़िरी फ़ैसला होगा। इस बिना पर ऐ मेरे महबूब अल्लाह! मैं तेरी ही इबादत करता हूँ और तुझ ही से

मदद माँगता हूँ

अल्लाह की मानो और उसी से माँगो

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही मानते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं। मानेंगे तो सिर्फ़ तेरी, और माँगेंगे तो सिर्फ़ तुझसे।

हाँ! अगर तूने इजाज़त दी दूसरे से माँगने की तो वह भी तेरे ही से माँगना हुआ। तूने कहा कि नबी की बात मानो, तो तेरी ही बात का मानना हुआ। तूने कह दिया कि सहाबा के पीछे चलो तो भी तेरी ही बात माननी हुई। तूने कह दिया कि अपने ज़माने के अल्लाह वालों के कहने के मुताबिक़ चलो:

وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ .(پاره-۲۱)

और पैरवी करो उसकी जो मेरी तरफ़ रुजू हो।

तो यह भी तेरा ही मानना हुआ। तेरी ही मानते हैं और तुझ ही से माँगते हैं।

"इय्या-क नअ़्बुदु" के क्या मायने हैं?

अल्लाह जो कह दे हम वह करें।

और "इय्या-क नस्तअ़ीनु" के क्या मायने हैं?

हम जो कह दें अल्लाह वह कर दे।

"हय्-य अ़लस्सलाति" के क्या मायने हैं?

अल्लाह जो कह दे हम वह कर दें।

"हय्-य अ़लल् फ़लाहि" के क्या मायने हैं?

हम जो कह दें वह अल्लाह कर दे।

नज़र बन्दे की मस्लेहत पर

हम जो कहेंगे अल्लाह वह करेगा शर्त यह है कि जब वह हमारी मस्लेहत के मुनासिब हो। और अगर हम ने वह कह दिया जो हमारी मस्लेहत के मुनासिब नहीं तो अल्लाह वह करेगा जो हमारी मस्लेहत के

मुनासिब होगा।

तो यह भी अल्लाह का करम है कि हम जो माँगें बिल्कुल वही नहीं देते। बल्कि वह देते हैं जो हमारी मस्लेहत के मुनासिब होता है।

अल्लाह ने माँगना भी सिखाया

अल्लाह तआ़ला ने हमको सिखा दिया कि जो तुम अल्लाह से मदद माँगोगे तो क्या माँगोगे?

अगर इनसान के हवाले हो जाता तो न मालूम कोई क्या माँगता, कोई क्या माँगता, छोटी-छोटी चीज़ें माँग लेते। कोई कहता मेरा पानी मीठा हो जाए। कोई कहता मेरे लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं, लड़का हो जाए। कोई कहता मुझे यहाँ पहुँचा दीजिए कोई कहता वहाँ पहुँचा दीजिए। कोई कुछ कोई कुछ। लेकिन अल्लाह ने इसको भी ज़िक्र किया और माँगना भी हमें सिखाया:

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ○

ऐ अल्लाह! हमें सीधा रास्त बता, उस पर चला और पहुँचा। वह सीधा रास्ता किसका?

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया।

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ○

जिन पर न तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और जो न रास्ता भटके। नबियों वाला रास्ता।

और फिर अल्लाह की कितनी मेहरबानियाँ, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़बर दी कि जब बन्दा कहता है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।

तो अल्लाह जवाब देता है:

حَمِدَنِیْ عَبْدِیْ

मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ की।
जब बन्दा कहता है:

اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

अर्रह्मानिर्रहीम
तो अल्लाह जवाब देता है:

اَثْنٰی عَلَیَّ عَبْدِیْ

मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ व प्रशंसा की।
बन्दा कहता है:

مَالِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ ٥

मालिकि यौमिद्दीन।
तो अल्लाह उसका जवाब देते हैं:

مَجَّدَنِیْ عَبْدِیْ

मेरे बन्दे ने मेरी बुज़ुर्गी बयान की।
और फिर जब बन्दा कहता है:

اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ٥

इय्या-क नअ़्बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन।

ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

तो अल्लाह कहते हैं, इसमें तो मेरी भी है और तेरी भी। इबादत तो मेरी और मदद तेरी। शुरू की तीन आयतें उसके अन्दर तूने मेरी ही तारीफ़ की। और "इय्या-क नअ़्बुदु" में इबादत तो मेरी और "व इय्या-क नस्तअ़ीनु" में मदद तेरी।

तो ये साढ़े तीन आयतें तो मेरी और अगली साढ़े तीन आयतें जो हैं: "व इय्या-क नस्तओनु" से लेकर आख़िर तक की, तो ये मेरे बन्दे की।

नमाज़ की तरह नमाज़ के बाहर भी हमारा बदन अलाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल हो

तो अब इस ध्यान से जब नमाज़ पढ़ेंगे तो हमें नमाज़ के अन्दर कितना मज़ा आएगा। मैं कहता हूँ कि दुनिया की किसी चीज़ के अन्दर वह लुत्फ़ और मज़ा नहीं है जो नमाज़ के अन्दर है।

जैसे हमने अपने बदन को नमाज़ में अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल किया तो जब हम नमाज़ से बाहर जाएँ तो वहाँ पर भी अल्लाह के बन्दे हैं। कारोबार के अन्दर और घर के अन्दर भी हमारा बदन अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल हो। और फिर दूसरों के अन्दर भी यह बात लाई जाए। ताकि उनका बदन भी अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल हो।

अल्लाह की बड़ाई बयान करके अल्लाह की ताक़त से डराओ

قُمْ فَاَنْذِرْ، وَرَبَّکَ فَکَبِّرْ (پارہ-۲۹)

देखो भाई! अल्लाह की मानो और अल्लाह से डरो। अल्लाह बहुत बड़े हैं। लेकिन न मानने वाले कहते हैं कि काहे को डरें? आप कहिए कि देखो पहले जो लोग नहीं डरे उनके साथ क्या हुअ? वह तुम्हारे साथ भी होगा। इसलिए उन्हें अल्लाह से डराओ।

जैसे पिस्तौल हो पिस्तौल से डराओ। यूँ नाली करके यानी पिस्तौल छोड़ो नहीं, बस डराओ।

अल्लाह की पकड़ गोया पिस्तौल से गोली छूट गई

लेकिन जब लोग नहीं डरे तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने जिन बातों से उन्हें डराया था वह बात उनके सामने ले आए और पिस्तौल की गोली छोड़ दी। पानी की शक्ल में, हवा की शक्ल में, लंगड़े मच्छर की शक्ल में और छोटे परिन्दों की शक्ल में। इस तरह अल्लाह तआला ने अनोखे तरीक़े से उनकी पकड़ की।

कारतूस की जगह बन्दूक़ है, न कि रूमाल और प्याला

देखो एक बात सुन लो! कारतूस से शेर तो मरता है मगर वह कब मरेगा? जब कारतूस अपनी जगह पर हो। और कारतूस की जगह क्या है? बन्दूक़। बन्दूक़ के अन्दर कारतूस हो तो शेर मरेगा। और अगर कारतूस को आपने ले लिया रूमाल में और यूँ ही डाल दिया तो इन्शा-अल्लाह बिल्ली भी नहीं मरेगी।

यह दुनिया में जो सारे ख़राब क़िस्म के लोग उछल-कूद कर रहे हैं। इसकी वजह यह है कि कारतूस को रूमाल में लेकर या प्याले में लेकर डाला जा रहा है और समझ रहे हैं कि अल्लाह की मदद आएगी जिस तरह पहले अल्लाह की मदद आती थी।

पूरे बदन का कुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल कारतूस का पिस्तौल में आना है

लेकिन यह नहीं देखते कि जो अल्लाह की मदद आती थी यह उस वक़्त होता था जब यह सवा पाँच फ़िट की बन्दूक़ और पिस्तौल अल्लाह के कहने के मुताबिक़ इस्तेमाल होता था।

इस सवा पाँच फ़िट की बन्दूक़ में आँख है। तो कुरआन ने जो बात आँख के बारे में कही वह आँख के अन्दर दाख़िल हो। पैर के बारे में जो बात कही वह पैर में दाख़िल हो। इसी तरह जब पूरे बदन

में कुरआन व हदीस वाली बात दाख़िल हो जाएगी तो यह समझो कि कारतूस जो है वह पिस्तौल में आ गया और बन्दूक़ में आ गया।

और अगर कुरआन में तो है हदीस में भी है, किताबों में भी है, तक़रीरों में भी है लेकिन बदन के अन्दर जारी नहीं हुआ तो यह समझो कि कारतूस पिस्तौल के अन्दर और बन्दूक़ के अन्दर नहीं आया। ऐसे कारतूस से बिल्ली भी नहीं मरती।

आप बिल्ली को मार रहे हैं। बिल्ली मज़ाक़ उड़ा रही है। कुत्ते भी मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। शेर भी मज़ाक़ उड़ा रहा है। तुम कहते हो अल्लाहु अक्बर। अल्लाह बहुत बड़े हैं उससे डरो, वह कह रहे हैं कि देखो कुछ नहीं किया तुम्हारे अल्लाह ने तेरह साल से।

इसके बाद फिर बदर की लड़ाई के अन्दर वह कारतूस छूटा। और उसमें उनके सत्तर बड़े-बड़े चौधरियों का ऑप्रेशन हुआ। और जब उनके ज़हरीले फोड़ों का ऑप्रेशन हुआ तो दूसरे लोग जो थे वह कहने लगे कि यह अल्लाह बड़ा अल्लाह बड़ा कहते थे। दखो इनके साथ अल्लाह की मदद आई। भाई चलो! हम भी अल्लाह को मानें। जो अल्लाह ऐसे कमज़ोरों की मदद करता है हम भी उस अल्लाह को मानें।

अब अबू सुफ़ियान भी अल्लाह को मानने पर आ गए। अबू जहल का बेटा भी आ गया। अबू जहल का भाई भी आ गया। ये सारे ही अल्लाह के मानने पर आ गए।

दुआ और मेहनत में जोड़ ज़रूरी

हम रोज़ मस्जिद में "इहदिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम" की दुआ माँग रहे हैं लेकिन जब घर में जाते हैं, कारोबार में जाते हैं तो नबियों के दुश्मनों का तरीक़ा इख़्तियार करते हैं।

भाई दुआ और मेहनत के अन्दर जोड़ होना चाहिए। आज जो पूरी दुनिया में मुसलमान परेशानियों में मुब्तला हैं, उसकी वजह यह है

कि दुआ उसकी एक लाईन पर जा रही है और मेहनत दूसरी लाईन पर जा रही है।

दुआ माँग रहा है यह नबियों वाली, और जब मस्जिद से बाहर निकला तो मेहनत कर रहा है नबियों के दुश्मनों वाली।

भाई देखो! जैसी दुआ माँगे, उसी के मुताबिक़ मेहनत हो। दुआ माँगे कि ऐ अल्लाह! मेरे को औलाद दे, तो उसे शादी भी करनी चाहिए। दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह! खेती में बरकत दे, तो उसे खेत में हल भी चलाना चाहिए।

दुआ माँगी, अल्लाह औलाद दे और शादी करता नहीं, दुआ माँगी कि खेती में बरकत दे और खेती करता नहीं।

जाना है मुम्बई और सवार हुए कोलकाता की रेल पर

इसको एक मिसाल से समझो। एक आदमी को मुम्बई जाना है और मुम्बई की ट्रेन खचाखच भरी हुई है। सामने एक दूसरी रेल ख़ाली मिल गई उसमें बैठ गया। वह थी कोलकाता वाली। और उसमें बैठकर दुआ माँगनी शुरू की कि ऐ अल्लाह! मेरा खाना हलाल का, मेरा कपड़ा हलाल का और मैं तब्लीग़ में भी लगा हुआ हूँ। दुआ की क़बूलियत की सारी शर्तें मेरे अन्दर पाई जा रही हैं। और ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ माँग रहा है। कि ऐ अल्लाह! मेरे को ख़ैरियत के साथ मुम्बई पहुँचा दे और खुद दुआ माँगने के साथ-साथ सऊदी भी फ़ोन करा दिया वहाँ इसके लोग बैतुल्लाह शरीफ़ में और मस्जिदे नबवी में भी दुआ माँग रहे हैं और पूरे आलम के सारे औलिया-अल्लाह को फ़ोन करा दिए कि मैं ख़ैरियत के साथ मुम्बई पहुँच जाऊँ।

बैठा है कोलकाता की रेल में और दुआ माँगी जा रही है मुम्बई पहुँचने की। मस्जिद में आकर दुआ माँगता है नबियों वाली और बाज़ार में जाकर मेहनत करता है नबियों के दुश्मनों वाली। तो दुआ में

और मेहनत में टक्कर हो गई। तौले भर की ज़बान तो हिल रही है मुम्बई के लिए और ढाई मन का बदन हिल रहा है कोलकाता के लिए।

मस्जिद में तौले भर की ज़बान हिल रही है नबियों वाली दुआ के लिए, और जब मस्जिद से बाहर जाता है तो ढाई मन का बदन जो हिल रहा है वह उन लोगों वाले रास्ते पर है जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और जो लोग गुमराह हुए। तो दुआ और मेहनत में मुताबक़त (जोड़) नहीं रही। इसलिए हम यह कहते हैं कि जो दुआ मस्जिद में आकर ज़बान से माँगी जाती है, वैसी ही मेहनत मस्जिद से बाहर जाकर भी हो।

चारों तरफ़ से दुआएँ हो गईं लेकिन जब ट्रेन पहुँचेगी तो इन्शा-अल्लाह कोलकाता पहुँचेगी, मुम्बई नहीं।

रोज़ाना करोड़ों मुसलमान नबियों वाली लाईन की दुआ माँग रहे हैं "इहदिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम" (ऐ अल्लाह! हमको सीधे रास्ते पर चला) लेकिन अल्लाह कहता है कि मैं तुझे सीधा रास्ता दिखाऊँगा, चलाऊँगा पहुँचाऊँगा लेकिन तू मेहनत भी तो नबियों वाली कर।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (پاره–٢١)

जब तू चलना शुरू कर देगा तो तेरा रास्ता खुलता रहेगा। यहाँ से खड़े-खड़े देख रहा है तो रास्ता तो तुझे बन्द दिखाई देगा। बस तू चलता रह, तेरा रास्ता खुलता जाएगा।

चार महीने मश्क़ के लिए

अब तुम कहोगे कि भाई फिर कारोबार और घर छोड़ दें? नहीं! बिल्कुल नहीं! बस चार महीने देकर अपने बदन को क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल करने की मश्क़ कर लो, तो इन्शा-अल्लाह यह कारतूस जो है वह पिस्तौल के अन्दर और बन्दूक़ के अन्दर आ जाएगा।

कुरआन के अन्दर अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ ، (پاره–١٩)

मुसलमानों से कहो कि अपनी नज़रें नीची रखें।

आदमी नज़रें नीची करने वाला बन गया तो कुरआन की आयत उसकी आँख के अन्दर आ गई।

पैरों के बारे में अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا (پاره– ١٩)

ज़मीन पर तवाज़ो और आ़जिज़ी के साथ चलते हैं।

लो भाई! कुरआन की आयत का असर उसके पैर में भी आ गया।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला कहते हैं:

يَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (پاره– ٤)

ग़ौर करते हैं ज़मीन व आसमान की पैदाईश में।

तो गोया कुरआन की आयत उसके दिमाग़ के अन्दर आ गई।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला तक़्वा व तवक्कुल के बारे में भी कुरआन में फ़रमाते हैं:

"और तक़्वा व तवक्कुल की जगह है दिल"।

तो गोया उसके दिल के अन्दर भी कुरआन की आयत आ गई।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! बदन के तमाम अंग कुरआन व हदीस के मुताबिक़ इस्तेमाल हों, इसके लिए अपने वक़्त को फ़ारिग़ करें और चार महीने अल्लाह के रास्ते में लगाएँ।

तक़रीर (3)

विदोशों के लिए जमाअ़तों की तश्कील के सिलसिले में 8 फ़रवरी 1993 ई० को बंगलौर के इज्तिमा का ख़िताब

नबी करीम के बाद नुबुव्वत के काम को नुबुव्वत के अन्दाज़ पर करना, यह है ख़िलाफ़त यानी अल्लाह का ख़लीफ़ा होना। और यह ख़िलाफ़त वाला रास्ता जो अल्लाह पाक ने ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़रिये बताया क़ियामत तक आने वाला जितना दौर होगा उसके अन्दर तेईस साल का नबी पाक का दौर, फिर ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर और उसके बाद जब तक सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन एक भी दुनिया के अन्दर रहे, उनकी ज़िन्दगी क़ियामत तक के लिए नमूना है।

इसी तक़रीर का एक हिस्सा

तक़रीर (3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

ज़िन्दगी गुज़ारने के दो रास्ते

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो!

दुनिया के अन्दर ज़िन्दगी बसर करने के दो रास्ते हैं। एक रास्ता तो है सीधा और दूसरा रास्ता टेढ़ा है।

सीधा रास्ता अल्लाह की रज़ामन्दी को पहुँचाता है। सीधे रास्ते पर चलने वाले पर दुनिया के अन्दर इम्तिहान पेश आते हैं, आज़माईशें पेश आती हैं और अल्लाह पाक की मदद भी आती है।

साथ ही सीधे रास्ते पर चलने वाले के अन्दर रूहानी ताक़त बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है। यह अन्दर ही अन्दर बढ़ती रहती है। दूसरे को दिखाई नहीं देती। यहाँ तक कि जो टेढ़े रास्ते पर चलने वाले हैं, उन्हें भी वह दिखाई नहीं देती। बल्कि वे यह समझते हैं कि वह भी यूँ ही है। और टेढ़े रास्ते पर जो चलता है वह ख़ुदा की नाराज़गी वाले रास्ते पर चलता है और वह आदमी ख़ुदा से दूर होता जाता है।

आ़म तौर से टेढ़े वाले रास्ते पर चलने वाले की ज़िन्दगी आज़ाद होती है। जी चाही, मन चाही, मनमानी, दुनिया-तलबी और ख़ुदगर्ज़ी वाली होती है।

दुनिया ही में जहन्नम का मन्ज़र

टेढ़े रास्ते पर चलने वाले हर आदमी का ज़ेहन यह होता है कि अपना जज़्बा पूरा हो जाए और हर आदमी जब अपना जज़्बा पूरा करने पर आता है तो उसे इसकी फ़िक्र नहीं होती कि उससे दूसरे आदमी का जज़्बा पूरा हुआ या टूटा, इस तरह वह अपना जज़्बा पूरा करने के लिए बहुत-सों के जज़्बों को तोड़ता है। अब जिनके जज़्बे टूटे हैं वे भी इसी ख़्याल के हैं। वे भी अपना जज़्बा पूरा करने पर तुले हुए हैं इसलिए बाज़ मौक़े ऐसे आते हैं कि बहुतों के जज़्बे टूटने के बाद एक जज़्बा पूरा होता है। और जिन-जिनके जज़्बे टूटे हैं वे सब इन्तिज़ार में रहते हैं कि अगर हमारा मौक़ा आयेगा तो हम मिलकर अपना जज़्बा पूरा करेंगे। तो जब कई लोगों के जज़्बे तोड़कर एक आदमी अपना जज़्बा पूरा करता हैं तो गोया उसने जितनों के जज़्बे तोड़े उनको अपना दुश्मन बना लिया।

अब वे सारे मिलकर इसका जज़्बा तोड़ने की फ़िक्र में रहेंगे और मौक़े की तलाश में रहेंगे। अब यह रास्ता इनसान के लिए बड़ी उलझन का रास्ता है। इसके बावजूद कि उसके हाथ में मुल्क हो, माल हो, रुपया-पैसा हो, सोना-चाँदी हो, कारख़ाना हो, कपड़े का मिल हो, रहने का मकान भी बहुत बड़ा हो, उसके पास मजमा और जत्था भी ज़्यादा हो, लेकिन दुनिया के अन्दर ही उसे जहन्नम का मन्ज़र दिखाई देता है। अन्दर से उसे चैन नहीं होता। उसे सुकून नहीं होता।

दुनिया और आख़िरत दोनों जगह राहत ही राहत

उसके मुक़ाबले में जो आदमी सीधे रास्ते पर अ़मल करने वाला

होता है, उसको भी मुजाहदे पेश आते हैं। आज़माईशें आती हैं, इम्तिहानात आते हैं, लेकिन ये मुजाहदे, ये तकलीफ़ें और ये आज़माईशें अल्लाह की तरफ़ से उसकी रूहानी ताक़त को बढ़ाने के लिए आती हैं। उन मुजाहदों व आज़माईशों के अन्दर उसका ईमान और ज़्यादा बढ़ जाता है और ईमान जितना ताक़तवर होता है, अल्लाह की हिमायत उतनी ही उसके साथ ज़्यादा हो जाती है। अल्लाह की मदद उतनी ही उसके साथ ज़्यादा हो जाती है। फिर तो उसके लिए दुनिया व आख़िरत दोनों जगह राहत ही राहत है।

मौत का मामला

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! एक मामला मौत का है। मौत का मामला ऐसा है कि जिसका वक़्त आ गया, जिस जगह पर आ गया और जिस तरह से आ गया, उसे वहाँ पर मरना ही है। और मौत कब आएगी? कहाँ आएगी? यह किसी को नहीं मालूम। इसे तो बस अल्लाह तआला ही जानते हैं।

लेकिन अगर हिजरत करने वाला मरा तो वह अल्लाह की बात मानते-मानते मरा, अल्लाह को खुश करके मरा।

ऐसे शख़्स की मौत के वक़्त में फ़रिश्ते आएँगे। इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे। तसल्ली देंगे कि आगे का ग़म मत करो। पिछले का ग़म मत करो। आगे के बारे में ख़ौफ़ मत करो और जौनसी जन्नत का तुम से वायदा किया जाता था उसकी खुशख़बरी ले लो।

अल्लाह का ज़ाहिरी निज़ाम और ग़ैबी निज़ाम

अल्लाह पाक अपनी क़ुदरत से कई काम तो ऐसे करते हैं जो इनसान को दिखाई देते हैं। और कई काम ऐसे करते हैं जो इनसान को दिखाई नहीं देते।

जो काम अल्लाह पाक इनसान को दिखाते हैं उसका नाम है

"ज़ाहिरी निज़ाम"। और जो काम अल्लाह पाक इनसान को दिखाते नहीं उसका नाम है "ग़ैबी निज़ाम"। अब ग़ैबी निज़ाम इनसान की हिमायत में आए या उसके ख़िलाफ़ हो, वह इनसान को दिखाई नहीं देता। और ज़ाहिरी निज़ाम यह इनसान की मस्लेहतों के तहत है, उसके मुवाफ़िक़ पड़ रहा है या मुख़ालिफ़, यह सब कुछ इनसान को दिखाई देता है। इन्हें ज़ाहिरी आँखों से दिखाई देता है। और इनसान के हवास बख़ूबी इसे महसूस करते हैं। जब इनसान अपने देखे पर चलता है तो समझ-बूझकर चलता है।

ज़ाहिरी निज़ाम का हाल

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैंने तीन बातें बताईः-

एक तो आँखों देखे पर चलना।

दूसरे समझ-बूझकर चलना।

तेसरे अपने गुर्दे यानी अपनी ताक़त पर चलना।

और फिर नतीजा निकलता है।

इनसान जो काम करता है अल्लाह तआला उसका नतीजा भी देते हैं। यह इनसान को जो नज़र आता है वह पूरा नहीं आता। उसे थोड़ा नज़र आता है। और जितना इनसान को नज़र आता है उसमें से जो समझ में आता है वह उससे भी थोड़ा है। आदमी को जो दिखाई देता है अव्वल तो वह थोड़ा है। उसे पूरा दिखाई नहीं देता है। माँ के पेट के अन्दर था पूरी माँ दिखाई नहीं देती थी। दुनिया के पेट के अन्दर आया तो पूरी दुनिया दिखाई नहीं देती।

जहाँ इनसान रहता है यह घिरा हुआ है। घेरने वाले इसे पूरा नहीं देखने देते। इसी तरह ज़माना भी इनसान को पूरा दिखाई नहीं देता। जो ज़माना गुज़र चुका वह इनसान के हाथ से निकल चुका और जो ज़माना आने वाला है वह इनसान के क़ाबू में नहीं। ले-देकर इनसान के सामने वह ज़माना है जो मौजूदा है। अब मौजूदा ज़माना वह

ज़माना है जो बाक़ी नहीं रहता है। अब इस वक़्त में सात बजकर दस मिनट हुए हैं। थोड़ी ही देर में साढ़े सात बज जाएँगे। थोड़ी देर के अन्दर पूरा दिन चला जाएगा। तो मौजूदा ज़माना इनसान के पास बाक़ी नहीं रहता।

इनसान पीछे से आगे की तरफ़ जा रहा है और ज़माना आगे से पीछे की तरफ़ जा रहा है। अब यही बंगलौर के अन्दर थोड़ी देर के लिए इनसानों से जो टच हुई तो यह मौजूदा ज़माना है, यही इनसान के पास महफ़ूज़ और मौजूद रहने वाला है। पिछला ज़माना तो बाक़ी नहीं रहा रहा, अगला ज़माना अभी हाथ नहीं आया। और यह मौजूदा ज़माना भी हाथ में नहीं रहेगा।

मौजूदा ज़माने का हाल और क़ियामत तक के लिए रहबरी

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातें और अफ़आ़ल (काम), इससे हमें क़ियामत तक रहबरी मिलती रहेगी। इसके लिए तेरह साल मक्का मुकर्रमा के और दस साल मदीना मुनव्वरा के हमारे लिए रहनुमा और रहबर हैं।

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया से पर्दा फ़रमा गए तो उसके बाद आपका लाया हुआ जो पाक तरीक़ा था वह ख़त्म नहीं हुआ। वह बराबर क़ियामत तक उम्मत में चलता रहेगा। इसके लिए मेहनत चलती रहेगी। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद जो ज़माना आया है, यह ज़माना इससे पहले कभी नहीं. आया। और भी नबी इस दुनिया से पर्दा फ़रमा गए लेकिन उनके बाद समझदार क़िस्म के लोग दूसरे नबी की आमद का इन्तिज़ार करते थे। जो लोग दीनदारी चाहते थे, जो लोग अमन व सुकून चाहते थे, जो लोग अल्लाह से ताल्लुक़ चाहते थे।

वे लोग इन्तिज़ार करते थे कि कोई नबी आए। फिर वह नबी आते थे तो साथ देने वाले थोड़े-से होते थे और मुक़ाबला करने वाले ज़्यादा होते थे। एसा हाल हर जगह ही था लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दुनिया से पर्दा फ़रमा जाने के बाद अब कोई नबी आने वाला नहीं।

नबी के बाद आपके ख़लीफ़ाओं के दौर से रहबरी

अब नबी वाला काम नबी वाले तरीक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चले जाने के बाद कैसे हो?

एक तो नबी की मौजूदगी ख़त्म, जिस ज़माने के जो नबी होते थे वह बता देते थे कि अब नबी कौन होगा। लेकिन जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमा गए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला काम आपके बताए हुए तरीक़े पर आपके दुनिया से जाने के बाद कैसे करना है इसके बारे में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस उम्मत को खुलफ़ा-ए-राशिदीन के हवाले फ़रमा कर तशरीफ़ ले गए और यूँ इरशाद फ़रमायाः

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ٥ (الحديث)

तर्जुमाः तुम लोग मेरा रास्ता मज़बूत पकड़ो और खुलफ़ा-ए-राशिदीन का तरीक़ा मज़बूत पकड़ो।

तो नबी करीम के बाद नुबुव्वत के काम को नुबुव्वत के अन्दाज़ पर करना, यह है ख़िलाफ़त यानी अल्लाह का ख़लीफ़ा होना। और यह ख़िलाफ़त वाला रास्ता जो अल्लाह पाक ने खुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़रिये बताया क़ियामत तक आने वाला जितना दौर होगा उसके अन्दर तेईस साल का नबी पाक का दौर, फिर खुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर और उसके बाद जब तक सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन एक भी दुनिया के अन्दर रहे, उनकी ज़िन्दगी क़ियामत तक

के लिए नमूना है। इसलिए सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाह अ़लैहिम अज्मईन के पर्दा फ़रमा लेने के बाद जो भी दौर आया उसके अन्दर हमारे जितने भी दीन के बड़े, मशाईख़, उलमा और अल्लाह वाले थे उनके वक़्त में हालात पेश आए तो उन्होंने क़ुरआन में देखा, हदीस में देखा और सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन की ज़िन्दगी में देखा और ग़ौर किया। उसके अन्दर बेचैन हुए। बेक़रार हुए। अल्लाह से दुआएँ माँगीं और अल्लाह पाक ने उनके लिए रास्ता खोल दिया। फिर उन्हें रास्ता दिखाई देने लगा, और यह क़ियामत तक होता रहेगा।

नुबुव्वत के बाद

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पहला काम

दौरे नबवी से हमें क्या-क्या सबक़ मिला, दौरे ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन से हमें क्या-क्या सबक़ मिला। अब हमारे ऊपर जो हालात आएँगे।

हमारे अपने घरेलू हालात आएँगे। हमारे अपने ख़ानदानी हालात आएँगे। या हमारे अपने क़ौमी हालात आएँगे। या हमारे अपने मुल्की हालात आएँगे। या हमारे ऊपर आ़लमी-पैमाने (विश्व स्तर) पर जो हालात आएँगे।

इन सारे हालात में क्या करना है, वह इससे हमें मालूम हो जाएगा। तेरह साल पहले दौरे नबवी के जो हालात थे वे ईमान की दावत के थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नुबुव्वत मिलते ही जो सबसे पहला काम किया वह कलिमे की दावत का था। फ़रमाते थेः

أَيُّهَا النَّاسُ! قُوْلُوْا لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا (الحديث)

जब आपने यह दावत दी तो लोगों ने जल्दी नहीं मानी लेकिन जिसने मानी पुख़्तगी से मानी। कलिमे की यह दावत क्या थी? ऐ लोगो! ला इला-ह इल्लल्लाहु कह लो तुम कामयाब हो जाओगे। यानी

इस बात का इक़रार कर लो, दिल में यक़ीन पैदा करो कि सिवाय अल्लाह के कोई इबादत करने के क़ाबिल नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

दावत के ज़रिये करने के काम

अल्लाह पाक करता-धरता हैं। और अल्लाह पाक की कुदरत बड़ी विशाल है, उसके ख़ज़ाने बड़े अपार हैं। इसलिए अल्लाह पाक की इबादत और उसकी बात मानना ज़रूरी है। तब दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी बनेगी। चाहे आदमी मालदार हो या ग़रीब हो, चाहे हालात मुवाफ़िक़ हों या मुख़ालिफ़ हों, उसके साथ मजमा थोड़ा हो या ज़्यादा, लेकिन जिसे अल्लाह हिदायत न दे उसकी ज़िन्दगी बिगड़ गई।

दोस्तो! दावत की लाईन से ये करने और समझाने के काम हैं।

तकलीफ़ें अस्थाई हैं

दावत की इस राह में तकलीफ़ें आती हैं। सहाबा पर भी तकलीफ़ें बहुत आईं। उन तकलीफ़ों में आदमी के घबरा जाने का अन्देशा है। आदमी घबरा जाएगा तो ख़ुद-बख़ुद छोड़ देगा। ऐसे मौक़े पर कुरआन पाक से रहनुमाई मिलेगी। कुरआन पाक की आयतों में चन्द बातें होती हैं, एक तो यह कि उसमें आख़िरत की ज़िन्दगी बयान की गई है ताकि आदमी के ज़ेहन में यह बात बैठ जाए कि यह आ़रजी (अस्थाई) ज़िन्दगी है, असली नहीं। असली ज़िन्दगी आख़िरत की अभी बाक़ी है।

तमाम अम्बिया की दावत का हासिल और मग़ज़

मक्का मुकर्रमा के अन्दर जो कुरआन पाक उतरा। एक तो उसमें क़ियामत का तज़किरा बहुत हुआ। दूसरे जन्नत और जहन्नम का तज़किरा बहुत मिलगा। और पिछली उम्मतों का तज़किरा भी कसरत से मिलेगा। कि उनके नबियों ने दो बातों की दावत दी: एक कलिमे की

और एक नमाज़ की। जैसे-

يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ (پاره- ۸)

ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो। सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। "अल्लाह की इबादत करो" इसमें नमाज़ आ गई। और "सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के क़ाबिल नहीं" इसमें "कलिमा" आ गया। यह कलिमा ताक़त वाला बन जाए और नमाज़ जानदार बन जाए तो अल्लाह की मदद मिलेगी।

क़ुरआन में पिछले वाक़िआत को किस लिए दोहराया गया?

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो!

अस्सी आदमी ऐसे होंगे तो कोई इनसान और पूरी की पूरी क़ौम भी उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती। चुनाँचे क़ौमे आद पूरी की पूरी चन्द आदमियों का मुक़ाबला नहीं कर सकी। अल्लाह की तरफ़ से एक हवा आई और वे सारे फ़ना हो गए।

तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कलिमे की दावत शुरू की और जिसने कलिमा पढ़ा उसने भी दावत देनी शुरू की, उस पर तकलीफ़ें आईं और उस वक़्त क़ुरआन का नुज़ूल (उतरना) हुआ तो उसमें पिछले वाक़िआत आए ताकि आदमी को तसल्ली हो। पस नबियों पर और उनके मानने वालों पर तकलीफ़ें तो आईं लेकिन आख़िर में अल्लाह की मदद भी आई।

न मानने वालों के साथ ख़ुदा का मामला

नबियों और उनके मानने वालों की दावत जिसने नहीं मानी और क़बूल नहीं की तो उनको ढील दे दी गई। उन्हें ख़ूब कूदने-फाँदने दिया गया और फिर आख़िर में इतनी ज़ोर से अल्लाह पाक ने पछाड़ा कि

वे उठ भी नहीं सके, हमेशा के लिए ख़त्म हो गए। जैसे बदन में कोई फोड़ा होता है तो अन्दर कील भर जाती है, फिर उभरता है। इसी तरह जो ग़लत लोग हैं उन्हें अल्लाह पाक फोड़े की तरह थोड़े वक़्त के लिए उभरने देते हैं। उभरता है, फूलता है और जब भर जाता है जैसे फ़िरऔन ज़हरीला फोड़ा था, कहता था:

اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى

कि देखो मैं सबसे ऊँचा हूँ।

तो अल्लाह पाक ने उसे ऊँचा होने दिया, कील भरता रहा और फिर फट गया।

तो जिसके अन्दर ख़राबी भरी होगी और ख़राबी के ज़रिये जो ऊँचा हुआ तो अल्लाह पाक बीच में से उसे फाड़ देंगे। यह अल्लाह का निज़ाम है ताकि क़ियामत तक आने वाले इन वाक़िआत से तसल्ली लें।

क़ुरआन पाक की तालीम की ज़रूरत

कलिमे की दावत शुरू हुई तो तकलीफ़ें शुरू हूई। तब तालीम के हल्क़े शुरू हुए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन और बहनोई तालीम ही तो कर रहे थे। अब घर-घर तालीम होने लगी। और तालीम में क्या होता था, क़ुरआन पाक ही तो पढ़ते थे।

दावत और तालीम का आपस में ताल्लुक़ और फ़र्क़

क़ुरआन पाक की एक तो है तिलावत यानी तालीम के तौर पर पढ़ना, और एक है दावत के तौर पर पढ़ना। इसी तरह सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर, एक तो है इसको ज़िक्र के तौर पर पढ़ना। एक है अल्लाह की पाकी बयान करना। अल्लाह की बड़ाई बयान करना। अल्लाह की तारीफ़ दूसरे के सामने बयान करना। अब यह दावत बन जाएगी। तन्हाई में बैठकर

याद करें तो ज़िक्र, दूसरे के सामने यह बात करेंगे तो दावत होगी। चाहे बीवी ही के सामने क्यों न हो। और फिर दावत वाली सारी मददें अल्लाह पाक लानी शुरू फ़रमा देंगे।

दावत की राह में सिर्फ़ तकलीफ़ ही नहीं मदद भी आती है

एक तरफ़ तो दावत व तब्लीग़ का काम शुरू हुआ। उस पर तकलीफ़ें आईं तो तालीम चली। इस राह में कई बार अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ख़ुशगवार माहौल भी अ़ता फ़रमाया, अच्छे हालात भी आए। नुस्रत व मदद के वाक़िआ़त भी हुए। ऐसा नहीं कि मक्का मुकर्रमा में बस तकलीफ़ ही तकलीफ़ थी। मक्का मुकर्रमा में भी अल्लाह पाक की नुस्रत व मदद शामिल थी। चुनाँचे अबू जहल ने रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में कोई ग़लत मन्सूबा बनाया, वह गया। उसने सोचा कि मैं रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुँचाऊँ। इरादा ही किया था कि फ़ौरन पीछे हट गया। उसने बयान किया कि मुझे तो कुछ पर वाले दिखाई दिए। और मुझे बुहत डर लग गया। इसलिए पीछे हट गया। अगर वह आगे बढ़ता तो फ़रिश्ते उसे नोच डालते।

तो बाज़ मौक़ों पर यह बात भी हुई कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ ग़ैबी मदद हुई और हैरत-अंगेज़ तरीक़े पर हुई। ख़ास तौर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह के साथ हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब हिजरत करने लगे तो यह छुपकर नहीं गए बिल्कुल सबके सामने डंके की चोट पर गए। तो देखिए दोनों क़िस्म के हालात मक्का के अन्दर पेश आए।

हज़रत ज़माद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ

एक बहुत बड़े शायर, बहुत बड़े मुक़र्रिर हज़रत ज़माद रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का तशरीफ़ लाए। बेईमानों ने उनके कान भर दिये कि देखो हमारे यहाँ यह क़िस्सा हुआ है। उनकी (हुज़ूरे पाक की) बात तुम मत मानना। और देखो! सुनना भी नहीं। इसलिए कि जो भी उनकी बात सुनता है वह असर ले लेता है।

बहुत बड़ा शायर है और ख़तीब है। लेकिन अपने कान में उंगली डाल दी ताकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कोई बात मेरे कान में न पड़े। लोगों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ इशारा करके दिखाया कि देखो! यह वही शख़्स है इससे बचते रहना। कुछ देर तो बचते रहे फिर ख़्याल आया कि मैं कोई बेवक़ूफ़ आदमी नहीं हूँ। मैं तो ख़ुद मजमे को हिला देने वाला हूँ। मजमे के ज़ेहन को फैर देने वाला हूँ। मुझे कौन फैरेगा? यह ख़्याल आया और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे-पीछे घर गये और घर जाकर कहा कि आप क्या बात करते हैं?

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके सामने दावत पेश की। बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए और वहीं कलिमा पढ़ लिया। कलिमा पढ़कर वापस जाने लगे तो लोगों ने चेहरा देखते ही पहचान लिया कि यह भी फिर गए। फिर वह अपनी क़ौम के अन्दर गए। अल्लाह पाक ने उनसे कितना ज़बरदस्त काम लिया, यह सब कुछ हमें तारीख़ और सीरत की किताबों से मालूम है।

मुश्किलों का हल

इस राह में दोनों हालतें पेश आती हैं। एक तरफ़ तो मुजाहदा, मुसीबत में घिरना, आज़माईश और तकलीफ़ें, यह भी हुआ। दूसरी

तरफ़ मदद के हालात आए। उन्हीं हालात के अन्दर रहकर इलाज तलाश करना है। अगर सिर्फ़ मुवाफ़िक हालात आयें तो इनसान इतरा जाए। इसका ख़तरा है। और मुख़ालिफ़ हालात आयें तो घबरा जाए। इसका अन्देशा है।

अब इनसान के लिए जो हल (समाधान) बताया गया है वह यह कि अल्लाह पाक का ज़िक्र करना और कुरआन पाक की तिलावत करना है। जितना अल्लाह पाक का ज़िक्र करेगा। जितनी तिलावत करेगा और दुआ माँगेगा, उसी क़द्र अल्लाह पाक से ताल्लुक होगा। और अल्लाह पाक से ताल्लुक हुआ तो मुवाफ़िक हालात के अन्दर बजाए इतराने के शुक्र करेगा। और मुख़ालिफ़ हालात के अन्दर बजाए घबराने के सब्र करेगा। और सब्र करेगा तो अल्लाह की ताकत साथ में होगी। बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है। और शुक्र करेगा तो अल्लाह की नेमतें बढ़ेंगी जैसा कि कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि अगर तुम शुक्र करोगे तो हम और इज़ाफ़ा कर देंगे।

तो दोनों हालतों के अन्दर यह तरक्क़ी करता चला जाएगा। अगर ज़िक्र करेगा, तिलावत करेगा, दुआ माँगेगा तो अल्लाह पाक से ताल्लुक जुड़ेगा। तो तकलीफ़ों के अन्दर भी अल्लाह पाक से क़रीब होगा और नेमतों के अन्दर भी।

इक्रामे मुस्लिम की अहमियत

एक तरफ़ कलिमे की दावत, एक तरफ़ तालीम के हल्के, अल्लाह का ज़िक्र और कुरआन पाक की तिलावत और दुआओं का माँगना, यह शुरू हुआ, वहीं एक बात और भी हुई जो भी कलिमा पढ़ने वाला होता था वह अपनी पूरी क़ौम में अकेला, पूरे ख़ानदान में अकेला, बाकी पूरी कौम ख़िलाफ़ है, पूरा ख़ानदान ख़िलाफ़ है। तो फिर हर ख़ानदान का अकेला अकेला कलिमा पढ़ने वाला बहुत परेशान होगा।

इसलिए कि पूरा-पूरा ख़ानदान एक तरफ़ और यह आदमी अकेला एक तरफ़। तो यह अकेला आदमी क्या करे, इसका इन्तिज़ाम अल्लाह पाक ने यह किया कि जिसने कलिमा पढ़ा वह एक दूसरे का इक्राम करे। और कलिमे वाले एक बन जाएँ। उनके अन्दर एकता आ जाए। जिसे हम "इक्रामे मुस्लिम" कहते हैं।

इक्रामे मुस्लिम और इस्लामी भाईचारे के नमूने

कलिमे वाले आपस में यह न देखें कि यह मेरी क़ौम का है या नहीं। देखो हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु उनको इस्लाम लाने के बाद तकलीफ़ हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जो क़बीला बनू तमीम के बहुत बड़े सरदार थे, उन्होंने ख़रीदकर आज़ाद कर दिया। कोई ख़ानदानी जोड़ नहीं, सिर्फ़ इस बिना पर कि उन्होंने कलिमा पढ़ा है। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इक्राम किया।

इसी तरह हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु जब मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए यह देखने के लिए कि दावत देने वाला जो शख़्स खड़ा हुआ है, क्या हैं? कैसे हैं? यह भी उनको मालूम है कि लोगों को उनसे मुलाक़ात का इल्म हुआ तो यह ख़ुद मारे जाएँगे।

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने लेजाकर चुपके से खाना खिला दिया। हालाँकि कोई ख़ानदानी जोड़ नहीं। तो इक्रामे मुस्लिम जिसका चौथा नम्बर है उसके ज़रिए कलिमे वालों के अन्दर इत्तिहाद और एकता पैदा हुई। और जितनी एकता कलिमों वालों और दावत वालों में पैदा हुई उतना ग़ैर-कलिमे वालों पर अल्लाह की तरफ़ से रौब पड़ना ही था।

कलिमे वालों की आपसी खींचातानी का नतीजा

अब अगर ईमान वाले, दीन का कलिमा पढ़ने वाले और कलिमे

की दावत का काम करने वाले लोगों के बीच कशाकश (खींचातानी) रही तो उसका एक नुक़सान तो यह है कि कमज़ोर होंगे। और दूसरा नुक़सान यह होगा कि दूसरों के अन्दर से रौब निकल जाएगा:

فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (پاره- ١٦)

यानी तुम्हारे अन्दर आपस में कशाकश होगी तो तुम कमज़ोर हो जाओगे और तुम्हारी हवा (धाक) उखड़ जाएगी।

तो इस बिना पर जो कलिमे वाले थे उन्होंने एक-दूसरे का इक्राम किया और कलिमे वालों में एकता और इत्तिहाद पैदा होता चला गया। अगरचे थोड़े-से थे।

पूरी इनसानियत की फ़िक्र ज़रूरी है।

अच्छा अब इस पर भी ग़ौर करो! रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरे आ़लम के लिए नबी बनकर तशरीफ़ लाए। और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जो उम्मत है उसके एक-एक आदमी को अल्लाह पाक ने पूरे आ़लम के लिए पैदा किया। एक-एक उम्मती पूरे आ़लम के लिए है। पूरे आ़लम की फ़िक्र करने वाला अपनी भी, घर वालों, ख़ानदान वालों, क़ौम वालों की भी फ़िक्र करे। क्योंकि हम रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उम्मती हैं।

दावत की राह में ख़र्चों और कारगुज़ारी के सिलसिले में ज़रूरी हिदायात

अब ज़ाहिर है कि जो पूरे आ़लम की फ़िक्र करता है, उन तक अल्लाह की बात पहुँचाता है, तो आप जानते होंगे कि इन कामों में कोई आमदनी नहीं है, कोई भी काम करना हो, तो उसमें आमदनी की ज़रूरत होती है। पैसे होने चाहिएँ। यहाँ भी अभी आप कहेंगे कि भाई मैं तो जाने के लिए तैयार हूँ तो आप से पूछा जाएगा कि कितना ख़र्च

करने के लिए तैयार हो। अगर साल भर के लिए जा रहे हो तो कितना ख़र्च करोगे। अगर चार महीने के लिए जा रहे हो तो कितना ख़र्च करोगे। और मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! ख़र्चे के साथ चूँकि दीन का काम और दावत का करना है तो यह भी पूछा जाएगा कि तुमने ये चार महीने, साल भर काम में लगाये या नहीं?

बाहर दूसरे मुल्कों के लिए कैसे लोगों की जमाअ़त तश्कील दी जाए

अब अगर आपने चार महीने लगाये हैं मगर बीस-पच्चीस साल पहले, तो फिर बाहर मुल्कों के लिए तश्कील करने वाले कहेंगे "कि तुमने पच्चीस साल पहले चार महीने लगाए तो ऐसे आदमी को हम बाहर नहीं भेजा करते। बाहर मुल्कों में तो ऐसे आदमी को भेजते हैं जो मक़ामी काम करता है और साल का चिल्ला तो कम से कम देता ही रहे। सालाना, माहाना, हफ़्तेवारी और रोज़ाना की जो तरतीब है वह करता रहे। ताकि उसके अन्दर दीन की दावत की फ़िक्र आए। इनसानियत का ग़म आए और नबियों वाला दर्द आए।

कम सलाहियत वाले भी हैरत-अंगेज़ कारनामे अन्जाम देते हैं

नबियों वाला दर्द, इनसानियत का ग़म, दीन की फ़िक्र अगर आ गई तो बहुत-सी बार कम सलाहियत वाले आदमी से भी अल्लाह पाक इतना काम ले लेते हैं कि आप हैरान रह जाएँगे।

जमाअ़तें ज़्यादा आ गईं, कोई अमीर मिलता नहीं, जो पढ़े-लिखे हैं वे सारे एक जमाअ़त में चले जाते हैं। उनसे अगर कहा जाए कि भाई दो-दो आदमी इन बेपढ़े लिखे लोगों मे लग जाओ, तो वे तैयार नहीं होते। हालाँकि उन्हें तैयार हो जाना चाहिए। ऐसे लोगों के साथ

मिलकर अच्छा-ख़ासा मुजाहदा (मेहनत और कोशिश) करना पड़ेगा। और उसी मुजाहदे के अन्दर रूहानी तरक़्क़ी होगी। उसी मुजाहदे में अल्लाह पाक रास्ता खोलेंगे।

लेकिन ये पढ़े-लिखे लोग आ़म तौर पर तैयार नहीं होते। लेकिन अल्लाह का फ़ज़्ल है कि अब तैयार होने लगे हैं और पढ़े-लिखे लोग अनपढ़ों को लेकर जाने लगे हैं। लेकिन फिर भी कई बार बेपढ़ों की जमाअ़तें ज़्यादा होती हैं।

बेपढ़ों की कारगुज़ारियों के मिसाली वाक़िआ़त

एक मौक़े पर बेपढ़ों की जमाअ़त ज़्यादा थी। कोई ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। तो समझा कर उनको भेज दिया कि तुम यहाँ से जमाअ़त लेकर जाओ, तुम में से एक आदमी को हम अमीर बना देते हैं। अब जहाँ जाओगे तुम्हें पढ़े लिखे आदमी मिलेंगे। उन पढ़े-लिखे आदमियों की ख़ुशामद करना और यह किताब (फ़ज़ाइले आमाल) देना ताकि तुमको पढ़कर सुना दें। और उनसे अपने कलिमे वग़ैरह ठीक करना। और छह नम्बर उन लोगों के सामने पेश कर देना। इस तरह एक जमाअ़त बेपढ़ों की यहाँ से निकली। और पढ़े-लिखों से उन्होंने अपनी नमाज़ भी दुरुस्त कर ली, किताब भी सुनी और पढ़े-लिखे लोगों से उन्होंने बयानात भी करवाए। बस्ती के इमाम साहिब जब कभी खड़े होकर बयान करते तो सिर्फ़ लान-तान शुरू कर देते। लोग उनकी बात सुनने को तैयार नहीं होते। कि अरे भाई! उनका बयान मत कराओ। यह खड़े होते हैं तो लोगों पर लान-तान शुरू कर देते हैं। इधर यह जमाअ़त जो गई थी उसने इधर-उधर से लोगों को जमा करना शुरू किया। इमाम साहिब से अपनी सूरः फ़ातिहा (अल्हम्दु शरीफ) ठीक कराई। उनसे किताब सुनी, फिर इमाम साहिब से कहा "इमाम साहिब! बयान आप करें लेकिन छह नम्बर के अन्दर बयान करना है।"

अब छह नम्बर के अन्दर इमाम साहिब को जो बाँध दिया तो उन्हें जैसे हाथी के सर पर कौआ बैठा हुआ है। बार-बार ख़्याल लगा रहता कि छह नम्बर से हटा तो नहीं। इस तरह छह नम्बर की पाबन्दी के साथ उन्होंने बयान शुरू किया। उसके बाद फिर एक बड़े मियाँ खड़े हो गए कि भाई इसी को सीखने के लिए हम लोग चल रहे हैं। हम तो बेपढ़े लिखे लोग हैं, तुम लोग पढ़े लिखे लोग हो। तुम हमारे साथ चलो ताकि हमारी नमाज़ ठीक हो जाए।

तो इस तरह उन्होंने लोगों की तश्कील की। इमाम साहिब की भी तश्कील की। किसी की तीन दिन की, किसी की चिल्ले की, यहाँ तक कि चार महीने की भी जमाअ़त थी।

एक जगह का और मैं आपको क़िस्सा सुनाऊँ। एक जमाअ़त एक जगह गई। वहाँ पूरा का पूरा गाँव कलिमा छोड़ चुका था और मस्जिद के अन्दर घोड़े बंधे हुए थे। यह जमाअ़त वहाँ पर गई। गाँव वालों ने कहा कि भाई! जब हमारे पास कलिमा था तो तुम लोग आए नहीं। और अब हम लोग कलिमा छोड़ चुके हैं तो तुम लोग आए हो। क्या फ़ायदा तुम्हारे आने का? अब उनके दिल में आख़िरत का ग़म और दीन का दर्द तथा आख़िरत की फ़िक्र पैदा हुई। यह जमाअ़त हिचकियाँ मार-मारकर रो रही है कि यह पूरा का पूरा गाँव हमेशा के लिए जहन्नम में जाएगा। दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे। तो देखो ज़्यादा पढ़े-लिखे लोग नहीं हैं लेकिन इनसानियत का ग़म और नबियों वाला ग़म अल्लाह पाक ने दिया ख़ूब रोये। गाँव वाले ताज्जुब करने लगे कि भाई! तुम रोते क्यों हो? हम तुमको खाना दे देंगे।

उन लोगों ने कहा कि खाना तो हमारी देगची में मौजूद है।

अरे भाई अगर तुमको पैसे चाहिएँ तो हम तुमको पैसे दे दें?

उन्होंने कहा "देखो हमारे पास पैसे भी मौजूद हैं"

भाई! सर्दियों में कम्बल न हो तो कम्बल दे दें?

उन्होंने कहा कि "देखो! कम्बल भी मौजूद है"

गाँव वाले पूछने लगे, "फिर रोते क्यों हो?"

देखो! कैसा असर पड़ता है। इनसानियत का जब ग़म, दर्द और फ़िक्र होती है तो उसका असर ज़रूर पड़ता है, असर पड़े बग़ैर नहीं रहता।

ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु किस क़द्र मुख़ालिफ़ थे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़ का उन पर असर पड़ा।

हज़रत अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर असर पड़ा।

अबू जहल के बेटे हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर असर पड़ा।

हज़रत इक्रिमा के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ़

जब मक्का मुकर्रमा फ़तह हो गया तो अबू जहल का बेटा इक्रिमा निकल कर भाग गया। उनकी बीवी मुसलमान हो चुकी थीं। इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सोचा कि मक्का में रहना ही नहीं है। किसी दूसरी जगह चले गए। बीवी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि हज़रत! मेरे मियाँ को अमान दे दीजिए। जब अमान मिलेगी और अच्छे माहौल को देखेगा तो क्या अ़जब है कि अल्लाह उसे जन्नत वाला रास्ता दिखा दें। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसे अमान दे दी। अब बीवी तलाश में गई।

इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बिल्कुल बाहर निकल गए और निकलने के बाद एक कश्ती में सवार हो गए। कश्ती चल पड़ी। अब ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम देखो:

कश्ती भंवर मे फंस गई। डूबने के क़रीब हो गए। कश्ती का जो चलाने वाला था उसने कहा कि कश्ती के बचने की कोई उम्मीद नहीं

सिवाय इसके कि एक ख़ुदा को मानो। वही बचा सकता है। "ला इला-ह इल्लल्लाहु"।

इक्रिमा कहने लगे कि इसी कलिमे से तो भागकर हम आए और यह कलिमा हमारे पास यहाँ पर भी आ गया। इतने में सामने बीवी दिखाई दी। इक्रिमा ताज्जुब में पड़ गए। बीवी ने इशारा किया तो इक्रिमा ने अपने गले पर हाथ फैर कर कहा कि मुझे मार डालेंगे। क्योंकि मैं ज़िन्दगी भर उनसे लड़ता रहा। मुझसे पूरा बदला उतारेंगे। मेरा गला काटेंगे। बीवी ने कहा कि उन्होंने अमान दे दी है। तब इक्रिमा साथ चले। रास्ते में बीवी से मुहब्बत करनी चाही, बीवी ने कहा कि मैं मुहब्बत नहीं करने दूँगी। इसलिए कि मैं कलिमे वाली हूँ और तुम बग़ैर कलिमे वाले हो। इसका बहुत ज़बरदस्त असर पड़ा।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अपने दुश्मन के साथ मामला

उसके बाद मक्का में आए। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास पहुँचे तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से कहा कि इक्रिमा आ रहा है, अबू जहल का बेटा। तुम उसके बाप को बुरा मत कहना। इसलिए कि बाप को अगर बुरा कहोगे तो उसके बाप तक तो गालियाँ पहुँचेंगी नहीं, लेकिन उसके बेटे को तकलीफ़ होगी।

अब जब इक्रिमा रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आए तो आप अपना बिस्तर छोड़कर इस हालत में कि चादर कन्धे के ऊपर है और वह घिसट रही है, स्वागत के लिए दरवाज़े पर पहुँचे। यह वह शख़्स है जो हर लड़ाई के अन्दर आपके ख़िलाफ़ लड़ने वाला और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़त्म कर देने की असफल कोशिश करने वाला है, और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके

स्वागत के लिए आगे बढ़ रहे हैं। इक्रिमा का हाथ पकड़कर चले और अपने बिस्तर पर बैठाया। मारे शर्म के उसकी निगाहें नीची हो गईं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दावत दी तो यह अबू जहल का बेटा हज़रत इक्रिमा वहीं रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु बन गए। और उन्होंने वहीं पर कलिमा पढ़ लिया। और कलिमा पढ़ने के बाद उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के प्यारे नबी! मैंने जितना माल और जितनी जान दीन के मिटाने पर लगाया है, उससे दोगुनी जान दीन के फैलाने पर लगाऊँगा। यह हज़रत इक्रिमा ने कहा।

अख़्लाक़ की प्रभावकारी ताक़त

यह ख़ूब याद रखो, अख़्लाक़ का बरतना और मानूस करना यह हैरत-अंगेज़ (आश्चर्य जनक) चीज़ है। इसके ज़रिये आप अपने घर वालों में भी दीन ला सकेंगे और इसके ज़रिये काम करने वाले दोस्तों के अन्दर इत्तिहाद और संगठन भी पैदा होगा। यहाँ तक कि अगर आप कारोबारी आदमी हैं तो अगर आपकी दुकान पर कोई आदमी ग़ैर-मुस्लिम आए जो ख़ुदा का न मानने वाला है, आप उसके साथ भी अख़्लाक़ बरतेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, ग़बन नहीं करेंगे, धोखा नहीं देंगे, ख़ियानत नहीं करेंगे, नाप-तौल के अन्दर कमी नहीं करेंगे और आप उसके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे, अच्छी तरह बैठाएँगे, मीठे अन्दाज़ में उससे बात करेंगे, और आपके ज़ेहन में सिर्फ़ पैसे कमाना न हो बल्कि आपके ज़ेहन में रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लाए हुए पाकीज़ा अख़्लाक़ का बरतना हो, तो मेरे भाईयो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की लाई हुई एक-एक चीज़ ऐसी है कि जो इनसानों के दिलों को इस तरह खींचती है जिस तरह मक़्नातीस की तरफ़ लोहा खिंचता है। यह आकर्षण और कशिश है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए तरीक़े के अन्दर। ऐसा नहीं कि जब पूरी ज़िन्दगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की

तरफ़ आ जाएगी तब लोगों के दिल खिंचेंगे। बल्कि जो भी चीज़ और जितनी भी आती चली जाएगी। आपकी बातें और ख़ूबियाँ तो दिल को खींचने वाली बनेंगी।

दूसरों के लिए रोना काम आया

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अन्दर की बेचैनी, अन्दर का दर्द, अन्दर का ग़म, ये इनसानियत के दिलों को खींचने वाली चीज़ें हैं। अब देखो ना! वह जमाअ़त जो कम-पढ़ों की थी और उस बस्ती में गई तो हिचकियाँ मार-मारकर रोई। लोगों ने पूछा कि खाना तुम्हारे पास, पैसा तुम्हारे पास, बिस्तर तुम्हारे पास, तो फिर इतनी बेचैनी और बेक़रारी के साथ आख़िर तुम रो क्यों रहे हो?

तो जमाअ़त वालों ने कहा "हम तुम्हारे लिए रो रहे हैं, तुमने कलिमा छोड़ दिया" यह सुनकर कि ये सीधे-सादे बे-ग़रज़ लोग जिनका हमारे बुरे-भले से कोई मतलब नहीं। मगर वे हमारे भले की ख़ातिर रो रहे हैं, हिचकियाँ मार-मारकर रो रहे हैं, अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी और सब ने तौबा करके अपनी दुनिया बदल डाली।

ख़र्चों के मसले का हल क्या है?

हमने बताया कि कलिमे की दावत, तालीम के हल्क़े, अल्लाह का ज़िक्र, दुआ़ओं का माँगना और उसके साथ एक दूसरे का इक्राम। लकिन ये चारों काम ऐसे थे जिसके अन्दर ख़र्चा ही ख़र्चा है, आमदनी नहीं है। और जो काम पूरे आ़लम के अन्दर करना हो, बग़ैर आमदनी के कैसे हो?

दो घन्टे कलिमे की दावत दो एक पैसा जेब में अता नहीं। दो घन्टे तालीम करो चार घन्टे तिलावत, ज़िक्र और दुआ़ माँगो और बाद में जेब टटोलो, एक पाई जेब में नहीं आती। और जब इक्राम करोगे तो जेब से और निकालना पड़ेगा। तो जिस काम में ख़र्चा ही ख़र्चा हो

आमदनी नहीं तो वह काम दुनिया में चले कैसे? अपनी कौम में भी करना, ख़ानदान में भी करना। मुल्क में भी करना। मुल्क से बाहर भी करना। कियामत तक के लोगों में भी करना और इसमें ख़र्चा ही ख़र्चा। आमदनी का तो नाम व निशान भी नहीं, तो यह काम दुनिया में चले कैसे?

अल्लाह के ख़ज़ानों की कुंजी

अल्लाह पाक ने इसका यह इन्तिज़ाम किया कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को आसमानों पर बुलाकर जो ख़ज़ाने थे वे दिखाए। और उनकी चाबी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हवाले कर दी। वह चाबी क्या थी? वह थी नामज़! और यूँ फ़रमाया कि जब तुम्हारी कोई ज़रूरत अटक जाए तो "इय्या-क नअ़्बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीनु" नमाज़ पढ़ो और अल्लाह से माँगो। ये अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और इन्हें लेने की कुंजी है नमाज़। नमाज़ पढ़ो और ख़ज़ाने लो। इस नमाज़ को लेकर आप तशरीफ़ लाए तो अब जहाँ कोई काम अटकेगा हम नमाज़ पढ़ेंगे और अल्लाह से कहेंगे।

नमाज़ को जानदार कैसे बनाया जाए?

लेकिन भाई नमाज़ जानदार होनी चाहिए। कहीं ज़ेहनों के अन्दर यह न आए कि हम नमाज़ पढ़कर अल्लाह से कहते हैं और हमारे काम बनते नहीं। यह ज़ेहन में न आ जाए। नमाज़ जानदार होनी चाहिए। और नमाज़ को जानदार बनाने के लिए नमाज़ में पाँच बातें लानी होंगी।

1. एक कलिमे वाला यकीन। 2. फ़ज़ाइल वाला इल्म।
3. मसाइल वाली शक्ल। 4. अल्लाह वाला ध्यान।
5. इख़्लास वाली नीयत।

ये पाँच बातें नमाज़ में लानी पड़ेंगी।

कलिमे वाला यक़ीन मिलेगा दावत की फ़िज़ा में।
फ़ज़ाइल का इल्म, यह मिलेगा तालीम के हल्क़ों में।
मसाइल वाली शक्ल, यह मिलेगी उलमा से पूछकर।
अल्लाह वाला ध्यान, यह मिलेगा तिलावत और ज़िक्र से।
और इख़्लास वाली नीयत यानी अल्लाह को राज़ी करने का जज़्बा, यह कैसे मिलेगा? इसको ज़रा तफ़सील से बताऊँगा।

इख़्लासे नीयत की ताक़त

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए मक्का के पहाड़ को सोना बनाने की पेशकश अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते ने की। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनकार कर दिया। आप जानते थे कि पहाड़ अगर सोना बन गया, चाँदी हीरे जवाहिरात बन गए। और सोना चाँदी देकर लोगों से दीन का काम लिया तो लोग फिर सोने और चाँदी के लिए दीन का काम करेंगे। अल्लाह के लिए नहीं करेंगे। और जब सोने-चाँदी के लिए दीन का काम किया जाता है तो फिर दीन में इतनी ताक़त नहीं होती जो फ़िरऔन को ज़ेर (पस्त) कर दे क़ैसर व किस्रा को ज़ेर कर दे। जालूत को ज़ेर कर दे अबू जहल के मजमे को ज़ेर कर दे। जब सोने-चाँदी के लिए दीन का काम किया जाएगा तब दीन में ताक़त नहीं आएगी। जब इख़्लास के साथ दीन का काम न किया जाए तो दीन में बरकत नहीं आती। अगर सोने-चाँदी के लिए दीन का काम किया जाए तो वे बरकतें जो बनी इस्राईल ने हासिल कीं वे बरकतें नहीं मिल सकतीं। जो बरकतें सहाबा ने हासिल कीं वे बरकतें नहीं मिल सकतीं। तो दीन का काम सोने-चाँदी के लिए न हो, दीन का काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए हो। इसलिए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सोने चाँदी का इनकार कर दिया ताकि लोग दीन का काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए करें।

इख़्लास पैदा करने का तरीक़ा

इख़्लास पैदा करने का तरीक़ा यह है कि दीन का काम आदमी करे अपनी दुनिया को कुरबान करके। तभी उम्मीद है इख़्लास के पैदा होने की। और अगर दीन को ज़रिया बनाया अपनी दुनियावी ग़र्ज़ों के पूरा करने का तो ख़तरा है कि दीन निकल जाएगा।

अल्लाह का किसी से कोई रिश्ता नहीं

यह बनी इस्राईल जो अल्लाह की बारगाह से धुतकारे गये वे इसी लिए धुतकारे गये कि नबियों की औलाद थे और दीन के काम को दुनिया हासिल करने और ख़ुद-ग़र्ज़ी के लिए करना शुरू किया। तो होते-होते दीन ज़िन्दगी से निकल गया और दुनिया ही दुनिया रह गई।

और सहाबा-ए-किराम बुत-परस्तों की औलाद थे। सहाबा के बाप, दादा, परदादा ये सारे के सारे बुत-परस्त थे लेकिन उन्होंने जब अल्लाह को राज़ी करना तय कर लिया और अल्लाह को राज़ी करने के लिए जो तकलीफ़ उठानी पड़ी इरादा कर लिया कि तकलीफ़ उठा लेंगे और अल्लाह को राज़ी करके जन्नत में जाएँगे। अल्लाह को नाराज़ करके जहन्नम में नहीं जाएँगे। जब उनके अन्दर यह इख़्लास आ गया और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कहने के मुताबिक़ उन्होंने क़दम उठाया तो यह "अन्अ़म्-त अ़लैहिम" (जिन लोगों पर अल्लाह का इनाम हुआ) में शामिल हो गए और पूरी दुनिया के लिए अल्लाह पाक ने उनको रहबर बना दिया।

अगर बुत-परस्तों (बुतों को पूजने वालों) की औलाद सही काम करती है और अल्लाह को राज़ी करने के लिए करती है तो वह दुनिया की इमाम बनती है। और अगर अम्बिया की औलाद दीन का काम ख़ुद-ग़र्ज़ी और दुनिया हासिल करने के लिए करती हो तो वह "ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन" (जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और जो गुमराह हुए) बनकर हमेशा के लिए जहन्नमी बन गई।

अल्लाह का किसी से कोई रिश्ता नहीं। अल्लाह तो यह देखता है कि एक अल्लाह की ताक़त को किसने माना और एक अल्लाह की इबादत किसने की।

उम्मत का सबसे मुफ़्लिस शख़्स

नमाज़ के अन्दर ताक़त पैदा करने के लिए पाँच बातें ज़रूरी बताई गई हैं, उनकी रियायत और ध्यान से यह नमाज़ जानदार बन गई। लेकिन जानदार बनने के बाद नमाज़ अपने पास बाक़ी रहे इसके लिए फ़िक्र होनी चाहिए। नमाज़ बनी बनाई दूसरे के पास चली जाएगी अगर दूसरे का आपने हक़ दबाया। किसी की ग़ीबत कर दी। किसी पर तोहमत लगा दी। किसी को ख़्वाह-मख़्वाह बुरा कह दिया। तो यह जितने बन्दों के हक़ हैं, जब आदमी इन्हें अदा नहीं करता तो आपका बना-बनाया अ़मल उसके पास चला जाता है जिसका हक़ दबाया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

मेरी उम्मत का मुफ़्लिस कौन है?

लोगों ने कहा, ऐसा शख़्स जिसके पास रुपये-पैसे न हों।

फरमाया, नहीं! मेरी उम्मत का मुफ़्लिस शख़्स वह है कि नेकियों का ढेर लेकर क़ियामत में आएगा और लोग यूँ कहेंगे कि उसने मुझे गाली दी है, उसने मुझ पर तोहमत लगाई, मेरी ज़मीन दबा ली, मेरा पैसा चुराया। तो सारी नेकियाँ दूसरों के पास चली जाएँगी। फिर एक कहेगा कि अल्लाह पाक मैं तो रह गया। इसने मुझे गालियाँ दी थीं। अल्लाह पाक कहेंगे कि इसकी आमदनी ख़त्म हो गई। अब चल तेरी इतनी बुराईयाँ इसके ऊपर डाल दें। तो यह शख़्स तो नेकियों का ढेर लेकर आया और वह दूसरे के पास चला गया, इसलिए बन्दों के हुकूक़ की अदायगी बहुत ज़रूरी है।

सामूहिक माल में सख़्त एहतियात ज़रूरी

ख़ासकर जो सामूहिक माल होते हैं उनके अन्दर तो बहुत फ़िक्र से

काम करना होगा। सामूहिक मालों में ज़रा बे-एहतियाती हो जाती है तो ऐसे मालों में पकड़ भी बहुत ज़्यादा होती है। इसके अन्दर ज़र्रा बराबर बेफ़िक्री नहीं होनी चाहिए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़्त एहतियात के वाक़िआत

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इसका बड़ा ख़्याल फ़रमाते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे ने एक ऊँट ख़रीदा और उसे मुसलमानों की ज़मीन में चराया। ऊँट मोटा हो गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला, पूछा कितने में ख़रीदा? बताया इतने में, फ़रमाया चराया कहाँ? बताया कि मुसलमानों की चरागाह में।

इरशाद फ़रमाया कि जितने में ख़रीदा था उतने पैसे तू ले ले और बाक़ी जितना नफ़ा हो उसे बेचकर बैतुल-माल (सरकारी इस्लामी ख़ज़ाने) में दाख़िल कर। बाप के कन्धे पर रहकर तू मत खा। क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने पेशी होने वाली है।

एक लड़की लड़खड़ाती हुई आई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा यह किसकी लड़की है? आपके बेटे ने कहा हज़रत! यह आपकी पोती है। फ़रमाया कि यह मेरी पोती है? कितनी दुबली-पतली है। लड़खड़ा रही है। उन्होंने कहा कि जो आप वज़ीफ़ा देते हैं यानी ख़र्चा, वह पूरा नहीं होता। इसलिए ऐसी हो गई। बेटे का मतलब यह था कि हमारा वज़ीफ़ा बढ़ा दें।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इनकार कर दिया और फ़रमाया कि अपना कारोबार ख़ुद कर ले और अपना ख़र्चा ख़ुद उठा। बैतुल-माल (सरकारी ख़ज़ाने) से तुझे नहीं मिलेगा।

तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बड़ी बेचैनी थी। क़ियामत का हद से ज़्यादा ध्यान रहता था।

बहरहाल! अल्लाह पाक ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपने ख़ज़ाने दिखा दिए। उनकी कुंजी दे दी और फिर नमाज़ जानदार बनाने के लिए पाँच तरीक़े बता दिए और नमाज़ को अपने पास महफ़ूज़ रखने के लिए भी बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी ज़रूरी बतलाई। ये छह नम्बर आ गए। लेकिन ये सारे काम मक्का मुकर्रमा में अलग अलग (व्यक्तिगत) तौर पर हुए। इसके बाद मदीना मुनव्वरा जब रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जाना हुआ तो वहाँ पर ये सारे काम सामूहिक तौर पर होने लगे। इस तरह इन छह नम्बरों के ज़रिये हमारे अन्दर सलाहियत पैदा हो जायेगी पूरे दीन पर चलने की।

जंगे-बदर वाली मदद कब आएगी?

मदीना मुनव्वरा में मुसलमानों पर मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) हालात आए। एक हाल तो बदर का आया। तो अगर बदर जैसा मुसीबत वाला हाल आ जाए तो उसके अन्दर तीन काम करेंगे तो बदर वाली मदद आएगी।

बदर के अन्दर इस्लाम के सभी बिगड़े क़िस्म के दुश्मन आए थे, इस्लाम को बिल्कुल ख़त्म कर देने के लिए। वहाँ पर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने तीन काम किए:

1. सब्र। 2. तक़्वा (परहेज़गारी)। 3. गिड़गिड़ाना।

बस क़ियामत तक के लिए उसूल मालूम हो गया कि जब बहुत परेशानी चारों तरफ़ से घेर ले तो एक तरफ़ तक़्वा (परहेज़गारी) और एक तरफ़ अल्लाह से ख़ूब गिड़गिड़ाना हो।

بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلَافٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ٥ (پاره–۴ ال عمران)

अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा होगा तो अल्लाह मदद करेगा।

और तीसरी चीज़ को इस तरह बयान फ़रमाया:

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ (پارہ–۹)

मदद का दिन याद करो, जब तुम गिड़गिड़ा रहे थे। तो अल्लाह पाक ने कबूल किया तुम्हारा गिड़गिड़ाना और कहा कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा।

अल्लाह की मदद कब उठ जाती है?

और देखो! अल्लाह तआला की आई हुई मदद उठ जाती है चार बातों से:

1. एक तो दुनिया का इरादा करना। दीन का काम करने वालों में जब दुनिया का इरादा हो जाता है तो निम्नलिखित बाकी चीज़ें पैदा हो जाती हैं:

2. राय में कमज़ोरी। 3. आपस में खींचातानी। 4. बात का न मानना।

जब दीन का काम करने वालों में ये चार चीज़ें आ जाती हैं तो आई हुई मदद आसमान की तरफ़ चली जाती है। इससे काम करने वाले अमल को छोड़ते हैं। और अमल को अगरचे थोड़े आदमी छोड़ते हैं लेकिन तकलीफ़ और आज़माईश सब पर आती है। यहाँ तक कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर भी तकलीफ़ आई।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ (پارہ– ٤)

अल्लाह का वायदा जंगे उहुद के अन्दर भी पूरा हुआ कि तुम आगे बढ़ते जा रहे थे लेकिन तुम्हारे अन्दर बातें पैदा हो गईं।

"हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम्" राय में कमज़ोर पड़ गए।

"व तनाज़अ्तुम्" और आपस में कशाकश (खींचातानी और तकरार) में पड़ गए।

"व असैतुम्" बात न मानी।

"मिम्बअ्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बून" तुम्हारी महबूब चीज़ (काफ़िरों पर फ़तह हासिल करना) अल्लाह ने तुमको दिखा दिया।

(सूरः आलि इमरान पारा 4)

लेकिन तीन बातें तुम्हारे अन्दर पैदा हो गईं। और क्यों हुईं? यही पहली और चौथी वजह है।

"मिन्कुम् मंय्युरीदुद्दुन्या" एक मजमा तुम में का दुनिया का इरादा करने लग गया। अगरचे वह दुनिया हलाल थी, माले ग़नीमत के माल के तौर पर थी।

मदद उठा दिए जाने की पहली मस्लेहत, आज़माईश

दुनिया की तरफ़ निगाह का जाना यह दिल के अन्दर ग़ुबार पैदा कर देता है।

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ (پاره–٥)

उनमें वे लोग भी थे जो आख़िरत की कामयाबी और सरबुलन्दी का इरादा कर रहे थे। उनका मक़सद अपने रब को राज़ी करने का था। और बस! इसलिए आख़िर में क्या हुआ?

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللّٰهُ ذُوْفَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ٥ (ال عمران پاره– ٤)

फिर पाँसा पलट दिया, उनके ऊपर ग़ालिब आने से तुमको फेर दिया।

और ऐसा क्यों किया? ताकि तुमको आज़माईश की भट्टी में डाले। लेकिन अब पन्द्रहवीं सदी वाले सहाबा की शान में गुस्ताख़ियाँ करेंगे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को माफ़ नहीं करेंगे। तो अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि पन्द्रहवीं सदी वाले सहाबा को माफ़ करें या न करें मैं तो माफ़ कर चुका। क्योंकि उन्होंने गिड़गिड़ाकर माफ़ी माँग ली। तो देखो क़ियामत तक आने वाले लोगों को उसूल बता दिए और अल्लाह से

माफ़ी माँग कर खुद भी साफ़ हो गए।

मोहतरम दोस्तो! जिन लोगों की निगाह दुनिया की तरफ़ चली गई उनके ऊपर दुनिया का गुबार आ गया था, उनको आज़माईश की भट्टी में डाला ताकि फ़िल्टर हो जाए। जिस ईमान के ऊपर अल्लाह की मदद आती है उसमें दुनिया का गुबार आ गया तो अल्लाह ने फ़िल्टर करने के लिए आज़माईश की भट्टी में डाला। तो एक मस्लेहत अल्लाह की यह थी कि:

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا (پاره-٤)

और क़ियामत तक ऐसा होता रहेगा। जब काम करने वालों की निगाह दुनिया की तरफ़ जाती है तो बाज़ मर्तबा अल्लाह पाक आज़माईश की भट्टी में डाल देते हैं ताकि फ़िल्टर हो जाए।

दूसरी मस्लेहत, रूहानी ताक़त में इज़ाफ़ा

सवाल यह पैदा होता है कि जिनका इरादा आख़िरत की भलाई का था। ख़ुदा की रज़ामन्दी को हासिल करने का था। उनको आख़िर आज़माईश की भट्टी में क्यों डाला?

इसलिए! ताकि रूहानी ताक़त बढ़ जाए। आख़िरत के दर्जे बुलन्द हो जाएँ:

يَأْلَمُوْنَ كَمَا تَأْلَمُوْنَ، وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَالَا يَرْجُوْنَ.

यानी बड़ी-बड़ी उम्मीदें हैं। अल्लाह के बड़े-बड़े इनाम और दर्जे उन्हें मिलेंगे।

तीसरी मस्लेहत, शहादत से सम्मानित करना

मेरे मोहतरम दोस्तो! एक मस्लेहत उसमें यह थी कि बाज़ लोगों की मौत का वक़्त और जगह और सबब तय था। उनको शहादत का सवाब देना था।

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمُ الشُّهَدَآءَ

चौथी मस्लेहत, खरे और खोटे की पहचान

और एक मस्लेहत उसमें यह भी थी कि जब दीन का काम चलता है और दीन वालों की आवभगत ज़्यादा होती है तो उस मौक़े पर जो स्वार्थी होते हैं वे भी दीन वालों के साथ घुस जाते हैं और अपनी ग़र्ज़ों को पूरी किया करते हैं। जब खरे और खोटे मिल जाते हैं तो अल्लाह पाक आज़माईश की भट्टी में डाल देते हैं जिससे ज़ाहिर हो जाए कि जो जमा रहेगा वह खरा होगा और जो खोटा होगा वह उखड़ जाएगा।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ (پاره– ٤)

अल्लाह पाक फ़रमाता है कि हम इसी तरह ईमाना वालों को नहीं छोड़ते बल्कि हम आज़माईश की भट्टी में डालेंगे ताकि खरे और खोटे अलग-अलग हो जाएँ। जो खरे होंगे वे आख़िर तक जमे रहेंगे और जो खोटे होंगे वे उखड़ कर हट जाएँगे। तो ये विभिन्न मस्लेहतें आज़माईश की भट्टी में डालने की थीं।

क़ियामत तक के लिए रहबरी

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक सीरत हम लोगों की रहबरी कर रही है कि मुख़्तलिफ़ (विभिन्न और अलग-अलग) हालात में अल्लाह पाक की मदद किस तरह मिलती है, और यह बात भी पता चलती है कि ऐसे हालात आते क्यों हैं? चुनाँचे ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ (ख़न्दक़ की लड़ाई) के अन्दर तो हैरत-अंगेज़ (हैरान कर देने वाले) हालात आ गए। ऊपर से, नीचे से, हर जगह से हमले की ख़बरें हैं।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا، هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ

وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالاً شَدِيْداً ○ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اِلَّا غُرُوْرًا ○ (احزاب پاره-۲۱)

ये मन्ज़र (दृश्य) जो आज पूरी दुनिया में है। यह हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर इसलिए आए ताकि क़ियामत तक रहबरी हो।

जब तुम्हारे ऊपर चारों तरफ़ से धावा बोल दिया। ऊपर से भी, नीचे से भी, आँखें पथरा गईं और दिल हलक़ से जा लगे। और ख़्यालात आने-जाने लगे। तब ईमान वालों को ईमान की भट्टी में डाला और ख़ूब हिला दिया। और वे लोग जिनके दिलो में फ़ितने थे उन्होंने कहा कि अल्लाह पाक का रसूल से जो वायदा था वह धोखा है।

यह बात मेरे दोस्तो! ऐसा शख़्स ही ज़बान पर ला सकता है जिसके अन्दर बुराईयाँ हों, जिसकी ज़बान पर ऐसी बात आई समझो कि उसके दिल में बुराई है।

परेशान करने वाले हालात भी ईमान की बढ़ोतरी का सबब

तो ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर जब चारों तरफ़ से परेशानी आई तो ईमान वाले कहने लगे:

هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ○

इन परेशान करने वाले हालात के अन्दर उन पक्के ईमाना वालों का ईमान बढ़ गया। अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी और बढ़ गई।

ईमान वालों की दो क़िस्में

ईमान लाने वालों में दोनों क़िस्म के थे। एक क़िस्म वह थी कि

अल्लाह से जो वायदा किया था उसे सच कर दिखाया और अल्लाह के नाम पर जान दे दी, और बाक़ी वे हैं जो इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब अल्लाह की बात मानते-मानते हम जान दे दें। ज़र्रा बराबर उनके अन्दर तब्दीली नहीं आई। न तो हालात ख़राब होने पर बुज़दिली (कायरता) आई और न अच्छे हालात आने पर मटकने लगे। जिसको अल्लाह पाक ने इस तरह बयान फ़रमाया:

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا (پاره – ٢١)

मुख़ालिफ़ हालात आते क्यों हैं?

अल्लाह पाक ये हालात अपने बन्दों पर इसलिए लाए ताकि जो सच्चे हैं वे सच कर दिखाएँ। और जो बिगड़े हुए लोग हैं उनको या तो अल्लाह सुधार देगा या अल्लाह उन्हें जहन्नम के अन्दर भेज देगा:

لِيَجْزِىَ اللّٰهُ الصَّادِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِيْنَ (احزاب پاره– ٢١)

मेरे भाईयो! देखो नीयत यह करो कि अल्लाह पाक बिगड़े हुए लोगों को सुधार दें ताकि उनको लेकर हम जन्नत में जाएँ। यह नीयत पूरी ज़िन्दगी के लिए कर लें। देखो ना! नबी के करीमाना किरदार को, जो हज़रत इक्रिमा के साथ आपने बरता, नतीजा यह हुआ कि आगे अबू जहल के घराने के अस्सी लोगों ने दीन के लिए जान कुरबान कर दी। पूरा घराना कुरबान हो गया, सिर्फ़ एक लड़की और एक लड़का उस ख़ानदान का बचकर मदीना मुनव्वरा पहुँचे। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी आपस में शादी कर दी ताकि यह ख़ानदान ख़त्म न हो जाए।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह के दीन के लिए कुरबानियाँ देनी हैं। अगर अल्लाह के दीन के लिए कुरबानियाँ नहीं देंगे तो बहुत-सी ना-मुनासिब चीज़ों पर कुरबानियाँ देनी पड़ेंगी। इसलिए आप हज़रात यह नीयत करें कि पूरे आ़लम के अन्दर जमाअ़तें भेजनी हैं। इन्शा-अल्लाह।

तक़रीर (4)

लन्दन से आये हुए लोगों के सामने मर्कज़ हज़रत निज़ामुद्दीन देहली में नवम्बर 1994 ई० को खुसूसी ख़िताब

मेरे मोहतरम दोस्तो! जैसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यतीम थे और हज़रत हलीमा ने यतीमी की हालत में गोद लिया था। तो अल्लाह के नबी यहाँ पर जिस पाकीज़ा तरीक़े और जिस दीन को लेकर आए वह पाकीज़ा तरीक़ा और दीन भी आज दुनिया के अन्दर यतीम बन चुका है। पौने चार सौ करोड़ जो ईमान नहीं लाए कलिमा नहीं पढ़ते वे तो इस यतीम को धक्के मारते ही हैं, लेकिन जो कलिमा पढ़ने वाले सौ सवा सौ करोड़ पूरी दुनिया में हैं उनका यह हाल है कि इस यतीम दीन को अपनी दुकान में दाख़िल नहीं होने दोते। अपने घरों में दाख़िल नहीं होने देते, अपनी शादी में दाख़िल नहीं होने देते। इसलिए कि पूरी दुनिया का जैसा मुआ़शरा (समाजी ज़िन्दगी) है उस मुआ़शरे (समाज) के अन्दर मुसलमान भी आ गया। हालाँकि यह समाज तबाही और बरबादी लाने वाला है।

इसी तक़रीर का एक हिस्सा

तक़रीर (4)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَ
وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَ
مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَنَشْهَدُ اَ
سَيِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰ
وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

अगर माद्दी चीज़ें सन्तुलित हों तो दुनिया का निज़ाम ठीक चलता है

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह जल्ल जलालुहू ने जिस तरह माद्दी (मूल तत्व की) लाईन से इस सन्तुलन के साथ दुनिया के निज़ाम को चलाया है कि आग, पानी, हवा और मिट्टी, इसका जब सन्तुलन बाक़ी रहता है तो दुनिया का निज़ाम ठीक चलता है। अगर हवा तेज़ चल गई तो तबाही, पानी ज़्यादा आ गया सैलाब की शक्ल बन गई तो तबाही, ज़मीन हिल गई तो तबाही, किसी पहाड़ से अगर आग निकल कर आ गई तो तबाही। लेकिन ये चीज़ें अगर सन्तुलन के साथ हों तो दुनिया का निज़ाम (व्यवस्था) ठीक चलता रहता है।

रूहानी निज़ाम की तरतीब

इसी तरह अल्लाह तआला ने रूहानी लाईन के दुरुस्त होने के

लिए इनसान की जान और माल को चार चीज़ों पर सन्तुलन के साथ लगा दे तो आलम (दुनिया) का रूहानी निज़ाम (व्यवस्था) भी सही होगा।

विश्व शान्ति के हासिल होने का ज़रिया

रूहानी निज़ाम की तरतीब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन की मुबारक ज़िन्दगियों के हालात से मालूम होगी।

जान की ताक़त और माल का सरमाया, ये दो चीज़ें अल्लाह ने इनसान को दी हैं। इनका इस्तेमाल अगर चार चीज़ों में हो और तरतीब के साथ हो तो पूरे आलम के अन्दर सदियों पुश्त आगे तक के लिए अमन व अमान का क़ायम रहना, पूरे आलम के अन्दर दीन का फैलना, रहमतुल्-लिल्आलमीनी का मुज़ाहरा होना, यह होता रहेगा, और जो-जो मरता रहेगा उसका ताल्लुक़ जन्नत से होता रहेगा।

इसलिए जान व माल को सन्तुलन के साथ लगाना होगा। एक अपनी ज़रूरतों पर, दूसरे इबादतों पर, तीसरे अख़्लाक़ियात पर, चौथे दावत पर। यानी दावत, अख़्लाक़, इबादतें, ज़रूरतें, इन चार चीज़ों पर इनसान को जान व माल एक तरतीब के साथ लगाना होगा।

इनसान में चार निस्बतें

इनसान में अल्लाह ने चार निस्बतें दी हैं। एक निस्बत तो अल्लाह ने दी है आम जानदारों वाली, दूसरी निस्बत फ़रिश्तों वाली, तीसरी निस्बत दी ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने वाली, और चौथी निस्बत दी है नबियों की नियाबत (प्रतिनिधित्व) वाली।

फिर चौथी निस्बत नुबुव्वत की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में दो हिस्से हैं। एक है नियाबत अम्बिया की। और एक है नियाबत सैयिदुल्-अम्बिया की। (अलैहिमुस्सलातु वत्तस्लीम)

जानदार होने की निस्बत

इनसान में पहली निस्बत जो आम जानदारों वाली दी है उसके असर से भूख का लगना और उस वक़्त खाना, प्यास के वक़्त पानी का पीना, नर-मादा जैसे मिलते हैं, नर-मादा का मिलना। रहने के लिए मकानात का बनाना। ज़रूरतों का पूरा करना। पेशाब पाख़ाना, गर्मी, सर्दी का बचाव, बच्चों को पालना। ये बातें सारे जानदारों में मौजूद हैं। यह आम जानदारों वाली निस्बत है। जिसको अ़रबी ज़बान में "हैवानियत" कहते हैं। मैं "हैवानियत" का लफ़्ज़ कहते हुए डरता हूँ कि जो ज़रा कम उर्दू जानने वाला है वह समझेगा कि हमें जानवर बना दिया। इसलिए एहतियात का लफ़्ज़ जानदार कहा। वरना असल अ़रबी का लफ़्ज़ हैवानियत है।

इनसान और दूसरे जानदारों में फ़र्क़

भूख पर खाना, प्यास पर पीना आम जानदारों में भी है और इनसान में भी। यानी अपने इनसानी तक़ाज़ों का पूरा करना इसकी अल्लाह तआ़ला ने इजाज़त दे दी है लेकिन दो पाबन्दियों के साथ।

एक पाबन्दी इस बात की है कि अल्लाह के हुक्म की रियायत हो। और दूसरी पाबन्दी यह है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की रियायत हो। इन दो पाबन्दियों के साथ खाना-पीना, मियाँ-बीवी का मिलना और मकान बनाना, कपड़ों का बनाना, कारोबार करना, शादियों का करना, इन दो पाबन्दियों के साथ अल्लाह पाक ने सब की इजाज़त दी है।

अल्लाह ही ने इनसान में ये तक़ाज़े रखे हैं। इसलिए इन तक़ाज़ों को पूरा करने की इजाज़त भी दी है। मगर ये दोनों पाबन्दियाँ जानवरों पर नहीं हैं। बिल्ली उसको तो जहाँ दूध मिल जाए वह पी लेगी। इससे ज़लज़ला नहीं आ जाएगा। बिल्ली को जहाँ कहीं चूहा मिल जाए खा

लेगी। यह कोई ज़ुल्म नहीं। इसी तरह जानवर को जहाँ कहीं पेशाब पाख़ाना की ज़रूरत हुई वह सबके सामने कर लेगा। उस पर कोई पाबन्दी नहीं। लेकिन पाबन्दियाँ इनसान पर हैं। यह फ़र्क़ है तमाम इनसानों और जानवरों में।

फ़रिश्तों वाली निस्बत

दूसरी निस्बत अल्लाह ने इनसानों को फ़रिश्तों वाली दी है। यानी ख़ुदा की इबादत करना, यह फ़रिश्तों वाली निस्बत है जो जानवरों में नहीं।

इसलिए इनसान के अन्दर फ़रिश्तों वाली निस्बत से इबादत आई। और जानवरों वाली निस्बत से तक़ाज़ों का पूरा करना आया। तो जब इनसान ख़ुदा की इबादत करेगा। अपने तक़ाज़ों को दबाकर करेगा। मगर फ़रिश्ता ख़ुदा की जब इबादत करेगा तो उसे तक़ाज़ा दबाना नहीं पड़ता।

इनसान एक बीच की मख़्लूक़ है

भूख और प्यास, पेशाब और पाख़ाना, बीवी और बच्चे तथा थकान, ये तक़ाज़े फ़रिश्तों में नहीं। फ़रिश्ता जो इबादत करेगा तक़ाज़ा दबाए बग़ैर करेगा। और जानवर सिर्फ़ तक़ाज़े पूरे करेगा। इबादत नहीं करेगा। तो फ़रिश्ता इबादत करेगा, उसको तक़ाज़े नहीं हैं और जानवर तक़ाज़े पूरे करेगा उसपर इबादत नहीं। जबकि इनसान इबादत करेगा तो तक़ाज़े भी दरमियान में रुकावट हैं। जिन्हें दबाकर इबादत करेगा इसलिए इनसान एक बीच की मख़्लूक़ है।

फ़रिश्तों और इनसान की इबादत का फ़र्क़

इनसान के अन्दर अल्लाह ने तक़ाज़े भी रखे हैं और इबादत का हुक्म भी दिया है। इसलिए इनसान रोज़ा रखेगा तो खाना-पीना और

बीवी का तक़ाज़ा दबाकर रखेगा। नमाज़ पढ़ेगा तो नींद का तक़ाज़ा दबाकर नमाज़ पढ़ेगा। असर की नमाज़ ग्राहकों का तक़ाज़ा दबाकर पढ़ेगा। ज़कात देगा तो माल का तक़ाज़ा दबाकर देगा। हज करेगा तो वतन का तक़ाज़ा कुरबान करके हज करेगा, तो आराम व राहत का तक़ाज़ा दबाए बग़ैर हज नहीं कर सकता। इसी तरह अगर इबादत को फैलाने के लिए दावत का काम करेगा तो भी तक़ाज़े उसे दबाने पड़ते हैं। वतन का छोड़ना, खाने-पीने का आगे-पीछे हो जाना, मौसम की तब्दीली को बरदाश्त करना, ये सारे तक़ाज़ों को दबाए बग़ैर इबादत को फैलाने वाली दावत का काम भी इनसान नहीं कर सकता। फ़रिश्तों और इनसानों की इबादत में यही बड़ा फ़र्क़ है।

इनसान इबादत में तरक़्क़ी करके ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनता है

अगर इनसान इबादत को छोड़ दे और सिर्फ़ तक़ाज़ों को पूरा करने में लग जाए। सिर्फ़ खाने और कमाने में लग जाये तो यह इनसान जानवर बन जाएगा बल्कि जानवर से ज़्यादा बदतर हो जाएगा। और अगर यह इनसान अपने तक़ाज़ों को दबाकर ख़ुदा की इबादत में ताक़त पैदा करे तो फिर यह इनसान फ़रिश्तों से आगे बढ़ जाएगा और इतना बढ़ेगा कि ख़ुदा का ख़लीफ़ा बन जाएगा।

फ़रिश्ता अगर करोड़ों साल ख़ुदा की इबादत करेगा तो वह ख़ुदा का ख़लीफ़ा नहीं बन सकता। उसमें इसकी योग्यता नहीं। और इनसान यह सिर्फ़ साठ-सत्तर साल की ज़िन्दगी में ख़ुदा का ख़लीफ़ा बन सकता है।

ख़ुदा का ख़लीफ़ा कब बनेगा? अगर इबादत के अन्दर ताक़त पैदा करे तब यह फ़रिश्तों से आगे बढ़कर ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनता है।

ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनने का मतलब

ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनने का मतलब है उसके अन्दर अख़्लाक़ का आना और अख़्लाक़ के आने का मतलब है दूसरों की ज़िन्दगी बनाने पर अपनी जान और माल का लगाना।

तो जब इस इनसान को ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनना है और इसमें ख़ुदा की ख़िलाफ़त के जौहर आने हैं तो जिस तरह अल्लाह रज़्ज़ाक़ है तो इनसान के अन्दर भी ख़ुदा की रज़्ज़ाक़ी की सिफ़त का एक मुज़ाहरा होगा। यानी भूखों को खिलाना। यह इनसान भूखों को खाना खिलाकर अल्लाह की सिफ़ते रज़्ज़ाक़ी का मुज़ाहरा करेगा। इसी तरह यह इनसान लोगों के ऐबों पर पर्दे डालेगा और सत्तार (यानी अल्लाह जो सब के ऐबों को छुपाता है) की ख़िलाफ़त वाला काम करेगा। लोगों की ग़लतियों को माफ़ करेगा और 'ग़फ़्फ़ार' (अल्लाह बख़्शने वाले) की ख़िलाफ़त वाला काम करेगा। यह लोगों पर रहम करेगा क्योंकि रहीम का ख़लीफ़ा है। यह लोगों पर करम करेगा क्योंकि करीम का ख़लीफ़ा है। ग़लतियों को माफ़ करेगा क्योंकि ग़फ़्फ़ार का ख़लीफ़ा है। और जब दुनिया में ना-मुनासिब हरकतें होंगी तो फिर जिहाद भी करेगा क्योंकि यह 'क़ह्हार' का भी ख़लीफ़ा है। तो यह चूँकि अल्लाह का ख़लीफ़ा है इसलिए इसके अन्दर अख़्लाक़ आएँगे।

जिहाद व क़िताल अख़्लाक़ से बरी नहीं

जिहाद व क़िताल (अल्लाह के रास्ते में दीन की कोशिश और उसमें आड़े आने वाली ताक़त को पाश-पाश करने) का जो हुक्म है वह भी अख़्लाक़ से बरी नहीं। चुनाँचे पूरे बदन के अन्दर अगर ज़हरीला फोड़ा है तो उस ज़हरीले फोड़े को काटकर बदन की हिफ़ाज़त करना यह समझदारी वाली बात है और बदन के साथ एहसान भी है, इसी तरह दुनिया के अन्दर अगर अबू जहल और अबू लहब जैसे

लोग फ़ितना व फ़साद मचा रहे हों तो उन फोड़ों का ऑप्रेशन करके ख़त्म कर देना और दुनिया में अमन व अमान क़ायम कर देना यह भी अल्लाह की ख़िलाफ़त वाला ही काम है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जितनी ख़ुदा की ख़िलाफ़त वाली बात इनसान के अन्दर आती जायेगी यह इनसान अख़्लाक़ वाला बनता जाएगा। अख़्लाक़ की बिना पर यह अपने जान व माल को लगाएगा। भूखों को खाना खिलाने पर, नंगों के पहनाने पर, अविवाहित लोगों की शादियाँ कराने पर और इसी तरह बग़ैर मकान वालों के मकान बनाने पर, परेशान हालों की परेशानी दूर करने पर, यह इनसान अपनी जान और माल को बतौर अख़्लाक़ के लगाएगा।

अख़्लाक़ को सब अच्छा समझते हैं

अख़्लाक़ एक ऐसी चीज़ है कि इसे दुनिया का हर एक आदमी अच्छा समझता है। अख़्लाक़ की तरफ़ सारी दुनिया का सर झुक जाता है। मुसलमान हो या ग़ैर-मुस्लिम या कि दहरिया (ख़ुदा के वजूद को न मानने वाला) हो, हर शख़्स इसे पसन्द करता है।

मोहतरम दोस्तो! तीन चीज़ें मैंने बताईं कि ज़रूरतों का पूरा करना इनसान के जानदार होने के एतिबार से है, और इबादत का करना फ़रिश्तों वाली निस्बत इसके अन्दर होने की वजह से है और अख़्लाक़ का बरतना ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने की वजह से है।

अख़्लाक़ और ख़िलाफ़त दावत के ज़रिये हासिल होगी

लेकिन दोस्तो! पूरी दुनिया के बसने वाले इनसानों को जानवरों के दायरे और ख़ाने से निकाल कर इबादत के ज़रिये फ़रिश्तों की जमाअत में लाकर इबादत में ताक़त पैदा कराकर अख़्लाक़ तक पहुँचाना और ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनाना यह नबियों वाली नेमत का हासिल होना दावत के काम के ज़रिये होगा, नबियों ने इनसानों को

जानवरपने से निकाल कर इबादतें कराकर अख़्लाक़ तक पहुँचाया और खुदा की ख़िलाफ़त वाले जौहर उनमें उजागर किए।

नबियों वाला दावत का काम अब मुसलमानों का फ़रीज़ा

हमारे नबी आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नबियों का आना बन्द हो गया। अब नबियों वाला दावत का काम उस मुसलमान को करना है जिसने कलिमा पढ़ा है।

बाज़ारों में जाकर लोग जब अपने तक़ाज़े पूरे करने में लगे हों तो हलाल व हराम का ख़्याल किए बग़ैर हुक्मे इलाही को तोड़कर जो अपने तक़ाज़ों के पूरा करने, खाने कमाने में लगे हों, उसके अन्दर से लोगों को निकालना, मस्जिदों में लाना, उनको इबादत कराना, हल्क़े में बैठाना, ज़ेहन बनाकर जमाअ़तों में निकालना, उनके अन्दर अख़्लाक़ और हमदर्दी का लाना और उन्हें अल्लाह के दीन की दावत के लिए खड़ा करना, अब यह काम इस उम्मत का होगा।

लोगों को दीन का दावत देने वाला बनाना यह ख़त्मे नुबुव्वत वाला काम है

दावत के ज़रिये जानवरपने से लोगों को निकाल कर इबादत के रास्ते से फ़रिश्तों जैसा बनाना और फिर इबादत के अन्दर ताक़त पैदा कराकर उनके अन्दर अख़्लाक़ का लाना यह काम तो है पिछले नबियों का। लेकिन सय्यिदुल अम्बिया अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का काम इससे आगे है। वह यह कि अख़्लाक़ वाला बनाकर फिर उसे दीन का दाई (दावत देने वाला) बनाना।

क्योंकि खुद दाई (दीन का दावत देने वाला) बनना तो पिछले नबियों का काम हुआ। एक है लोगों को दाई बनाना। यह ख़त्मे

नुबुव्वत वाला काम हुआ।

अपने इलाक़े में दावत का काम करना यह नबियों की नक़ल है

मक़ामी काम करना। मक़ाम पर दावत की फ़िज़ा का बनाना। तालीम के हल्क़ों का क़ायम करना। ज़िक्र व तिलावत की फ़िज़ा का बनाना, गश्तों का करना, घर-घर दर-दर जाकर कलिमे की दावत का देना, हर घर में तालीम के हल्क़ों का क़ायम करना, हर घर में से एक-एक आदमी को निकालना, मस्जिदों के अन्दर आकर उन बस्तियों के रहने वालों में मस्जिद के ज़रिए काम करना। यह सारा मक़ामी काम नबियों वाला काम है। नबियों ने अपने-अपने मक़ाम पर काम किया।

मूसा अ़लैहिस्सलाम ने मुल्के मिस्र में काम किया। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने शहरे मद्‌यन में काम किया।

पूरे आ़लम में दावत के काम की फ़िक्र सय्यदुल-अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम है

दावत का काम अपने इलाक़े में करना यह नबियों का काम है। लेकिन पूरे आ़लम की फ़िक्र करके दावत का यह काम पूरे आ़लम के अन्दर जारी करने की कोशिश करना और अपने मक़ाम से जमाअ़तें बना-बनाकर पूरे आ़लम के अन्दर भेजना यह सय्यिदुल-अम्बिया (तमाम नबियों के सरदार) सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का काम है। अल्लाह के रास्ते में निकलना। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दोनों काम किये हैं। पिछले नबियों वाला काम भी किया कि अपने मक़ाम पर रहते हुए दावत की फ़िज़ा बनाई और ख़त्मे नुबुव्वत वाला भी काम किया कि दाई (दीन के दावत देने वाले) तैयार करके उनको अल्लाह के रास्ते में भेजा, और लोगों में ऐसा माहौल बनाया। फिर उस माहौल को हरकत दे दी।

दावत के माहौल का नतीजा

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा का माहौल बनाया और फिर हरकत में जो आया तो मदीना मुनव्वरा में एक पाकीज़ा माहौल दावत का बना, जिसके ज़रिये बड़े बेहतरीन अख़्लाक़ बने, इबादात में बड़ी ताक़त आ गई और तक़ाज़ों का पूरा करना ज़रूरत के दर्जे में आ गया, फ़ुज़ूलियात (ज़ायद और बेकार की चीज़ों) के दर्जे में नहीं रहा जबकि पहले तक़ाज़े फ़ुज़ूलियात के दर्जे में थे। ज़रूरत से ज़्यादा खाना-पीना और मकान का बनाना यह फ़ुज़ूलियात में आता है।

इनसान अगर फ़ुज़ूलियात में आया तो शैतान की तरफ़ जा रहा है। जानवरपने से निकल कर शैतानपने के अन्दर आ गया।

اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلاً ۝ (پاره-۱۹)

वे बराबर हैं मवेशियों के, बल्कि वे ज़्यादा ही बहके हुए हैं सही रास्ते से।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पहला काम

नबी पाक के हालात को देखोगे तो सब से पहला काम जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किया है वह दावत के ज़रिये कलिमे वाला यक़ीन और अल्लाह का यक़ीन दिलों के अन्दर पैदा करना है। दिल ईमान की ताक़त से भरा हुआ हो, घर-घर, दर-दर कलिमे की दावत को लेकर जा रहे हों। यही पहला काम है जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किया और सहाबा से कराया है, और हर नबी ने भी किया है।

दावत से ख़िलाफ़त तक

दावत के ज़रिए ईमान की ताक़त बनेगी। अल्लाह से ताल्लुक़ क़ायम होगा। अल्लाह के ज़ाबते मालूम होंगे। इबादतों में ताक़त पैदा होगी। फिर ये इबादतें इनसान को अख़्लाक़ तक पहुँचा देंगी।

जब दावत का काम नहीं होगा तो ईमान कमज़ोर हो जाएगा। अल्लाह का डर निकल जाएगा। फिर इबादतों की तरफ़ भी आदमी नहीं चलेगा। अगर चलेगा भी तो बेताक़त इबादत होगी। जो उसे अख़्लाक़ तक नहीं पहुँचाएगी। एक तरफ़ तो वह नमाज़ पढ़ेगा और दूसरी तरफ़ फिर वह रिश्वत लेगा। एक तरफ़ वह हज करेगा और दूसरी तरफ़ वह लोगों की ज़मीनें दबाएगा। एक तरफ़ वह रोज़ा रखेगा और दूसरी तरफ़ वह लड़ाईयाँ लड़ेगा।

उसकी इबादत अख़्लाक़ तक नहीं पहुँचातीं, क्योंकि उसके अन्दर ईमान की ताक़त न रही। ईमान की ताक़त इसलिए न रही कि उसको दावत की फ़िज़ा न मिली।

दावत की फ़िज़ा में ईमान की ताक़त है। और ईमान की ताक़त से इबादत में ताक़त होगी और इबादत में ताक़त होने से अल्लाह का ताल्लुक़ मिला। अल्लाह का ताल्लुक़ मिला तो अल्लाह तआ़ला के ख़लीफ़ा होने की बात उसमें आ गई।

कचेहरियों और जेलख़ानों से अख़्लाक़ नहीं आएगा

इबादत में ताक़त होगी तो इनसान अख़्लाक़ वाला बनेगा। सिर्फ़ उसका विभाग क़ायम करने से, कचेहरियाँ बनाने से जेलख़ाने बनाने से दुनियां में अख़्लाक़ नहीं आ जाएगा। बल्कि अख़्लाक़ और ज़्यादा गिर रहे हैं। इबादत में जब ताक़त पैदा होगी तब आदमी अख़्लाक़ वाला बनेगा क्योंकि अल्लाह का ताल्लुक़ जब उसे मिलेगा तो फिर अल्लाह का ख़लीफ़ा होने वाली बात उसमें मुन्तक़िल हो जाएगी।

दुनिया का निज़ाम अस्त-व्यस्त कैसे होता है?

जब यह दावत इनसान से छूटी तो ईमान कमज़ोर बना, आख़िरत की फ़िक्र छूटी, दुनिया की अहमियात आई, माल से ज़िन्दगियों के बनने का ख़्याल पैदा हो गया। इबादतों के अन्दर माल कमाने का ढंग

दिखाई दिया, इबादतें छूटीं। और इबादतें कीं भी तो बेजान। फिर माल और जान के ज़रिये अख़्लाक़ का बरतना न रहा तो इनसान के अन्दर जानवरपना आ गया, और जब जानवरपना आ गया तो पूरे आलम का निज़ाम दर्हम-बर्हम (अस्त-व्यस्त) हो गया।

इनसान की शक्ल में जानवर

जब इनसान अपनी सारी ताक़त खाने, कमाने और तक़ाज़ों के पूरा करने पर लगा देता है, और उसकी जान व माल इबादतों व अख़्लाक़ और दावत पर नहीं लगती तो फिर यह जानवर से ज़्यादा बुरा बन जाता है।

जानवर की तीन क़िस्में

जानवर तीन क़िस्म के होते हैं। एक जानवर तो वह होता है जो अपने तक़ाज़े पूरे करता है दूसरे को नुक़सान पहुँचाए बग़ैर, जैसे कबूतर और दूसरी चिड़ियाँ कि दाना चुग लिया और वापस आ गए। इनसान भी जब जानवरपने पर आता है तो उसका अपना खाना-कमाना, बच्चों को पालना, अपना मकान बनाना, अपनी शादियाँ अपनी ज़रूरतें होती हैं, दूसरे का चाहे जो कुछ हो।

दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा

इनसान पहले तो चिड़ियों और कबूतर जैसा जानवर बनता है। अगर उसने अपना इलाज नहीं किया तो फिर उससे दूसरे क़िस्म का जानवर बनता है। जो ज़्यादा ख़तरनाक होता है कि दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा करता है, जैसे शेर और चीता कि बकरी की जान गई तो गई अपना पेट भरा। दूसरे को नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा और फ़ायदा हासिल कर लेना। इनसान इस दर्जे पर आ जाता है। चोरी है, डकैती है, रिश्वत है, मिलावट है, झूठ है, ग़बन है, ख़ियानत है। ये ख़राबियाँ उसके अन्दर आ जाती हैं। जिसमें दूसरे को

नुक़सान पहुँचाकर अपना नफ़ा और फ़ायदा करता है।

इनसान तीसरे दर्जे का जानवर कब बनता है?

अगर इनसान ने अपने आपको नहीं संभाला और इलाज नहीं किया तो फिर वह तीसरे नम्बर का जानवर बनता है कि वह दूसरों को नुक़सान पहुँचाता है, अपने को नफ़ा मिले या न मिले। जैसे साँप-बिच्छू यह किसी को काट खाते हैं तो सामने वाले को तकलीफ़ तो हुई मगर अपना पेट नहीं भरा। अपना कोई नफ़ा नहीं हुआ। साँप का अपना कोई फ़ायदा नहीं हुआ और सामने वाले की जान चली गई। तो इनसान इस तीसरे नम्बर का जानवर बनता है। इस क़िस्म का नाम है हसद, कीना, बुग़्ज़ और कपट। यह आदमी के अन्दर पैदा हो जाता है तो पूरी कोशिश इस बात की करता है कि दूसरे को नुक़सान पहुँचे। चाहे मुझे नफ़ा हो या न हो।

जानवरों से ज़्यादा बदतर

जब इनसान इन तीनों क़िस्मों जैसा जानवर इस दुनिया के अन्दर बन जाता है तो जानवरों की तरह आपस में लड़ता रहता है। जैसे कुत्ते आपस में लड़ते रहते हैं और सींग वाली बकरी बग़ैर सींग वाली बकरी को मारती रहती है। इसी तरह आदमी भी आपस में लड़ते हैं। बल्कि जानवरों से ज़्यादा बदतर हो जाते हैं। बदतर इसलिए होते हैं कि बाक़ायदा फ़ौज बनाकर लड़ते हैं। फ़ौजें बनाकर लड़ना जानवरों में कहीं नहीं देखा गया मगर इनसान ऐसा भी करता है।

हैवानियत और ख़िलाफ़त में फ़र्क़

सिर्फ़ खाना खा लेना यह तो है हैवानियत, दूसरे को खिलाना यह है ख़िलाफ़त। खुद पी लेना यह तो है हैवानियत, दूसरे को पिलाना यह है ख़िलाफ़त। अपना मकान बनाना यह तो आ़म जानदारों वाला काम है, दूसरों को मकान बनाकर देना यह ख़िलाफ़त वाला काम है। आदमी

ने ख़िलाफ़त वाला काम छोड़ दिया और उसने सिर्फ़ जानवरों वाला काम शुरू कर दिया।

इनसानी कमालात की हैसियत

सिर्फ़ ज़्यादा खा लेना इनसान के लिए यह कमाल नहीं। ज़्यादा खाना कमाल होता तो सबसे ज़्यादा कमाल वाला हाथी होना चाहिए। ऊँचे मकान बना लेना यह कमाल नहीं। अगर यह कमाल होता तो चिड़ियाँ बहुत कमाल वाली होतीं क्योंकि वे बहुत ऊँचे पर अपना घौंसला बनाती हैं। तहख़ाने बना लेना यह कमाल नहीं। अगर यह कमाल होता तो चूहे सबसे ज़्यादा कमाल वाले हैं कि वे अन्दर के तहख़ाने बना लेते हैं।

बिजली की फ़िटिंग कर लेना यह कोई कमाल नहीं

अगर इबादात, अख़्लाक़ और दावत ये तीन सिफ़तें नहीं हैं तो सिर्फ़ बिजली की फ़िटिंग कर लेना यह कोई कमाल नहीं, इसलिए कि 'बया' एक जानवर होता है जो परिन्दा है। वह घौंसला बनाकर जुगनू जो एक चमकदार क़िस्म का कीड़ा है रात के वक़्त उड़ा करता है, उसको पकड़ कर अपने घौंसले में फ़िट करके बिजली का काम लेता है। तो जानवर भी इस तरह का काम कर लेता है। हाँ! बिजली की फ़िटिंग इनसान के अन्दर कमाल जब है कि उसके साथ इबादतें, अख़्लाक़ और दावत हो। अगर ये तीन सिफ़तें इनसान के अन्दर नहीं हैं तो कोई कमाल की चीज़ इनसान के अन्दर नहीं है।

डॉक्टर बनना कमाल नहीं

मोहतरम दोस्तो! अगर ये तीन ख़ूबियाँ नहीं तो डॉक्टर बनना भी कोई इनसानी कमाल नहीं। डॉक्टरी तो बन्दर भी कर लेता है।

एक जगह का वाक़िआ है कि बन्दर लोगों को बहुत परेशान कर रहे थे। घर वालों ने छत के ऊपर ज़हर मिलाकर रोटियाँ फैला दीं।

बन्दरों ने सूँघा और भाग गए। फिर बन्दरों का बड़ा सरदार आया। उसने सूँघा तो वह भी चला गया। फिर ये सारे बन्दर एक-एक लकड़ी लेकर आए। लकड़ी चूसते रहे रोटी खाते रहे। मरा एक भी नहीं। तो इतनी डॉक्टरी तो बन्दर भी कर लेता है। डॉक्टर बनना उस वक़्त कमाल है जब उसके अन्दर इबादत भी हो। उसमें अख़्लाक़ भी हों और उसके अन्दर दावत भी हो, फिर यह कमाल वाला डॉक्टर है।

हुकूमत चलाना इनसानी कमालात में से नहीं

इसी तरह हुकूमत का चलाना यानी हुक्मरानी यह भी इनसानी कमालात में से नहीं है। अगर उसके साथ ये तीन बातें हैं तब वह कमालात वाला है हाकिम। अगर वह ख़ाली हुकूमत चला रहा है ये तीन ख़ूबियाँ नहीं हैं तो यह हुकूमत चलाना कोई कमाल नहीं, क्योंकि जानवर भी हुकूमतें चलाते हैं। अगर आप हज़रात को इल्मुल-हैवानात (जानवरों के बारे में ज्ञान और मालूमात) से ताल्लुक़ होगा तो इस बात को समझेंगे। यह शहद की मक्खी है। इनमें एक होती है रानी। उसके साथ दूसरी मक्खियाँ आ जाती हैं। वह बाक़ायदा फूल चूसने के लिए भेजती है, वे फूल चूस-चूसकर आती हैं और छत्ता बनाती हैं और बहुत तरकीब के साथ वह छत्ता मुरत्तब होता है। और बा-क़ायदा हुकूमत और क़ानून होता है उसका। तरतीब से शहद लाकर चूस-चूसकर रखा जाता है। अगर कोई मक्खी ग़लत फूल चूसकर आती है तो जल्लाद मुक़र्रर होता है, वह जल्लाद ऐसी मक्खी को ख़त्म कर देते हैं।

चुनाव लड़ना इनसानी कमालात में से नहीं

अगर ये तीन ख़ूबियाँ नहीं हैं तो चुनाव लड़ना भी इनसानी कमालात में से नहीं होगा। चुनाव लड़ना यह भी जानवरों के अन्दर पाया जाता है। चुनाँचे एक मुर्ग़ा हो पच्चीस मुर्ग़ियाँ हों, उनमें किसी क़िस्म की कोई लड़ाई नहीं। अगर एक दूसरा मुर्ग़ा ले आओ अब उन

दोनों मुर्ग़ों के अन्दर कम्पटीशन होगा। आपस में उनके अन्दर ख़ूब लड़ाई होगी। यह लड़ाई बाक़ायदा लड़ी जाती है मैंने अपनी आँखों से देखा है। खाना-दाना इससे तिजोरियाँ भरी हुई हैं, खाने की लड़ाई नहीं। पानी जब तक घड़े में है, पानी पीने में लड़ाई नहीं। बीवी की भी लड़ाई नहीं। किसी की कोई भी बीवी हो, यहाँ हलाल व हराम का सवाल नहीं। मकान की भी लड़ाई नहीं। हर मुर्ग़े और मुर्ग़ी के दरबे अलग-अलग बने हुए होते हैं। फिर लड़ाई क्यों जारी है? लड़ाई न तो रहने की, न खाने की, न पीने की, न बीवी की, न मकानों की, फिर दो मुर्ग़ों की लड़ाई क्यों जारी है? उन दो मुर्ग़ों की लड़ाई सिर्फ़ इस बात की है कि उन मुर्ग़ियों में बड़ा बनकर कौन रहे।

घर का बड़ा कौन?

जीतने वाले मुर्ग़े के तीन काम होते हैं, एक तो सीने का ऊँचा करना। परों को फड़फड़ाना और तीसरा काम यह होता है कि अकड़ता हुआ चलता है और मुर्ग़ियाँ उसके पीछे चलती हैं। यह मन्ज़र मैंने अपनी आँखों से देखा है। उसका इसके अ़लावा कुछ काम नहीं कि वह मुर्ग़ा जो हारा है उसे अगर दाना खाना है तो चुपके से कहीं खा ले, मेरे घर में नहीं। पीना है तो चुपके से पी ले। किसी मुर्ग़ी को इस्तेमाल करना है तो चुपके से कर ले, मेरे सामने नहीं। अगर मेरे सामने उसने गर्दन उठाई तो फिर दो चार ठोंगें मारकर पुरानी याद दिलाता है कि भूल गया। यह भी मैंने अपनी आँखों से देखा है।

उस मुर्ग़े का ख़्याल है कि घर का बड़ा मैं ही हूँ। हालाँकि घर का बड़ा घर का मालिक है। हो सकता है कि मेहमान आए और जीतने वाले मुर्ग़े ही को काटकर खिला दिया जाए और सारी लड़ाई ख़त्म हो जाये।

अल्लाह सब से बड़ा है

आदमी कहता है कि मुझको ज़्यादा वोट मिल गया इसलिए मैं बड़ा

बन गया। लेकिन मीनारों से आवाज़ लगती है "अल्लाहु अक्बर" अल्लाह सबसे बड़ा है। जब अल्लाह बड़ा है तो तेरा वक़्त आया कि एक बटन दबा देंगे और तू वहीं ख़त्म। इनसान की क्या हैसियत है?

ऐटमी ताक़त वाला भी अपनी जान नहीं बचा सका

मोहतरम दोस्तो! चारों तरफ़ शोर मच रहा है कि हमारे हाथों में ऐटमी (प्रमाणू बम की) ताक़त है। मगर दोस्तो! तीस साल पहले का क़िस्सा है। तीस मुल्कों का आपसी मुआहदा था एक ऐसी हुकूमत के साथ जिसके सदर (राष्ट्रपति) के पास ऐटमी ताक़त थी। तीस मुल्क कह रहे थे कि ऐटमी ताक़त के ख़ुदा हमारे साथ हैं और दुनिया सहम रही थी। अख़बारों में रेडियो में ख़बरें आ रही थीं। मगर भाई कालें और गोरों में हो गया इख़्तिलाफ़ (झगड़ा)। उनके बीच एकता पैदा करने के लिए अपने बंगले से सदर (अध्यक्ष/राष्ट्रपति) साहिब निकले। पाँच मोटरें आगे पाँच मोटरें पीछे। ताकि उनमें सदर साहिब की मोटर का पता न चले कि किस मोटर में सदर साहिब बैठे हैं। चलती हुई मोटर में एक गोली लगी और सदर साहिब पानी तक न ले सके और वहीं पर ख़त्म हो गए।

अल्लाह तआला ने बता दिया कि ऐटमी ताक़त के ज़रिये तू तीस मुल्कों की हिफ़ाज़त तो क्या कर सकता है जब अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आ गई तब पिस्तौल की सिर्फ़ एक गोली से तुझे तेरी ऐटमी ताक़त नहीं बचा सकती।

ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम करो तो बेड़ा पार हो, और अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं करोगे तो बेड़ा ग़र्क़ है। यह है अम्बिया अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम की दावत।

रिसर्च करने वालों का अपने आपको भुला देना

मोहतरम दोस्तो! ये ख़ूबियाँ और कमालात जो अभी ज़िक्र किए

गए। जब ये सारी ख़ूबियाँ जानवरों में भी मौजूद हैं, अगर इनसान भी इन चीज़ों में लगा तो तीन ख़ूबियाँ इबादात, अख़्लाक़ और दावत उसके अन्दर पैदा न होंगी।

इनसान जब जानवरों की तरह आपस में लड़ेंगे, एक-दूसरे का ख़ून करेंगे, फ़सादात होंगे, जंगें होंगी, तो यह इतना बेक़ीमत होगा कि आज दुनिया में सब से ज़्यादा बेक़ीमत अगर कोई चीज़ है तो वह इनसान है। हालाँकि अल्लाह ने इसे इतना अच्छा और क़ीमती बनाया कि फ़रिश्तों से सज्दे करा दिये।

लेकिन इनसान ने पाख़ाने से लेकर चाँद तक की रिसर्च (अनुसंधान) की मगर उसने अपने आपको नज़र-अन्दाज़ किया है। डॉक्टरों ने पाख़ाने की तो रिसर्च की, वैज्ञानिकों ने चाँद की रिसर्च (अनुसंधान) की लेकिन अपनी रिसर्च नहीं की। और अपने को नज़र-अन्दाज़ किया।

आज सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ इनसान है

इसका नतीजा यह निकला कि सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ आज दुनिया में इनसान है। रहने का मसला है तो इनसान को मारा जाए। दुकान का मसला है तो इनसान को मारा जाए। ज़मीन के टुकड़ों के लिए लाखों इनसानों को मारा जाए। हथियारों के बेचने के लिए इनसान को मारा जाए।

बर्थ-कन्ट्रोल और इनसान की बेक़ीमती

जितनी स्कीमें हैं मन्सूबा बन्दी की, आईन्दा इनसानों को दुनिया में आने से रोकने की हैं। "दो या तीन बच्चे घर में होते हैं अच्छे" "तीन बच्चे हो गए, अगला बच्चा कभी नहीं" यह हैं नारे मगर किसी जगह ऐसा भी क्या कोई क़ानून है कि ऐसा कोई पेड़ उगाओ जिसमें सिर्फ़ तीन अनार हों। ऐसा खेत उगाओ जिसमें पैदावार सिर्फ़ तीन मन

गेहूँ हो, इसका कोई क़ानून नहीं।

लेकिन यह हज़रते इनसान ऐसे बन्धे हैं कि तीन से ज़्यादा दुनिया में न आयें ताकि हमेशा ऐश व आराम में रहें।

इससे आप अन्दाज़ा लगायें कि आज सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ दुनिया में है तो वह इनसान है। क्योंकि इनसान ने अपनी क़ीमत खो दी। जिस इनसान को अल्लाह ने इतना क़ीमती बनाया था कि फ़रिश्तों तक पर फ़ज़ीलत दी थी।

ख़ुदा का मामला भी अब इनसानों के साथ जानवरों जैसा

जब इनसानों ने जानवरों जैसे काम किए। इनसानों से इनसान की ज़िन्दगियाँ उजड़ने लगीं तो अल्लाह तआ़ला ने भी नाराज़ होकर फ़ैसला कर लिया कि चलो हम भी जानवरों जैसा तुम्हारे साथ मामला करेंगे।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला एक ज़लज़ला लाते हैं और लाखों को ख़त्म कर देते हैं। हवाओं का तूफ़ान, पानी का सैलाब लाते हैं।

मेटैरिको के ज़लज़लों का मुक़ाबला आज की ऐटमी ताक़त न कर सकी। हंगरी के तूफ़ान और दक्षिणी भारत के सैलाब का मुक़ाबला दुनिया की ऐटमी ताक़तें नहीं कर सकीं। एक-एक हादसे के अन्दर इतने मरते हैं कि लाशें बटोरने वाले भी बाक़ी नहीं रहते हैं। और उनकी कोई अहमियत नहीं होती। जैसे तेज़ तूफ़ान चले तो अख़बारों में यह नहीं आता कि कितने घोंसले टूटे और कितनी चिड़ियाँ मरीं और कितने अंडे टूटे। इस तरह की ख़बरें भी अख़बारों में नहीं आतीं। तो अल्लाह मियाँ के यहाँ भी ऐसे लोगों का कोई शुमार नहीं कि सैलाबों में कितने मरे।

अरे मरे मर गए। जानवरों जैसे थे सारा कूड़ा-कबाड़ जहन्नम में गया। कोई अहमियत ऐसे इनसानों की अल्लाह के नज़दीक नहीं है।
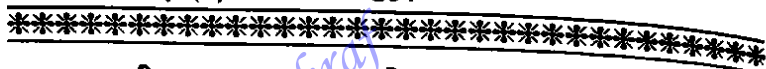
नमाज़ी का ताल्लुक़ सातों आसमानों से

अब रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनसानों के अन्दर से ख़राबियाँ निकाल कर ख़ूबियाँ लाने की तरकीब बताई कि अपनी जान और माल को चार बातों पर लगाओ। एक तो इबादत पर, अख़्लाक़ पर, दावत पर और फिर बचा-खुचा माल अपनी ज़रूरतों पर।

ये वे ख़ूबियाँ हैं जो इनसान को क़ीमती बना देंगी। जब हम इबादत करेंगे तो फ़रिश्ते हमारे साथ होंगे। नमाज़ के अन्दर भी फ़रिश्ते होते हैं, एक आसमान में फ़रिश्ते रुकूअ़ करते हैं। एक आसमान में फ़रिश्ते सज्दे में हैं और एक आसमान में क़ियाम (नमाज़ में खड़े होने की हालत) में, एक आसमान मे क़अ़दे (नमाज़ में बैठने की हालत) में हैं। जब यह इनसान नमाज़ पढ़ता है तो कभी उसका कनेक्शन (सम्पर्क) किसी आसमान से होता है कभी किसी से, कभी चौथे आसमान से कभी पाँचवें व छठे और सातवें आसमान के फ़रिश्तों के साथ उसे मुनासबत होती है।

इबादतों में फ़रिश्तों का साथ

जब तालीम का हल्क़ा होता है तो फ़रिश्ते घेरते हैं। इस वक़्त बयान हुआ तो ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते हैं। जब आदमी दीन सीखने निकलता है तो फ़रिश्ते उसके पैरों के नीचे पर फैलाते हैं। जब आदमी किसी को दीन सिखाता है तो सारे आसमान के फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। जब एक बीमार की तीमारदारी (देखभाल) सुबह की जाती है तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ करते हैं।

अल्लाह पाक ने फ़रिश्तों को इनसानों की ख़िदमत में लगा दिया है। जब यह इबादत वाला काम करेगा तो फ़रिश्तों वाली ख़ूबी इसके अन्दर पैदा होती चली जाएगी।

हर चीज़ अपने जैसे के साथ रहती है

फ़रिश्तों के अन्दर एक ख़ूबी है:

لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ (پارہ– ۲۸)

जिस बात का हुक्म हो, ये नाफ़रमानी नहीं करते। वही करते हैं जो उनसे कहा जाए।

मेरे मोहतरम दोस्तो! इबादतों के रास्ते से आदमी फ़रिश्तों जैसा बनेगा। जिसकी सोहबत में आदमी रहेगा उसका असर आदमी पर पड़ेगा। आदमी अगर बकरियाँ चराने वाला हो तो नरमी आएगी। आदमी ऊँट चराने वाला हो तो सख़्ती आएगी। क्योंकि ऊँट में सख़्ती है और बकरी में नरमी है। इसलिए आदमी अगर फ़रिश्तों की सोहबत में रहेगा तो फ़रिश्तों जैसा बनेगा।

मस्जिद वाले आमाल से आदमी फ़रिश्तों जैसा बनेगा

तब्लीग़ में निकलने के बाद मस्जिद वाले जो आमाल बताए जाते हैं, उन सारे आमाल के अन्दर फ़रिश्ते होते हैं। एक उसूल के साथ आदमी अगर वक़्त गुज़ारे तो यह आदमी फ़रिश्तों जैसा बन जाता है। हालाँकि आदमी शराबी था। उसको शराब से नहीं रोका गया। लोगों को मालूम भी नहीं कि शराब पीता है। लेकिन फ़रिश्तों की सोहबत में रहकर उसकी शराब छूटी कि फ़रिश्तों जैसा बन गया। अब अपने माबूद की नाफ़रमानी हरगिज़ नहीं करेगा।

शैतान कब-कब चकमा देगा?

मोहतरम दोस्तो! बाज़े आमाल तो वे हैं कि जिनमें फ़रिश्ते आते हैं। जो मैंने आपको अभी गिना दिए। लेकिन बाज़ आमाल वे हैं कि जिनमें शैतान आते हैं। हमें ऐसे आमाल से बचना है। शैतान के माहौल में अगर हम रहेंगे तो हमारे अन्दर ख़राबियाँ शैतान वाली पैदा होंगी।

शैतान के अन्दर तीन ख़राबियाँ हैं

اَبٰی، وَاسْتَکْبَرَ وَکَانَ مِنَ الْکَافِرِیْنَ ٥ (پارہ– ا)

(1) जो बात अल्लाह ने कही उसका इनकार कर दिया।

(2) तकब्बुर किया।

(3) नाशुक्री की।

तो जो शैतान की सोहबत में रहता है उसके अन्दर ये तीन ख़राबियाँ आती हैं। उसके साथ वे आमाल भी बता दिये गए जहाँ फ़रिश्ते आते हैं। तब्लीग़ के जितने आमाल हैं, हर अ़मल में फ़रिश्ते आते हैं। मैंने इसके बारे में हदीसें ढूँढ रखी हैं।

शैतान कब-कब क्या चकमा देता है? यह कुरआन बताता है और बार-बार बताता है। ताकि लोग इस दुश्मन से बचें। खाना खाते वक़्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो शैतान साथ में खायेगा। रात को मकान बन्द करते वक़्त बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो रात में शैतान अन्दर आ जाएगा। बैतुल्ख़ला (शौचालय) जाते वक़्त उसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी तो शैतान शर्मगाह से खेलेगा। बीवी के साथ सोहबत करने से पहले जब कपड़े उतारे उससे पहले अगर अल्लाह का नाम न लिया और सोहबत के वक़्त में इन्ज़ाल (वीर्य के निकलने) के वक़्त जो दुआ़ आती है वह दिल से न पढ़े तो शैतान भी सोहबत करेगा।

आगे अगर हमल (गर्भ) ठहरा तो बच्चे में शैतान के असरात होंगे। फिर वह बच्चा नाफ़रमान होगा।

इसी तरह अगर अल्लाह के हुक्मों को तोड़ते हैं तो शैतान साथ में हो जाता है।

وَمَنْ یَّعْشُ عَنْ ذِکْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَیِّضْ لَهٗ شَیْطَانًا فَهُوَ لَهٗ قَرِیْنٌ ٥ (پارہ– ٢٥)

जब आदमी अल्लाह तआ़ला की नसीहतों से ग़फ़लत करता है तो शैतान साथ हो जाता है।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वाक़िआ

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को एक आदमी ने बहुत बुरा-भला कहा। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु बरदाश्त करते रहे और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास बैठे सुनते रहे। जब थोड़ी देर हुई तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को भी तरारा आ गया। और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी बोलना शुरू कर दिया, तब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वहाँ से तशरीफ़ ले गए। बाद में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु रसूले पाक की ख़िदमत में गए और जाकर अ़र्ज़ किया कि हज़रत! जब तक वह बोलता रहा आप चुप-चाप बैठे रहे और जब मैंने बोलना शुरू कर दिया तो आप उठकर चल दिए। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जब वह तुमको बोल रहा था और तुम बरदाश्त कर रहे थे तो तुम्हारे पास एक फ़रिश्ता खड़ा-खड़ा बचाव कर रहा था क्योंकि बरदाश्त करने से ख़ुदा की ग़ैबी ताक़त हासिल हो जाती है। जब आपने भी बोलना शुरू कर दिया तो लड़ाई की-सी कैफ़ियत हो गई। तब फ़रिश्ता जो था चला गया और शैतान आ गया। चूँकि मैं अल्लाह का नबी हूँ मैंने कहा कि शैतान आ गया तो मैं भी चल दूँ।"

मेरे मोहतरम दोस्तो! ये वाक़िआत बता रहे हैं कि बरदाश्त करोगे तो ग़ैबी ताक़त साथ होगी। और अगर लड़ाई करोगे तो फिर शैतान साथ में होगा और शैतानी हरकतें होंगी।

सारी दुनिया का रुजू दीन व ईमान की तरफ़ कब होगा?

दोस्तो फ़रिश्तों वाली निस्बत इनसान के अन्दर इबादतों के ज़रिये आती है।

इबादतें चार क़िस्म की हैं। नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज। ये चार इबादतें अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ कर दी हैं। अगर ये चारों इबादतें सही ढंग पर आ गईं तो ये इबादतें अख़्लाक़ तक पहुँचा देंगी। और खुदा की ख़िलाफ़त तक पहुँचा देंगी।

और जब सारी दुनिया का रुजू दीन व ईमान की तरफ़ हो जाएगा तब दुनिया में दीन, अख़्लाक़ और सही समाजी ज़िन्दगी और मामलात फैलेंगे।

ग़ैरों के सामने क्या चीज़ जाएगी?

इनसानों की इबादतें छुपी रहती हैं। इबादतें आम तौर पर दुनिया वालों के सामने नहीं जातीं। नमाज़ हमारी मस्जिदों के अन्दर, रोज़े हमारे पेट में, ज़कात हम देते हैं मुसलमानों को, ग़ैरों को नहीं दे सकते, और हज ऐसी जगह पर जहाँ ग़ैर-मुस्लिमों का दाख़िल होना वर्जित और मना है। तो इबादतें तो हमारी छुपी रहती हैं। लेकिन इबादतों के अन्दर ताक़त पैदा होकर हमारे अन्दर अख़्लाक़ आ जाएँ तो अख़्लाक़, समाजी ज़िन्दगी, मामलात जब हमारे सही हो जाएँगे तो ये दूसरे लोगों के सामने भी जाएँगे।

अख़्लाक़ के ज़ाहिर होने की जगह

हमारे घर के अख़्लाक़, हमारे कारोबारी लाईन के ममलात की सफ़ाई, हमारे रहन-सहन की सफ़ाई, ये सब चीज़ें दुनिया के लोग देखेंगे। स्कूल के अन्दर के अख़्लाक़ तालीम देने वाले के अख़्लाक़, इसी तरह दफ़्तर के अन्दर अगर अख़्लाक़ के साथ जाएगा तो सारे दफ़्तर के लोग देखेंगे। और यह चीज़ दुनिया के अन्दर दीन व ईमान को

फैलाएगी। लोग तो अख़्लाक़ को देखते हैं और अख़्लाक़ के ज़ाहिर होने और सामने आने की जगह वह बाज़ार है और घर है यानी मस्जिद के बाहर का हिस्सा है। मस्जिद के अन्दर तो इबादतों और ईमानियात के ज़रिये अपने अन्दर रूहानियत को पैदा करना है।

इबादतों का मिज़ाज ही अख़्लाक़ का शिक्षक है

नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज, ये चारों इबादतें हमें अख़्लाक़ सिखएँगी, (इन्शा-अल्लाह) लेकिन जब ये जानदार हों।

नमाज़ से अख़्लाक़ आएँगे जबकि हमारे अन्दर नमाज़ वाला मिज़ाज पैदा हो जाए। इसलिए कि एक नमाज़ का पढ़ना है और एक है नमाज़ का ऐसा पढ़ना कि नमाज़ का मिज़ाज आ जाए। रोज़े का मिज़ाज आ जाए। ज़कात का मिज़ाज आ जाए हज का मिज़ाज आ जाए।

नमाज़ का मिज़ाज

नमाज़ का मिज़ाज क्या है?

जैसे नमाज़ के अन्दर हमने अपने पूरे बदन को, हाथ-पैर, आँख-कान, ज़बान सबको अल्लाह के हुक्मों की जकड़बन्दी में दे दिया है। नमाज़ का मिज़ाज यह है कि नमाज़ के बाहर भी यह हमारा पूरा बदन अल्लाह के हुक्मों की जकड़बन्दी में आ जाए।

नमाज़ का मिज़ाज क्या है?

अल्लाह के हुक्मों पर जान लगाने का मिज़ाज आ जाए। यानी नमाज़ ऐसी पढ़े कि अल्लाह के हुक्मों पर जान लगानो का मिज़ाज आ जाए।

जैसे नमाज़ के अन्दर आँख पर पाबन्दी है, अगर नमाज़ के बाहर भी गया जैसे कारोबार में तो अब यह आँख पाबन्द रहे। कोई ख़ूबसूरत लड़की अगर ग्राहक बनकर आई तो यह आँख उसको न

देखे। कान उसकी बात को बिना ज़रूरत न सुने और अपने ऊपर पाबन्दी रखे। इसलिए कि ज़िना की शुरूआत ही होती है आँख से और उसकी इन्तिहा शर्मगाह से होती है। अल्लाह ने ये दोनों किनारे बता दिए हैं।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ. (پاره-١٨)

मुसलमानों से कह दो कि निगाहें को नीचे रखें और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें।

नज़र शैतान के तीरों में से एक तीर होता है, ज़हरीला तीर। तो आदमी मस्जिद से बाहर जाएगा तब भी नज़र पर पाबन्दी है, हाथों पर पाबन्दी है कि उस हाथ से हराम का पैसा नहीं लेगा। इस कान से ग़ीबत नहीं सुनेगा, क्योंकि नमाज़ में अल्लाह के हुक्म पर अपने को पाबन्द किया था, तो नमाज़ से बाहर अपने को पाबन्द क्यों नहीं करेगा।

ज़कात का मिज़ाज

मोहतरम दोस्तो! दूसरी इबादत ज़कात का क्या करिश्मा है? कि अल्लाह के हुक्मों पर माल लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। ज़कात तो एक सीमित रक़म होगी। चालीस लाख रुपये में एक लाख रुपये देनी पड़ेगी। उन्तालीस लाख रुपये फिर भी बच गये। अगर एक लाख रुपये सही तक़सीम से हक़दारों को अ़ता किया तब हक़ीक़त में ज़कात वाला मिज़ाज पैदा हो जाएगा।

ज़कात वाला मिज़ाज क्या है?

अल्लाह के हुक्मों पर माल लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। अब ज़कात अदा करने के बाद जो माल बच गया यह माल लगेगा तो भी अल्लाह के हुक्मों पर लगेगा।

रोज़े का मिज़ाज

रोज़े के ज़रिये हमें किस मिज़ाज पर जाना है?

वह है अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े दबाना आ जाए। खाना, पीना और बीवी के पास जाना ये तीनों तक़ाज़े दबाकर आदमी रोज़ा रख्ता है। रोज़ा तो सिर्फ़ रमज़ान में रखना है इसके अलावा रोज़ा फ़र्ज़ नहीं।

मगर दोस्तो! ग्यारह महीने भी छुट्टी नहीं। रोज़ा ऐसा रखे कि अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े दबाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। जब ऐसा मिज़ाज पैदा हो जाएगा तो आदमी ज़रूरत के मुताबिक़ खाएगा पहनेगा मकान बनाएगा, और शादी करेगा तो सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़।

ख़ुदा की राह में माल लगाने का जज़्बा इबादत से पैदा होगा

जब आदमी में तक़ाज़े दबाने का मिज़ाज पैदा होगा तो ज़ाहिर है पैसा उसके पास बहुत बचेगा। अब तक़ाज़े दबाने पर जो पैसा बचा और ज़िन्दगी को सादगी पर डालने से जो पैसा पचा वह कहाँ लगेगा? ज़कात के माल को अल्लाह के हुक्मों पर लगाने का मिज़ाज पैदा हो गया तो ज़रूरत मन्दों को देकर ज़कात का माल ख़त्म हो गया। लेकिन घूमते-घूमते उसको मालूम हुआ कि सैयद घराना भी बहुत मोहताज है। तकलीफ़ में है। ज़कात उसको तो नहीं दे सकते लेकिन रोज़ा रखने से अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े के दबाने का उसको जो मिज़ाज पैदा हुआ तो यह आदमी अपने तक़ाज़े दबाकर ज़कात के माल के अ़लावा जो माल उसके पास है अख़्लाक़ी तौर पर वह सैयद घराने पर लगाएगा।

ज़कात तो उसने रमज़ान में पूरी अदा कर दी लेकिन ईद के बाद उसने देखा कि पड़ोस में से औरत के चीख़ने की आवाज़ें आईं उसको

बच्चा पैदा हो रहा है। उसके पास पैसा नहीं। शौहर बाहर काम से गया है। अब यह नहीं सोचेगा कि अगले साल रमज़ान में रुपये लगाऊँगा। बल्कि ज़कात के अ़लावा जो माल है वह ज़रूरत-मन्द पर लगाकर ज़रूरत को पूरी करेगा। ज़कात के माल के अ़लावा माल का लगाना यह अख़्लाक़ी तौर पर होगा। यह है अख़्लाक़।

अहकाम की दो क़िस्में

इबादतें जो हैं ये तो क़ानूनी हुक्म हैं। इसके अ़लावा जो काम करेगा वह अल्लाह का अख़्लाक़ी हुक्म होगा। एक है क़ानूनी हुक्म और एक है अख़्लाक़ी हुक्म। क़ानूनी हुक्म अगर छोड़ा तो जहन्नम होगी। अख़्लाक़ी हुक्म अगर छोड़ा तो जहन्नम में नहीं जायेगा। लेकिन जन्नत में उसका दर्जा बुलन्द नहीं होगा। क़ानूनी हुक्म तो पूरा करेगा डर के मारे, लेकिन अख़्लाक़ी हुक्म पूरा करेगा तरक़्क़ी के लिए।

अ़द्ल व एहसान का मतलब

कुरआन में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ (پاره– ١٤)

अल्लाह तआ़ला अ़द्ल व एहसान का हुक्म करते हैं।

अ़द्ल क्या है? और एहसान क्या है?

जितने क़ानूनी अहकाम हैं वह हैं अ़द्ल, और अख़्लाक़ी अहकामात हैं एहसान। अब आप पूरे कुरआन पर ग़ौर कीजिए। एक तरफ़ तो अल्लाह तआ़ला कहते हैं "ज़कात अदा करो" यह क़ानूनी हुक्म है। अगर यह टूटा तो मरने के बाद जहन्नम, साँप का काटना और दूसरे अ़ज़ाब हैं। और दुनिया में माल पर वबाल का आना है।

ज़कात की अदायगी न करना वबाल का सबब है

ज़कात के अदा न होने पर दुनिया में माल पर वबाल आता है। जब ज़कात का माल दूसरे बग़ैर ज़कात के माल के साथ मिल जाता है

तो दूसरे माल को भी तबाह कर देता है।

एक शहर के अन्दर हुकूमत का बड़ा ज़बरदस्त छापा पड़ा, बहुत-से ताजिर बेचारे परेशान हो गए। यहाँ ख़त आए। ये दीनदार ताजिर थे। उनके माल व दौलत पर बड़ी परेशानी आई थीं। उनमें जो मेरे जानने वाले थे मैंने उनको ख़त लिखा कि तुम लोग ग़ौर तो करो, ज़कात के देने में भूल तो नहीं हुई? कहीं ज़कात का माल तो तिजारत में रोलिंग नहीं कर रहा है?

मेरे यह ख़त लिखने पर उन लोगों ने हिसाब किया। बल्कि एक ताजिर (व्यापारी) जो ज़्यादा जानने वाला था उसने कई सालों का हिसाब मेरे पास भेजा कि यह हमारा हिसाब है ज़कात का। मैंने अंग्रेज़ों के ज़माने में चूँकि हिसाब पढ़ा था इसलिए अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से बहुत कुछ हिसाब जानता हूँ...... आजकल तो लोग बस कैलकूलेटर जानते हैं।

मैंने हिसाब जोड़कर उनको बताया कि एक साल के अन्दर तुमने पाँच हज़ार ज़कात कम दी है और तीन साल तक यह कमी रही। उन्होंने अंग्रेज़ी महीने गिने थे। मैंने हिजरी महीने गिने। हिजरी महीने में साल का गुज़रना जल्दी होगा। हिजरी साल ३५४ या ३५५ दिन का होता है। और ईसवी साल ३६५ या ३६६ दिन का होता है। मैंने हिसाब गिनकर उन्हें बताया, उन्होंने कान पकड़ लिया, फिर उसने मेरे पास ख़त लिखा कि हमारे हिसाब के अन्दर भी बहुत सी भूल-चूक हुई थी और ज़कात कम अदा हुई और ज़कात जब कम अदा हुई तो ज़कात का माल रोलिंग करता रहा। इसलिए वबाल आया।

पस ज़कात का माल जब बग़ैर ज़कात के माल में मिल जाता है तो बग़ैर ज़कात के माल पर भी तबाही व बरबादी आ सकती है। इसलिए ज़कात का माल अलग निकाल कर उसके हक़दारों को ख़ुद तलाश करके देना होगा।

ग़रीब की इज़्ज़त

और सम्मान के साथ ज़कात दी जाए

मेरे मोहतरम दोस्तो! जिस ज़िला के आप रहने वाले हैं वहाँ के ज़रूरत-मन्दों पर आपका माल लगना चाहिए। ज़रूरत-मन्दों को खुद आप जानते हों, ज़रूरत-मन्दों का तलाश करना मालदार के ज़िम्मे होता है। उसे एहतिराम व सम्मान के साथ ज़कात देनी होती है। मालदार को ग़रीब के घर भेजा, ग़रीब को मालदार के घर नहीं भेजा।

نِعْمَ الْاَمِيْرُ عَلٰى بَابِ الْفَقِيْرِ وَبِئْسَ الْفَقِيْرُ عَلٰى بَابِ الْاَمِيْرِ

यानी बेहतरीन मालदार वह है जो ग़रीब के दरवाज़े पर जाए। और बुरा ग़रीब वह है जो मालदार के घर पर जाए। इसलिए मालदार को ग़रीब के दरवाज़े पर जाना चाहिए।

ज़कात लेने वाले को ज़लील न समझा जाए

ज़कात इक्राम व एहतिराम के साथ दी जाए। किसी को ज़लील बनाकर न दी जाए। मस्जिद डले-पत्थर से जो बनी है उसका हम एहतिराम व इक्राम करते हैं। इसलिए कि यहाँ पर हमारा फ़र्ज़ अदा होता है। जब डले-पत्थर से हमारा फ़र्ज़ आदा होता है तो मस्जिद का यह डला-पत्थर क़ाबिले एहतिराम बनता है, तो एक मुसलमान ग़रीब को तलाश करके देना उसके घर तक पहुँचकर उसे देना है।

इस्लाम ग़रीब व अमीर दोनों का हिमायती है

दुनिया के अन्दर जो मालदार है वह तो दुनिया वाला है। वह यह चाहता है कि ग़रीबों की कमर तोड़ेंगे तो हमारी मिल्कियत बाक़ी रहेगी। और जो ग़रीब है वह जानता है कि अमीरों का पेट फोड़ेंगे तो हमको रोटी और कपड़ा मिलेगा। ग़रीबों का नज़रिया रोटी और कपड़ा और मालदारों का नज़रिया कि हमारी मिल्कियत बाक़ी रहे और अल्लाह

मियाँ जो ग़रीबों के भी हामी, अमीरों के भी हामी हैं वह रब्बुल्-आलमीन हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिए ऐसा पाकीज़ा तरीक़ा बतला दिया कि जिसमें मालदारों की मिल्कियत भी बाक़ी रहे और ग़रीबों को भी रोटी कपड़ा मिले और लड़ाई न हो। यहाँ लड़ाई जो होती है, ग़रीब कहता है कि तेरा पेट फोड़ दूँ, मालदार कहता है कि तेरी कमर तोड़ दूँ, तो मालदार सूद के रास्ते ग़रीब की कमर तोड़ देता है और ग़रीब चोरी डाके के ज़रिए मालदार का पेट फोड़ता है।

मेहंगाई की वजह सूद

जितना बाज़ार मेहंगा होता है वह सूद की वजह से होता है और यह सूदी लेन-देन जब बन्द होगा जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा हमें बताया है ज़िन्दगी का वह तरीक़ा हम में आ जाए। और वह तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी क़र्ज़ देना है बग़ैर सूद के, क़र्ज़ लेने वाला जब तक अदा नहीं करेगा सदक़े का सवाब मिलेगा। वक़्त के अन्दर अदा नहीं किया आपने ढील दे दी तो डबल सदक़े का सवाब। जैसे हज़ार रुपये आपने क़र्ज़ दिया महीने के वायदे पर तो महीने भर सदक़े का सवाब मिलेगा। महीने भर में न दे सका तो फिर दो हज़ार के सदक़े का सवाब आपको मिलेगा। और अल्लाह तआ़ला इसकी तरग़ीब देते (यानी इसकी प्रेरणा देते और शौक़ दिलाते) हैं:

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ (پارہ– ٣)

यानी अगर वह तंगदस्त है उसका हाथ खुल जाए उस वक़्त तक क लिए उसको छूट दे दो।

وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ (پارہ–٣)

और अगर फिर भी न दे सके तो उसे माफ़ कर दो। यह वह

सामाजिक ज़िन्दगी की तालीम है जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताई है।

दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को

यह वह तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी है जिससे दूसरे पर अपना माल लगाना आपको आ गया। आप जब मस्जिद के अन्दर बैठे तो ईमान व इबादत में ताक़त पैदा हुई। अल्लाह के ख़ज़ाने का यक़ीन पैदा हुआ यहाँ आपने सुन लिया, ज़मीन वाले पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। यहाँ आपने सुनाः

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ (پاره-٢٢)

यानी जितना तू अल्लाह के नाम पर ख़र्च करेगा, अल्लाह उसका बदल देगा।

और दूसरे पर रहम करो अल्लाह तुम पर रहम करेगा। अगरचे तुम अपनी हैसियत के मुताबिक़ दूसरों पर रहम करोगे, लेकिन अल्लाह तुम पर रहम करेगा तो अपनी शान के मुनासिब दुनिया में करेगा, क़ब्र में करेगा, हश्र में करेगा, जन्नत में करेगा, और अगर गुनाहों को मिटाने के लिए जहन्नम में दाख़िल हुए तो जहन्नम की आग उसे नहीं गलाएगी। ईमान की बातों, इबादतों और तालीम के हल्क़ों के रास्ते मस्जिद के अन्दर रहकर यह ज़ेहन बना। अब आदमी अगर बाज़ार में गया तो बाज़ार में दोनों क़िस्म के आदमी हैं। बग़ैर मस्जिद वाले और मसिजद वाले भी।

बाज़ार में एक लड़की आई नौ साल की, दो रुपये लेकर। कि भाई यह दो रुपये ले ले, दाल, चावल, आटा और शकर दे दे, तो ताजिर ने दो रुपये लेकर फेंक कर मारा कि भाग जा। दो रुपये में दुकान लूटने के लिए आई है। निकल जा यहाँ से तब बेचारी रोती हुई दूसरी दुकान पर गई। हर जगह उसे धक्के मारे गए। लेकिन एक दुकान पर ख़ुदा का ख़लीफ़ा भी बैठा हुआ था। जिसने नमाज़ के

ज़रिये अपने अन्दर अख़्लाक़ पैदा किया था, तालीम के हल्क़ों में बैठा हुआ था और जो यह समझे हुए था कि:

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को
वरना ताअ़त के लिए कुछ कम न थे करों-बयाँ

यह है इस्लाम का मिसाली अख़्लाक़

अल्लाह ने इनसान को दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया है। इबादत तो फ़रिश्ते भी करते हैं। मगर इनसान की इबादत इसलिए है कि इबादत करते-करते उसके अन्दर अख़्लाक़ आ जाए। अल्लाह से ताल्लुक़ इबादत के ज़रिये ठीक हो जाए और अख़्लाक़ के ज़रिये बन्दों से भी उसका ताल्लुक़ ठीक हो जाए।

तो वह लड़की हर दुकान से धक्के खाकर उस बन्दा-ए-खुदा की दुकान पर पहुँची। दहाड़ें मारकर रोने लगी। कह रही है कि कुछ महीने हुए दुर्घटना में मेरे बाप का इन्तिक़ाल हो गया सिर्फ़ मेरी माँ है, कोई जागीर हमारे पास नहीं, कोई कारोबार भी नहीं। मेरी माँ शरीफ़ घराने की औ़रत है, विधवा हो गई और घर में हमारे ख़र्चा नहीं। तो वह लोगों के बरतन माँझ धोकर हमारा गुज़ारा करती है। मेरी माँ की गुरबत से लोग फ़ायदा उठाकर ज़्यादा काम लेकर थोड़े पैसे देते हैं। वह वसूल कर लाती है और हम बच्चों का पेट पालती है। आज उसे कोई मज़दूरी नहीं मिली तो आज हमारे घर में फ़ाक़ा है। अगर दो रुपये का कुछ सामान कोई हमें दे दे तो हमारे घर में भी आग जल जाएगी। अल्लाह तेरा भला करेगा।

उस आदमी ने इस बात को सुना। उसकी आँखों में आँसू आ गये। कि ऐ अल्लाह! हमारी बस्ती का एक घराना इस वक़्त तंगी में है, हम तो बढ़िया क़िस्म की ग़िज़ाएँ खाएँ और उनको दाल-रोटी नसीब नहीं। चार सौ, पाँच सौ रुपये का सामान टोकरे के अन्दर भरकर अपने आदमी के साथ उस विधवा के घर तक पहुँचा दिया।

और दो रुपये भी वापस कर दिये।

अब उस घर के अन्दर जो खाना पका है, धुआँ निकला है, कई दिनों से सूखी रोटियाँ खा रहे थे, आज उन्हें अच्छी ग़िज़ा मिली। ये यतीम बच्चे विधवा औरत उसकी बच्चियाँ ये सारे के सारे खाएँगे। और उनकी आँखों के अन्दर ख़ुशी और शुक्र के जो आँसू निकलेंगे और जब ये हाथ उठाएँगे उस ताजिर के लिए दुआ करने के वास्ते तो जो अल्लाह बादल की बारिश ज़मीन पर डालकर बादल के पानी से एक मन का दस मन गेहूँ बनाता है, उस बेवा औरत की आँखों से भी पानी निकला है, क्या अजब है कि उसके ज़रिये ताजिर की सात नस्लों तक के फ़ाक़े ख़ुदा दूर कर दे।

यह है ज़िन्दगी जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें बताकर गए। अब यह शख़्स घर में आया और अपनी बीवी बच्चों को जमा किया और सारा क़िस्सा उस यतीम बच्ची का सुनाया तो घर भर की औरतों के भी ज़ेहन बन गए। बीवी ने कहा कि अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ रक़म लेकर जाऊँ और वहाँ जाकर हालात को देखूँ। वहाँ पर बीवी गई और सब हालात देखकर वापस आई। सारे घर वालों को जमा किया और कहा कि छह महीने से उसका शौहर इन्तिक़ाल कर चुका है। उसकी जवान बेटियाँ हैं जो शादी के क़ाबिल हैं। लेकिन पैसे न होने की बिना पर यह बेवा औरत बेचारी जवान बेटियों की शादी नहीं कर पाती। इसके अलावा छोटे-छोटे बेटे बेटियाँ भी बहुत-से हैं। जो चारों तरफ़ से मेरे सामने आकर बिलख गए। दो जवान बेटियाँ बुख़ार में मुब्तला थीं और तड़प रही थीं। एक दूसरे से हमदर्दी करना यह तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी मुसलमानों का न रहा। इसलिए यह घराना परेशान है। जवान बेटियाँ बीमारी में तड़प रही हैं। उनका कोई इलाज करने वाला नहीं। ग़ुरबत व तंगदस्ती से बिना शादी के बैठी हैं। कोई ख़बर लेने वाला नहीं। यह हाल देखकर उस ख़ुदा के बन्दे का सारा घर बैठकर रोया और अल्लाह से माफ़ी माँगी कि ऐ अल्लाह! क़ियामत

के दिन तू हमारी पकड़ मत करना कि हम लोग तो खा रहे हैं मुर्ग़ और हमारे पड़ोसियों को दाल भी नसीब नहीं है। ऐ अल्लाह! क़ियामत के दिन तू हामरी पकड़ मत करना हमसे ग़लती हो गई। हमें खुद ढूँढ-ढूँढकर ऐसे लोगों को देना चाहिए था। उसने अपनी बीवी को चार-पाँच हज़ार की रक़म दी और वह बेवा औरत के पास गई और जाकर कहा कि बेटियों की शादी का इन्तिज़ाम करो और इलाज का इन्तिज़ाम भी हम कर देते हैं। डॉक्टर को फ़ोन करके खुद ही कह देंगे।

पौने चार सौ करोड़ इनसानों का ग़म भी ज़रूरी

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! एक घराने की तकलीफ़ पर हम लोगों को किस क़द्र रिक़्क़त तारी हो गई। मेरे ऊपर भी और आपके ऊपर भी। मैं कहता हूँ कि पौने चार सौ करोड़ इनसान जो बग़ैर ईमान के इस दुनिया से जा रहे हैं और जिन्हें मरते ही फ़रिश्ते मारना शुरू करेंगे और आग में जलाना शुरू करेंगे। उनके लिए कौन रोएगा?

मख़्लूक़ के दर्द में नबी ने दुख और तकलीफ़ें बरदाश्त कीं

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ये चीज़ें बेचैन करती थीं। आप हमेशा सोच-विचार और चिन्ता में डूबे रहते थे। आप देखते थे कि लोगों में ईमान नहीं रहा। बेचैन हो जाते थे बेक़रार हो जाते थे कि ऐ अल्लाह! तेरे हुक्म टूट रहे हैं। मरते ही उन पर तेरा अ़ज़ाब आएगा। ऐ अल्लाह! मैं किस तरीक़े से उन्हें समझाऊँ। रातों को उठकर खुदा के सामने रोते थे। बेचैन होते थे, बेक़रार होते थे। ऐ अल्लाह! हिदायत के दरवाज़े को खोल दे। अगर रात में आपका यह हाल था तो दिन में एक-एक घर पर जाते थे। एक-एक दर पर जाते थे कि मैं अल्लाह का नबी हूँ। तुमने मुझे धक्के मार लिए। तुमने मुझे

पत्थर मार लिए। तुमने मेरे दाँत तोड़ दिए जो करना था तुमने कर लिया। मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया और पानी का छिड़काव करके मुझे होश आया, किसी और मक़सद से नहीं, मैं सिर्फ़ तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही (भला चाहने) के लिए आया हूँ। मैं अल्लाह का भेजा हुआ नबी हूँ आम आदमी नहीं हूँ। मुझ पर अल्लाह की तरफ़ से वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) आती है।

सुन लो! मरने के बाद एक ज़िन्दगी आएगी। क़ियामत का दिन आएगा। अल्लाह के सामने जाना होगा। अल्लाह के वास्ते बात मान लो। लेकिन वे पत्थ मार रहे हैं। इतने कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बेहोश होकर गिर पड़ रहे हैं। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बेहोशी की हालत में ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने कन्धे ' उठाए हुए हैं, कोई पुरसाने-हाल नहीं है। मक्का मुकर्रमा से पैदल चलकर ताइफ़ तशरीफ़ लाए हैं। मक्का वाले हिदायत की बात सुनने को तैयार नहीं हैं। ख़्वाहिश है कि ताइफ़ का कोई ख़ानदान हिदायत की बात क़बूल कर ले। ताकि पाकीज़ा इस्लामी ज़िन्दगी उनके अन्दर चालू कर दें। इस्लामी तरीक़े पर ज़िन्दगी का रहन-सहन क्या है? इस्लामी मामलात क्या हैं? इस्लामी अख़्लाक़ क्या हैं? इबादतें क्या हैं? ईमान की बातें क्या हैं? जब तक मजमा न मिले किस तरह उन्हें लोगों में चालू किया जा सकता है। इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुआ फ़रमाते कि ऐ अल्लाह! जमाअ़तों की जमाअ़तों का रुख़ इस तरफ़ फेर दे।

मिना में दावत और लोगों का ज़ुल्म व इनकार

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज के ज़माने में मिना जाते थे। एक-एक ख़ानदान से कहते थे "कौन मेरी मदद करेगा? कौन मुझे ठिकाना देगा?" ताकि मैं इस पाकीज़ा तरीक़े को ज़िन्दा करूँ और वह पाकीज़ा तरीक़ा दुनिया के लिए नमूना बन जाए। दुनिया के बसने

वाले इनसान जहन्नम की तरफ़ जाने से बचें। दुनिया में अमन व अमान आ जाए। मैं यह तरीक़ा लेकर आया हूँ। कौन है तुम में जो मुझे अपने पास ठहरा ले। अपने ख़ानदान में मुझे कौन ले जाएगा। लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दावत दे रहे हैं। एक ज़ालिम आता है, ऊँटनी के ऊपर एक कूँचा मारता है। ऊँटनी बिदकती है और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ज़मीन पर गिर पड़ते हैं और कपड़े धूल में भर जाते हैं। अन्दाज़ा हुआ कि यह ख़ानदान मुझे नहीं ले जाएगा। मेरी बात मानने के लिए तैयार नहीं तो दूसरे ख़ानदान के पास तशरीफ़ ले गए। उसको समझाना शुरू किया। उस ख़ानदान वाले ने कहा जब तुम्हारे मक्के वाले नहीं मानते हम क्यों मानें। हम मानेंगे तो सारे अ़रब के लोग हमसे लड़ाई करेंगे। हम तुमको अपने ख़ानदान व क़बीले में ले जाने के लिए तैयार नहीं हैं।

ग़म का साल

इसी मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया जो बड़ी हिमायत और हमदर्दी करते थे। हज़रत ख़दीजा कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का भी इन्तिक़ाल हो गया जिनकी वजह से बड़ा सहारा था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सोचते हैं अबू तालिब चले गए, बीवी भी चली गई और मक्का वाले चारों तरफ़ से मुझे मारने की फ़िक्र में हैं, इस तरह यह साल मेरा ग़मगीनी का साल है। अब क्या करूँ? सोचा कि ताइफ़ चलूँ शायद ताइफ़ वाले बात को मानें। ताइफ़ में जाकर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोशिश फ़रमाई तो ताइफ़ वालों ने इस क़द्र आप पर ज़ुल्म किया कि छोटे-छोटे आवारा बच्चे और बदमाश क़िस्म के आदमी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे लगा दिए। और इस क़द्र आपके ऊपर पत्थर मारे गए कि आप बेहोश होकर गिर पड़े।

गालियों और पत्थरों के जवाब में दुआएँ

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने कन्धे के बल उठाया। पानी का छिड़काव किया तो आँखें खुलीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम देखते हैं कि सामने फ़रिश्ता खड़ा है, कह रहा है कि अल्लाह तआला ग़ज़ब में आ चुके हैं। अगर आप फ़रमाएँ तो दोनों पहाड़ों को मैं मिला दूँ पहाड़ों की ख़िदमत मेरे ज़िम्मे है। पहाड़ मेरे क़ब्ज़े में अल्लाह ने दिये हैं, ये ताइफ़ वाले बिल्कुल ख़त्म हो जाएँगे। तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर दुआ माँगी:

اَللّٰھُمَّ اَشْکُوْ اِلَیْکَ ضُعْفَ قُوَّتِیْ وَقِلَّۃَ حِیْلَتِیْ

ऐ अल्लाह! मैं अपनी कमज़ोरियों की शिकायत करता हूँ। ऐ अल्लाह! कहीं तू मुझसे नाराज़ तो नहीं हो गया। अगर तू मुझसे नाराज़ नहीं है तो मुझे कोई परवाह नहीं। अगर ये ईमान न लाए तो इनकी औलाद ईमान लाएगी। वह फ़रिश्ता कहता रहा कि ख़ुदा का अज़ाब तैयार है आप इजाज़त दें मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ाब को रुकवाते हैं। यहाँ लोगों को समझाते हैं और पत्थर पड़ते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर क्या गुज़रती होगी। इसका अन्दाज़ा हम नहीं लगा सकते।

नबी ने मख़्लूक़ को जहन्नम से बचाने के लिए तकलीफ़ें सहीं

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इतनी तकलीफ़ें इसलिए उठाईं ताकि पूरी दुनिया के इनसानों के अन्दर अमन व अमान आ जाए। और ये इनसान जन्नत के अन्दर चले जाएँ। और ये इनसान जहन्नम के अंगारों से बच जाएँ। जहन्नम

कोई ख़्याली चीज़ नहीं, ये हक़ीक़तें हैं जो मरने के बाद सामने आने वाली हैं।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बेचैन व बेक़रार होकर फिरते थे। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम बेक़रार व बेचैन होकर फिरते थे कि दुनियावी ज़िन्दगी के अन्दर और पूरे आ़लम के अन्दर आख़िरत के फ़िक्र की एक फ़िज़ा बन जाए। ऐसी एक तरतीब लेकर रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया के अन्दर आए।

यतीम दीन को गोद लेने वाले के लिए हलीमा सादिया वाला सम्मान

आज रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह दीन चारों तरफ़ से रिस्ता जा रहा है। और चारों तरफ़ से बिगड़ता जा रहा है। अब यह दीन यतीम हो चुका है जैसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यतीमी की हालत में पैदा हुए और औ़रतें बच्चे लेने के लिए आईं दूध पिलाने के लिए तो उन्होंने मालादारों के बच्चों को उठाया। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नहीं उठाया, यह समझकर कि यह यतीम बच्चा है, बाप का इन्तिक़ाल हो चुका है, दादा के ऐसे तो बहुत पोते हैं। हमको क्या इनाम मिलेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को किसी ने यतीम समझकर हाथ नहीं लगाया। मालादारों के बच्चे ले लिए।

हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बहुत परेशान-हाल औ़रत थीं। उनकी छाती में दूध नहीं था। उनके इलाक़े में क़हत (अकाल) था। ऊँटनी का दूध भी सूख चुका था। उन्होंने भी यहाँ आकर कोशिश की कि किसी मालदार का बच्चा मिल जाए ताकि कुछ पैसे मिल जाएँ और मैं कुछ खा-पी लूँ ताकि मेरी छाती में दूध आ जाए। ऊँटनियों को खिलाऊँ-पिलाऊँ ताकि उनके थनों में दूध आए। ख़ुद हज़रत हलीमा

सादिया का बच्चा था रात-रात भर वह दूध न मिलने की वजह से रोता था। हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा मक्का पहुँचीं लेकिन हज़रत हलीमा को किसी ने बच्चा नहीं दिया। इसलिए कि जब अपने को दूध नहीं पिला पाती तो हमारे बच्चे को क्या पिलाएगी। हज़रत हलीमा को बच्चा नहीं मिला और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाने वाली नहीं मिली। हज़रत हलीमा ने अपने शौहर से कहा कि कोई बच्चा नहीं मिल रहा है, हाँ एक यतीम बच्चा है। जिसका कोई उठाने वाला नहीं है। अगर तुम कहो तो उस यतीम बच्चे को ले लें। इनाम तो मिलने की कोई उम्मीद दुनिया में दिखाई नहीं देती लेकिन आख़िरत में अल्लाह तआला सवाब देगा। तो सवाब की नीयत से कहो तो मैं ले लूँ। दुनियाँ में तो कुछ मिलेगा नहीं।

तुम हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ेहन लेकर यहाँ आए हो

ऐ मेरे प्यारो! अल्लाह तुम्हें जज़ा-ए-ख़ैर दे, तुम्हारा यहाँ पर आना सवाब ही के लिए है। तुम यहाँ दुनिया के लिए नहीं आए। न हमारा दिल गवारा करता है, न हमारा दिल गवाही देता है। हम ज़ाहिर को ही देखकर कह सकते हैं। तुम्हारा ज़ेहन यह बता रहा है कि तुम यहाँ दुनियावी ग़रज़ से नहीं आये। इतनी तकलीफ़ें उठा-उठाकर तुम यहाँ आए हो, यक़ीनन अल्लाह के दीन की फ़िक्र लेकर आए हो। तुम्हारा ज़ेहन हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा वाला ज़ेहन है।

बरकती बच्चा और बरकतों का ज़ाहिर होना

तो हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा दुनिया में तो कुछ मिलेगा नहीं, लेकिन हमें आख़िरत में सवाब मिलेगा। उनके शौहर भले आदमी थे, उन्होंने कहा अच्छा उस यतीम बच्चे को ले लो। जब और

बच्चा नहीं मिलता। हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जब गोद में उठाया तो गोद में उठाते ही हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा की दोनों छातियाँ दूध से भर गईं। एक तरफ़ से हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को दूध पिलाया और दूसरी तरफ़ से आपके रज़ाई (दूध शरीक) भाई हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बच्चे ने दूध पिया। बरकतों का मुज़ाहरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गोद में लेते ही शुरू हो गया। चारा डालने के लिए ऊँटनी के पास गई तो देखा कि ऊँटनी का थन दूध से भरा हुआ है। दूहा तो प्याला भर गया। हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा का सवारी का यह जानवर बहुत दुबला था। और औ़रतों के जानवर मोटे थे। वे औ़रतें चली गईं कि हलीमा का कौन इन्तिज़ार करे। उसका जानवर बड़ा दुबला है चलेगा भी नहीं। हज़रत हलीमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गोद में लेकर सवार हुई हैं और यह जानवर चला है तो जानवर के अन्दर भी ताक़त आ गई। बहुत तेज़ी के साथ चला यहाँ तक कि रास्ते में जो साथ की औ़रतें मिलीं उनके जानवरों से भी यह जानवर आगे निकल गया। तब सारी औ़रतें कहने लगीं हलीमा को "बरकती बच्चा" मिल गया। हलीमा को "बरकती बच्चा" मिल गया। घर पर जहाँ हज़रत हलीमा की बकरियाँ चरती थीं वहाँ बतौर बरकत के ख़ुद से सब्ज़ा (हरयाली, घास) हो जाता था तब सारे लोग अपने चरवाहों से कहते थे कि जहाँ हलीमा की बकरियाँ चरती हैं वहाँ पर ले जाओ। इसलिए कि उसे बरकती बच्चा मिल गया है।

कलिमा पढ़ने वालों में भी ग़ैर-इस्लामी तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी दाख़िल हो रहा है

मेरे मोहतरम दोस्तो! जैसे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम यतीम थे और हज़रत हलीमा ने यतीमी की हालत में गोद लिया था। तो अल्लाह के नबी यहाँ पर जिस पाकीज़ा तरीक़े और जिस दीन को लेकर आए वह पाकीज़ा तरीक़ा और दीन भी आज दुनिया के अन्दर यतीम बन चुका है। पौने चार सौ करोड़ जो ईमान नहीं लाए कलिमा नहीं पढ़ते वे तो इस यतीम को धक्के मारते ही हैं, लेकिन जो कलिमा पढ़ने वाले सौ सवा सौ करोड़ पूरी दुनिया में हैं उनका यह हाल है कि इस यतीम दीन को अपनी दुकान में दाख़िल नहीं होने दोते। अपने घरों में दाख़िल नहीं होने देते, अपनी शादी में दाख़िल नहीं होने देते। इसलिए कि पूरी दुनिया का जैसा मुआ़शरा (समाजी ज़िन्दगी) है उस मुआ़शरे (समाज) के अन्दर मुसलमान भी आ गया। हालाँकि यह समाज तबाही और बरबादी लाने वाला है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस मुआ़शरे को लेकर तशरीफ़ लाए वह हमदर्दी वाला मुआ़शरा (समाज और ज़िन्दगी का तरीक़ा) है। वह रहमदिली वाला मुआ़शरा है। एक दूसरे की भलाई चाहने वाला मुआ़शरा (समाज और तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी) है। ऐसा पाकीज़ा समाज और तरीक़ा लेकर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए जिसके ज़रिये अमन व अमान क़ायम होगा।

दुनिया वाला समाज अमन वाला समाज नहीं

लेकिन दुनिया के अन्दर जो मुआ़शरा (समाज और ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा) है वह मुआ़शरा अमन व अमान का मुआ़शरा नहीं है। यह मुआ़शरा तो पैसे बनाने वाला मुआ़शरा है। इसके अन्दर तो बेकार और बेफ़ायदा चीज़ों में कोशिश ज़्यादा लगवाई जाएगी। ताकि आदमी ज़्यादा फ़ुज़ूलख़र्ची के अन्दर आए। आदमी जितना फ़ुज़ूलख़र्ची के अन्दर आएगा यूरोप और अमेरिकी की मंडियाँ उतना ही ज़्यादा चल सकेंगी।

नई-नई ईजादात (आविषकार) करते हैं। नई-नई घड़ियों के

डिज़ाईन, नए-नए कपड़ों के डिज़ाईन आते रहते हैं और उसको टेली वीज़न पर दिखाते हैं। उसकी पब्लिसिटी और पर लाखों नहीं बल्कि करोड़ों डॉलर ख़र्च करते हैं। और उसको सारा नौजवान तबक़ा देखता है। पब्लिसिटी के अन्दर एक कपड़ा एक साल पहना और उसे आर्ट और फ़ैशन क़रार दे दिया। तो अब वह सड़कों के ऊपर आ गया। अब ये नये कपड़े नौजवानों के बदनों पर आ गए। इस वजह से आ़म ज़िन्दगी यूरोप और अमेरिका वालों की बिल्कुल परेशान करने वाली ज़िन्दगी है और सारा माल चन्द घरानों के अन्दर सूद के रास्ते से जमा हो रहा है और पूरी दुनिया परेशान है।

पश्चिम को ख़तरा इबादतों से नहीं इस्लामी तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी से है

ये अल्लाह के दुश्मन हमें इबादतों के एतिबार से बिल्कुल नहीं देखेंगे। वे समझते हैं कि मुसलमान अगर नमाज़ पढ़ता है तो कोई हर्ज नहीं। वे तो अपना चर्च भी दे देंगे तुम्हें नमाज़ पढ़ने के लिए। उन्हें ख़तरा तुम्हारी इबादतों से नहीं, तुम्हारी नमाज़ों और रोज़ों से नहीं। उन्हें ख़तरा हज और ज़कात से नहीं है। वे देखते हैं कि नमाज़, रोज़ा और इबादतें चाहे ख़ूब कर रहे हों लेकिन 'मुआ़शरत' (सामाजिक ज़िन्दगी) तो वही है जो हमने चालू की है। यानी मुसलमानों ने यूरोप वाली समाजी ज़िन्दगी इख़्तियार की है। अगर इस मुआ़शरत (समाज और ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े) में मुसलमान रहेंगे तो हमारी मंडियाँ चलती रहेंगी। और हमारे सूद के अड्डे बराबर चलते रहेंगे।

दवा तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया बीमार है

मेरे दोस्तो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस मुआ़शरत (समाज और ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े) को लेकर तशरीफ़ लाए हैं वह मुआ़शरत जब हम चालू करेंगे तो अल्लाह की ज़ात से

उम्मीद है कि दूसरी समाजों ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े नीचे उतरेंगे। तब दुनिया के अन्दर अमन व अमान आएगा। हमने पूरी दुनिया का अन्दाज़ा लगा लिया है। सारी दुनिया परेशान है। रास्ता चाहती है। लेकिन उन्हें रास्ता नहीं मिल रहा है। रास्ता तो सिर्फ़ रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लेकर आए लेकिन वह सिर्फ़ किताबों के अन्दर मौजूद है। मुसलमानों के अन्दर वह मौजूद नहीं है। पानी तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया प्यासी मर रही है। दवा तुम्हारे पास है और पूरी दुनिया बीमारी में मर रही है।

इसको किताबों में से निकालो और अपनी ज़िन्दगियों में दाख़िल करो। ताकि दुनिया के लोग इसे देखें और पूरे आ़लम के लोग इस पाकीज़ा तरीक़े को लेने के लिए बिल्कुल तैयार हैं।

तब किसी के रोकने से तुम रुक नहीं सकोगे

यह पाकीज़ा तरीक़ा आए कैसे? इसके लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चार चीज़ों के अन्दर जानी और माली क़ुरबानियों की तरतीब बता दी है। अपने तक़ाज़ों को ज़रूरतों के दर्जे में ले आओ। फ़ुज़ूल चीज़ों और बेकार चीज़ों से निकालो। फिर जान व माल का जो हिस्सा बचे वह इबादतों में, अख़्लाक़ी चीज़ों में और दावत के अन्दर लगे। जब आप यह करेंगे तो ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम चलेगा और ख़ुदा के ग़ैबी निज़ाम से कोने के कोने और मुल्क के मुल्क अल्लाह की तरफ़ जब पलटा खाएँगे तो किसी के थामने और रोकने से तुम रुक नहीं सकोगे।

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसी पाकीज़ा ज़िन्दगी लेकर तशरीफ़ लाए वह आप हज़रात जानते हैं। आज चाहे ईसाई मर्द हों या ईसाई लड़कियाँ हों किस क़द्र उन्हें परेशानियाँ हैं। इसलिए हमारे कारोबार की, हमारे मामलात की, हमारे रहन-सहन की पाकीज़ा ज़िन्दगी जब यूरोप और अमेरिका देखेगा तो सच कहता हूँ तमाम

इनसान इस पाकीज़ा तरीक़े को हाथों हाथ लेने के लिए उमंड पड़ेंगे।

शरारती क़िस्म के लोग हर ज़माने में रहेंगे

शरीर क़िस्म के (शरारत करने वाले) लोगों के लिए मैं नहीं कहता। शरीर क़िस्म के लोग हर ज़माने में रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी थे और पहले के नबियों के ज़माने में भी थे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के दौर में भी थे और हज़रत उमर फ़ारूक़ के दौर में भी शरीर क़िस्म के लोग थे। दौरे उस्मानी में ज़्यादा थे, दौरे अ़ली में कुछ और ज़्यादा थे तो हज़रत मुआ़विया के दौर में उससे भी ज़्यादा। उन्हें बिल्कुल खलेगा लेकिन आ़म पब्लिक के अन्दर एक सलाहियत है। यह आ़म पब्लिक बहुत परेशान है। इसके सामने कोई रास्ता नहीं है।

अगर यही इस्लाम है तो मैं मुसलमान होने के लिए तैयार हूँ (एक वाक़िआ़)

हवाई जहाज़ के अन्दर हम लोग सवार हुए बेरूत से इस्तम्बूल के लिए अमेरिकन हवाई जहाज़ था। तीन चार सौ मुसाफ़िर थे। एक लड़की ख़िदमत-गुज़ार (ऐयर होस्टस) आई। हमारे साथ एक बड़े अफ़सर बैठे हुए थे। उन्होंने उस लड़की से कहा कि एक गिलास पानी लाओ। वह पानी लेकर आई तो उससे कहा कि गिलास यहाँ रख दो। उसके हाथ से नहीं लिया। वह लड़की बाद में उनसे कहने लगी क्या नाराज़ हो गए तुम मुझसे मेरे हाथ से कोई चीज़ नहीं लेते? इनाम भी नहीं दिया तुमने? वह कहने लगे कि भाई मैं मुसलमान हूँ और मुसलमान दूसरे की लड़कियों को नहीं देखा करता। मुसलमान अपनी बीवी के लिए रिज़र्व होता है। वह लड़की हैरत में पड़ गई। जब उसे यह मालूम हुआ कि मुसलमान बीवी अपने शौहर की ख़िदमत करती है। खाना पकाती है। और मुसलमान शौहर कमाकर अपनी बीवी को

देता है। उसने कहा यह तो बिल्कुल बादशाहों वाली ज़िन्दगी है। फिर उसने पूछा तुम्हारे ख़्याल में ऐसे कितने मुसलमान हैं? बताया कि करोड़ों पाकिस्तान में हैं, बंगलादेश में हैं, और करोड़ों दूसरे मुल्कों में रहते हैं।

कहने लगी अरे करोड़ों मुसलमान भरे पड़े हुए हैं जिनकी ऐसी पाकीज़ा ज़िन्दगी है। मैं तो रोज़ाना सफ़र करती हूँ मुझे तो एक मुसलमान ऐसा नहीं मिला। मैं तो जहाज़ में रोज़ाना सफ़र करती हूँ मुझे तो एक भी मुसलमान ऐसा नहीं मिला। अगर यही इस्लाम है तो मैं भी मुसलमान बनने के लिए तैयार हूँ।

पश्चिमी समाज में एक लड़की की हैसियत

आप हज़रात जानते हैं कि यूरोप में शादियों का जो निज़ाम (सिस्टम) है "लव मेरिज" यह किस क़द्र गन्दा मिज़ाज है। लड़का और लड़की जब जवान हो जाएँ तो फिर माँ-बाप के पास वे नहीं ठहरते। माँ-बाप की ख़िदमत भी वे नहीं करते। माँ-बाप उनको रोकते भी नहीं शादी का इन्तिज़ाम वे ख़ुद करें।

यह आप हज़रात जानते हैं कि एक-एक लड़की पन्द्रह-पन्द्रह और बीस-बीस दिन तक शौहर की तरह किसी दूसरे लड़के के साथ रहती है और बीवी की तरह रहती है। यह पसन्द नहीं आया तो उसके पास चली गई। वह पसन्द नहीं आया तो दूसरे के पास चली गई। ये ज़िन्दगियाँ हैं उनकी। अब अगर एक लड़की किसी लड़के के साथ गई और वक़्त गुज़ारा लेकिन अनबन हो गई उस लड़के ने छोड़ दिया यह अकेली रहेगी। माँ-बाप के पास तो जाएगी नहीं। बवॉय फ़्रैंड उसे कोई मिला नहीं, अब ऐसी लड़कियाँ क्या करें?

पश्चिमी मुल्कों की लड़कियों की ख़राब हालत

इंग्लैण्ड के अख़बारों के अन्दर यह आता है कि इस महीने इतनी

हज़ार लड़कियों ने टेलीफ़ोन बॉक्स के अन्दर खड़े खड़े रात गुज़ारी।

मेरे मोहतम दोस्तो! यूरोप से आने वाले यूरोप पर गुस्सा करते हैं और हमको यूरोप में रहकर यूरोप वालों पर रहम आता है कि ऐ अल्लाह! किस क़द्र परेशान हैं ये यूरोप वाले। अल्लाह के महबूब का जो तरीक़ा था वह किताबों के अन्दर रह गया और यूरोप वाले इतने परेशान हैं। अगर मुसलमानों के अन्दर यह पाकीज़ा तरीक़ा आता तो यूरोप वालों को रास्ता मिलता।

मुसलमान लड़िकयों का ज़िन्दगी का रहन-सहन

हमारी लड़कियाँ अपने माँ-बाप के घर रहती हैं। माँ-बाप उनके ख़र्च उठाते हैं। उनकी शादियाँ माँ-बाप करते हैं और शौहर के पास जब जाती है तो शौहर ख़र्चा उठाते हैं। किस क़द्र पाकीज़ा है यह ज़िन्दगी।

मैं कई-कई रातों रोता रहा कि या अल्लाह! कितनी हज़ार लड़कियाँ हैं जो ईसाई हैं। वे टेलीफ़ोन बॉक्स के अन्दर खड़े-खड़े रात गुज़ारती हैं। इसलिए कि उन्हें कोई दूसरा बवॉय फ्रैंड नहीं मिला और न माँ-बाप रखते हैं।

लोग तुम्हारी क़ब्रों को चिमट-चिमटकर रोयेंगे

आप हज़रात यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। मैं सिर्फ़ पाकीज़ा इस्लामी समाज का तज़किरा कर रहा हूँ। सिर्फ़ मुज़ाकरा कर रहा हूँ। इसके मुज़ाकरे में जब आप हज़रात पर इतना असर पड़ रहा है तो जब यह पाकीज़ा ज़िन्दगी दुनिया के अन्दर आएगी तो लोग उमंड-उमंडकर तुम्हारे पास आएँगे। और जब तुम मरोगे तो तुम्हारी क़ब्रों को चिमट-चिमटकर हिचकियाँ मार-मारकर रोएँगे कि यह आदमी था जिसने वैस्ट इंडीज़ का सफ़र किया। इसने बराज़ील का सफ़र किया और वहाँ के लोगों में पाकीज़ा ज़िन्दगी चालू कर दी।

सारी बातें क्योंकर क़ाबू में लाई जा सकती हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो! ये सारी बातें क़ाबू में लाने के लिए हमें यह करना होगा कि दावत वाले काम को हम अपना काम बनाएँ और दावत के ज़रिये अपने ईमान को ताक़तवर बनायें।

अख़्लाक़ वाली ज़िन्दगी दुनिया में चालू जब होगी कि हमारी मुआशरत (ज़िन्दगी का रहन-सहन) ठीक हो जाए। हमारे मामलात दुरुस्त हो जाएँ।

अगर आज मौलाना साहिब ने यह बात बयान की तो बहुत-से यूरोप के चौधरियों के ज़ेहन में आया होगा कि भाई हम भी इसी तरह की एक कॉलोनी बनाएँगे। हम भी यूँ करेंगे और यूँ करेंगे। मेरे प्यारो! इस तरह कॉलोनियाँ नहीं बना करतीं, जड़ के बग़ैर पेड़ नहीं लगा करते।

पाकीज़ा समाज वाली कॉलोनी कैसे बनेगी?

दावत की ज़मीन हो, ईमानियात की जड़ हो, तालीम के हल्क़ों का पानी हो, अल्लाह के ज़िक्र की ग़िज़ा हो, जान व माल की क़ुरबानी की खाद हो। नफ़्सानियत, शैतानियत और गुनाहों से बचने की बाढ़ हो और इस्लाम के कलिमे और इस्लाम के अरकान का तना हो, पूरे दीन का पेड़ हो, अख़्लाक़ की छाल का फल हो और इख़्लास का रस हो। फिर देखिए पूरे आलम के अन्दर दीन फैलता है कि नहीं। यह तरतीब है। इसकी कॉलोनियाँ बनाने से नहीं बनतीं कि बैठकर पैसे जमा किये और कॉलोनियाँ बना दीं इसकी पूरी तरतीब है जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताई है। वह यह कि दावत पर जान व माल लगाकर दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसानों के ज़ेहन में यह बात डालनी है कि करने वाली ज़ात तो सिर्फ़ अल्लाह की है।

ख़ुदा की ताक़त तस्लीम करो तो बेड़ा पार होगा

दावत के ज़रिये दुनिया वालों को यह समझाना है कि ख़ुदा की ताक़त तस्लीम करोगे तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर ख़ुदा की ताक़त तस्लीम नहीं करोगे तो तुम्हारे बेड़े ग़र्क़ होंगे। यह सारे नबियों ने दावत दी और पूरी दुनिया को यह दावत मिली।

सारी दुनिया की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं

तुम्हें भी ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम कराना है। यह मीनारे वाला "अल्लाहु अक्बर" पूरे आ़लम के अन्दर लेकर जाना है। ख़ुदा ताक़त और बरकत दे। ख़ुदा की ताक़त के मुक़ाबले में सारी दुनिया की ताक़तें मकड़ी के जाले हैं। उनकी कोई हैसियत नहीं। मकड़ी हमेशा वीरान घरों में जाले ताना करती है। आबाद घरों में मकड़ी जाला नहीं ताना करती। आज दीन की दावत से, अल्लाह के दीन के मुज़ाकरों से और फ़िक्रे आख़िरत से दुनिया वीरान हो चुकी है।

पूरा आ़लम मकड़ी और मकड़ी के जालों से भरा हुआ है

आप हज़रात ने बताया कि इतना काम हो रहा है। फ़लाँ जगह से इतनी जमाअ़तें निकलीं, अल्हम्दु लिल्लाह जितना हुआ उस पर तो ख़ुदा का शुक्र अदा करना है, लेकिन देखना है बाक़ी कितना है। उस बाक़ी को देखकर और सामने रखकर फिर क़दम उठाना है। और दुनिया में फिरकर दीन की दावत देनी है और लोगों के ज़ेहनों में बैठा देना है कि ख़ुदा के मुक़ाबले में जितनी ताक़तें हैं दुनिया की, ये मकड़ी के जाले से ज़्यादा हैसियत नहीं रखतीं। ये सारे मकड़ी के जाले हैं। इनकी कोई हैसियत नहीं। इसी तरह ख़ुदा के ख़ज़ानों के मुक़ाबले में सारी दुनिया का कुल माल और ख़ज़ाना मच्छर के पर के बराबर भी

नहीं।

दुनिया की ताक़तों की मिसाल

एक वीरान घर है। उसमें मकड़ी ने जाला तान दिया। उसके ऊपर एक कबूतरी ने घौंसला बना दिया। उस घौंसले के तिनके उस जाले पर गिरे और कबूतरी के अंडों के छिलके भी टूटकर उसपर गिरते रहे। जाला टूटा नहीं क्योंकि मकड़ी ने उसपर सहारा दे रखा है, तिनके के ऊपर तिनके गिर रहे हैं मगर जाला नहीं टूट रहा है। अब इस जाले के अन्दर छोटे-छोटे कीड़े फंसे जिन्हें मकड़ी खाती रही और ताक़त वाली बनती रही। इधर से उधर भागी, उधर से इधर आ रही है...... उस मकड़ी ने जाला ताना तो दूसरी मकड़ी ने भी वहाँ जाला ताना। इस तरह पूरा घर मकड़ी और मकड़ी के जालों से भर गया।

इसी तरह पूरा आ़लम मकड़ी और मकड़ी के जालों से भर गया है। आज फ़लाँ मकड़ी (किसी मुल्क का राष्ट्रपति) फ़लाँ मकड़ी के पास गई। फ़लाँ मकड़ी, फ़लाँ मकड़ी से मिली और फ़लाँ गोरा मकड़ा चला और लाल मकड़ी से मिला। और चार घँटे तक उससे बातचीत की। और फ़लाँ जगह इतने मकड़े (मुल्कों के अध्यक्ष) जमा हुए। खुदा-ए-पाक की क़सम ये मकड़ी के जाले से ज़्यादा अहमियत नहीं रखते। खुदा की ताक़त के मुक़ाबले में उनकी कोई हैसियत नहीं है।

अल्लाह के अ़ज़ाब की झाड़ू

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने क़ौम वालों को दावत दी। सारे नबियों ने अपनी क़ौम वालों को दावत दी और यह हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दावत थी, और हमारे सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की दावत थी। तुम भी इस दावत को लेकर सारी दुनिया के अन्दर फैल जाओ और सारी दुनिया को यह बता दो कि खुदा को तस्लीम करोगे तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर खुदा की

ताक़त को तस्लीम नहीं करोगे तो तुम्हारे बेड़े ग़र्क़ होंगे। इन जालों की कोई हैसियत नहीं।

फ़िरऔन के पास मुल्क का जाला, हामान के पास विज़ारत का जाला, क़ारून के पास माल का जाला था। ये बनी इस्राईल को ख़ूब धुतकार रहे थे। उस वक़्त जब उनके अन्दर ईमान की ताक़त नहीं थी।

लेकिन जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। दावत की फ़िज़ा बनाई। बनी इस्राईल के दिलों के अन्दर अल्लाह की ताक़त का यक़ीन पैदा हुआ, तब अल्लाह पाक ने मिस्र के जालों को साफ़ करने का इरादा किया। तब अज़ाब की एक झाड़ू आयी और फ़िरऔन के मुल्क का जाला साफ़ कर दिया। और अल्लाह के अज़ाब की दूसरी झाड़ू आयी तो क़ारून के माल का जाला साफ़ कर दिया, और अल्लाह के अज़ाब की तीसरी झाड़ू आयी तो हामान की विज़ारत का जाला साफ़ कर दिया। ये सारे के सारे जाले हैं। खुदा-ए-पाक की क़सम इनकी कोई हैसियत नहीं है।

हमारी ताक़त बन्दूक़ की एक गोली से भी कम है

यह हम अपनी ताक़त नहीं बता रहे हैं। हम उस अल्लाह की ताक़त बता रहे हैं हम जिस अल्लाह के मानने वाले हैं। हमारी तो सिर्फ़ इतनी ताक़त है कि कोई हमें गोली मार दे और हमारी मौत का वक़्त आ गया है तो हम मर जाएँगे बल्कि उसके लिए गोली की भी ज़रूरत नहीं, अगर कोई घूँसा मार दे और हमारा वक़्त आ चुका है तो हम मर जाएँगे। हम अपनी ताक़त को नहीं बता रहे हैं। जिस अल्लाह के हम क़ायल हैं और जिस अल्लाह को हम मानते हैं उस अल्लाह की हम ताक़त बता रहे हैं।

रूहानी ताक़त भी ख़ुदाई गिरफ़्त से नहीं बचा सकती

जाओ तुम पूरी दुनिया के अन्दर फैल जाओ। अमेरिका में फैल जाओ। कनाडा में फैल जाओ। साल-साल की, चालीस-चालीस दिन की जमाअतें लेकर फैल जाओ। कनाडा में फैल जाओ और अमेरिका में फैल जाओ और हर जगह जाकर बताओ कि अगर ख़ुदा की ताक़त तुम्हारे ख़िलाफ़ हो गई तो तुम कुछ नहीं कर सकोगे। जब ख़ुदा की पकड़ आ जाएगी तो दुनिया की बड़ी-बड़ी ताक़तें कुछ नहीं कर सकेंगी।

मैं तो इससे भी आगे बढ़कर कहूँगा कि अगर ख़ुदा की पकड़ आ जाए तो रूहानी ताक़त भी नहीं बचा सकती। जब ख़ुदा की पकड़ आ गई तो नूह अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बेटे को नहीं बचा सकी, और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बाप को नहीं बचा सकी।

ईमान की ताक़त के मायने

ईमान की ताक़त के मायने हैं अल्लाह की ताक़त का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाए। और मख़्लूक़ात की ताक़त का डर दिल से निकल जाये। मख़्लूक़ात की ताक़त का डर दिल से निकलेगा क़ुरबानियों से। और अल्लाह की ताक़त का दिल के अन्दर यक़ीन आएगा बार-बार अल्लाह का बोल बोलने और सुनने से, और दावत की फ़िज़ा बनाने से।

करने के दो काम

प्यारे दोस्तो! इस ईमान की ताक़त को ज़्यादा करने के लिए दो काम करने होंगे। एक तो दावत की फ़िज़ा बनाना। बार-बार अल्लाह की बड़ाई का बोल बोलना और सुनना। घरों के अन्दर अल्लाह की बड़ाई का बोल बोलना और सुनना, औ़रतों और बच्चों में बोलना और

सुनना, मस्जिदों के अन्दर बोलना और सुनना, बाज़ारों में बोलना और सुनना, सड़कों पर बोलना और सुनना, मुल्कों-मुल्कों के अन्दर जाकर बोलना और सुनना। इस तरह हर जगह जाकर दावत की फ़िज़ा बनाना और उसके लिए कुरबानी देना। जब कुरबानी देंगे तो मख़्लूक़ात का यक़ीन निकलेगा। और जब दावत देंगे तो ख़ुदा का यक़ीन आएगा। इसलिए एक तो दावत का देना ज़रूरी है। और दूसरे अल्लाह का बोल बोलना ज़रूरी है।

दुनिया में दीन ज़िन्दा हो जाए या हमारी और तुम्हारी क़ब्रें यूरोप में बनें

यह काम सिर्फ़ चार महीने का नहीं, सिर्फ़ साल भर का नहीं। कुरआन में कहीं छह महीने और एक साल नहीं है। यह साल और चार महीने तो सिर्फ़ आदत डालने के लिए हैं। कुरआन ने तो हमें बता दिया कि पूरी जान और पूरा माल ख़ुदा तआला ख़रीद चुके हैं:

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم

यह सारी ज़िन्दगी का काम है, करते-करते मरो और मरते-मरते करो।

प्यारो! बिस्तर लपेट-लपेटकर अल्लाह के रास्ते में निकल जाओ, या तो अल्लाह का दीन दुनिया में ज़िन्दा हो जाए या हमारी और तुम्हारी क़ब्रें जाकर यूरोप में बनें। अब बताओ तुम में से कौन है जो पूरी ज़िन्दगी मश्विरे के मुताबिक़ गुज़ारने के लिए तैयार है। अल्लाह तआला हम सब को क़बूल फ़रमाये और अपने दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ से नवाज़े। आमीन।

तक़रीर (5)

यह तक़रीर मर्कज़ हज़रत निज़ामुद्दीन देहली में नवम्बर 1994 ई० को हुई।

इज्तिमाईयत (एकता और संगठन) पैदा करने का तरीक़ा यह है कि हर आदमी दूसरे को नफ़ा पहुँचाए। दूसरे से नफ़ा लेने की फ़िक्र न करे। अल्लाह से लेना और बन्दों को देना, इससे एकता और इत्तिहाद पैदा होता है। अल्लाह से लेने का नाम इबादत है, और बन्दों को देने का नाम ख़िलाफ़त है। यानी एक हाथ फैला रहे अल्लाह से लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला रहे बन्दों की तरफ़, देने के लिए।

इसी तक़रीर का एक हिस्सा

तक़रीर (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَا
وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَ
مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُ
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمً
كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o
وَالسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَان
رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهَارُ
خَالِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا، ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ o (سورة توبة پاره-١١)

وقال النبی صلی اللّٰه علیه وسلم: اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ، بِاَيِّهِمِ اقْتَدَيْتُمْ
اِهْتَدَيْتُمْ (اوكما قال عليه السلام)

सहाबा की ज़िन्दगी हमारे लिए नमूना है

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! मैंने ख़ुतबे में एक हदीस शरीफ़ पढ़ी है। इस हदीस शरीफ़ में बताया गया है कि हिदायत की तौफ़ीक़ के

अगर तुम तलबगार हो, हिदायत वाली ज़िन्दगी अगर तुम अपनाना चाहते हो, हिदायत की रोशनी तुम अगर लेना चाहते हो, तो तुम मेरे सहाबा में से जिस किसी की इत्तिबा (पैरवी) कर लोगे, तुम्हें हिदायत मिलेगी। रोशनी मिलेगी। ईमानी ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा और सलीक़ा मिलेगा।

अगर तुम दावत व तब्लीग़ की मेहनत से जुड़े हुए हो। इल्म के सीखने का मश्ग़ला अपना रहे हो। तिजारत व दस्तकारी को रोज़ी-रोटी कमाने के तौर पर चुन रहे हो। सियासत व राजनीति के मैदान में उतर पड़े हो, अल्लाह के रास्ते में जिहाद का जज़्बा सीने में मौजें मार रहा हो या मख़्लूक़ की ख़िदमत की तौफ़ीक़ और सआदत से सम्मानित हो रहे हो तो ज़िन्दगी के इन तमाम मैदानों में सहाबा-ए-किराम रिज़वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन की ज़िन्दगियाँ, सहाबा-ए-किराम के मुजाहदात, सहाबा-ए-किराम के इरशादात, सहाबा-ए-किराम के मामूलात, हमारे और तुम्हारे लिए रहनुमा हैं, मिसाल हैं, मेयार हैं।

दीन के लिए कुरबानियाँ, दीनी अख़्लाक़ में ताक़त और दीन की हिफ़ाज़त के लिए जद्दोजहद, ये ख़ूबियाँ हमारे अन्दर आएँगी 'दौरे सिद्दीक़ी' (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर) से।

और अगर मुख़्लिसीन और दीन के पैरोकारों की कुरबानियों के नतीजे में और दावत व तब्लीग़ की पूरी दुनिया में चल रही मेहनत के नतीजे में उम्मते-मुस्लिमा दुनियावी शान व शौकत, माल व दौलत और इज़्ज़त व बड़ाई से हमकिनार होती है तो फिर उस वक़्त दौरे फ़ारूक़ी (हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का दौर) हमारे लिए रहनुमा होता है। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु का दौर हमारे लिए हिदायत का मीनार बनता है।

बेमिसाल इस्लामी फ़ुतूहात, 'अम्र बिल्-मारूफ़' (नेकी का हुक्म करने) और 'नही अ़निल्-मुन्कर' (बुराई से रोकने) का उम्मत में

चलन। उलूम व फ़ुनून की ख़िदमत और उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों की देखभाल। तहज़ीब और ज़िन्दगी गुज़ारने के आला उसूल पर हुकूमत के निज़ाम की तश्कील। ज़िन्दगी के इन तमाम गोशों में सीरते फ़ारूक़ी और उनके कारनामे हमारे लिए हिदायत हैं, गाईड हैं, रहनुमा (मार्गदर्शक) हैं।

ज़िन्दगी के हर दौर में सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हमारे लिए राह दिखाने वाले हैं

मगर चूँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक शरीअ़त वह शरीअ़त है जो क़ियामत तक के तमाम इनसानों के लिए हिदायत का नुस्ख़ा है और क़ियामत तक दावत व तब्लीग़ के ज़रिये अल्लाह तआ़ला इस पाक शरीअ़त के उसूल पर इनसानों को जमा फ़रमाते रहेंगे। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी से इनसानों को क़ियामत तक उसूल मिलेंगे और हम ज़िन्दगी के किसी भी मामले में सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी से बेपरवाह नहीं हो सकते।

फ़ितनों का सैलाब हो, माल व दौलत की बोहतात हो, फ़ुतूहात का दौर-दौरा हो, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी से हमें उसूल मिलेंगे।

और अगर इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार हो, बद-अमनी व बेकसी का माहौल हो, तब भी सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगियों में हमें नजात और कामयाबी के सुनहरे उसूल मिलेंगे।

इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार के माहौल में भी सहाबा-ए-किराम का अ़मल हमारे लिए नमूना है

इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार (मतभेद और अशान्ति) का माहौल जो

मुल्क में बेइत्मीनानी और बद-अमनी की फ़िज़ा पैदा कर रहा हो, लेकिन हों दोनों तरफ़ मुख़्लिस। इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करने वाले स्वार्थी न हों और उनके दरमियान कुछ ग़रज़-पसन्दों ने साज़िश के ज़रिये इख़्तिलाफ़ (मतभेद और तकरार) करा दिया हो तो ऐसे वक़्त में उस इख़्तिलाफ़ के दौर में काम करने वाले क्या करें? ये उसूल मिलेंगे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर से सबक़

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मुख़्लिस काम करने वालों के दरमियान स्वार्थियों ने इख़्तिलाफ़ करा दिया था। ये बाग़ी लोग थे जिन्होंने इख़्तिलाफ़ (मतभेद और झगड़ा) कराया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उन्होंने यूँ कहा कि तुम ख़िलाफ़त छोड़ दो, हम दूसरा ख़लीफ़ा बनाएँगे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें समझा रहे थे मगर वे दुनिया के तालिब थे, न माने।

तब मुख़्लिस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से यूँ कहा कि आप हमें इजाज़त दीजिए कि हम बाग़ियों को क़त्ल कर दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मेरे होते हुए किसी मुसलमान का ख़ून बहे, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। अब आपके साथी चुप हो गए।

फिर साथियों ने कहा कि हज़रत! अगर आप उनके क़त्ल का हुक्म नहीं देंगे तो फिर ये आपको क़त्ल कर देंगे। इसलिए आपकी जान बचाने के लिए सिर्फ़ एक रास्ता रह जाता है कि आप ख़िलाफ़त छोड़ दें ताकि आपकी जान बचे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं ख़िलाफ़त नहीं छोड़ सकता। इसलिए कि अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है। और यूँ कहा है कि:

"उस्मान तुमको एक लिबास पहनाया जाएगा और लोग उसे

उतारने का मश्विरा देंगे। और तुम उतरने मत देना। और वह यह ख़िलाफ़त का लिबास है।"

जान को ख़तरे में डालकर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म की पैरवी की

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़िलाफ़त को नहीं छोड़ा। यह अल्लाह के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म को पूरा करने के लिए था वरना क़तई तौर पर उनमें ख़िलाफ़त की हवस नहीं थी।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर बाज़ ना-समझ लोगों ने इल्ज़ाम लगाया है कि उनको ओ़हदे की बड़ी हवस थी। मुख़्लिस दोस्तों से मश्विरे पर भी ओ़हदा नहीं छोड़ा। यह ना-समझी की बात है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु बिल्कुल साफ़ थे। सिर्फ़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात को पूरा किया था।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मुख़्लिस दोस्तों ने कहा कि हज़रत! आप बाग़ियों को क़त्ल करने का हुक्म भी नहीं देते और न ख़िलाफ़त छोड़ते हैं, फिर तो बाग़ी आपको मार देंगे। तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि यह मेरे बस की चीज़ नहीं।

फिर यही हुआ कि बाग़ी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान में आ गए और लोहे का तार लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सर पर मारा। क़ुरआन सामने रखा हुआ था। ख़ून के छींटे क़ुरआन पर गिरे जहाँ पर लिखा हुआ थाः

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ

तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह किफ़ायत करेगा।

और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद हो गए। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न''।

तो अपने उद्देश्य हासिल करने के लिए अगर खुद-ग़र्ज़ लोग, मुख़्लिस काम करने वालों में इख़्तिलाफ़ करा दें तब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल चलेंगे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल क्या हैं? संयम से काम लेना। बरदाश्त करना। सब्र करना। लेकिन अल्लाह व रसूल के हुक्मों को न छोड़ना।

गृहयुद्ध के वक़्त में भी

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़रिये मुसलमानों की रहनुमाई

लेकिन ये खुदग़र्ज़ लोग, अगर इख़्लास से काम करने वालों में इतना इख़्तिलाफ़ करा दें कि आपस में लड़ाई ठन जाए तो ऐसे वक़्त में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल चलेंगे। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर में खुदग़र्ज़ लोगों ने मुख़्लिस काम करने वालों में लड़ाई करा दी। चुनाँचे दो लड़ाईयाँ हुईं।

एक जंगे जमल, और दूसरी जंगे सिफ़्फ़ीन।

दोनों तरफ़ मुख़्लिस काम करने वाले लेकिन खुदग़र्ज़ों ने उनमें आपस में लड़ाई करा दी। ऐसे वक़्त में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने क्या बर्ताव किया? यह बर्ताव बरता कि चाहे सामने लड़ने वाले हैं मगर उनकी मुहब्बत में कोई फ़र्क़ नहीं आया। उनके इक्राम में कोई फ़र्क़ नहीं आया। उनके मिलने-मिलाने में कोई फ़र्क़ नहीं आया।

एक तरफ़ तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उनके साथी हैं और दूसरी तरफ़ खुदग़र्ज़ों ने हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर को कर दिया। एक मजमा उनके साथ, एक मजमा इनके साथ।

और दूसरी में एक तरफ़ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं और

दूसरी तरफ़ हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। दोनों तरफ़ मुख़्लिसीन का मजमा है। मगर ख़ुदग़र्ज़ों ने घुसकर जंग करा दी।

हज़रत अ़ली रिज़यल्लाहु अ़न्हु का अपने मुख़ालिफ़ों के साथ बर्ताव

जंग के उस ज़माने में भी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का रवैया अपने मुख़ालिफ़ों के साथ क्या था? मैं बताता हूँ।

दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब हज़रत अ़ली रिज़यल्लाहु अ़न्हु के साथी ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को शहीद कर दिया तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वह साथी इनाम लेने के लिए हज़रत अ़ली के पास आया।

दोस्तो सुन रहे हो? वह बदबख़्त कह रहा है कि मैंने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जहन्नम में भेज दिया। लेकिन हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने चेहरा फेर लिया। नाराज़ हो गए। डाँटा और यूँ कहा: हज़रत ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) तो जन्नत में हैं और तू जहन्नम में जाएगा। इसलिए कि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:

"ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) जन्नती हैं और ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) का क़ातिल जहन्नमी है।"

इसलिए तू ज़रूर जहन्नमी है।

तो देखिऐ अपने ग्रुप का आदमी है। उसने ग़लत काम किया तो उसके साथी नहीं हैं। यह हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के उसूल से मालूम हुआ कि अपने ग्रुप का आदमी है, ग़लत काम किया तो उससे नाराज़ हो गए और बहुत सदमा हुआ।

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को सदमा

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो चुके हैं। उनका जनाज़ा रखा हुआ है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु लाश के पास गए और दहाड़ें मार-मारकर रोए। खुश नहीं हुए कि देखो मेरे मुक़ाबले पर लड़ने आए थे मारे गए। नहीं! बल्कि दहाड़ें मार-मारकर रो रहे हैं और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की उंगलियाँ लेकर बोसा दे रहे हैं और कहते हैं कि:

"हाय इस शख़्स ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त के लिए अपनी कितनी उंगलियाँ शहीद करवाईं।"

बहुत रोए और रो-रोकर यूँ कहा कि:

"काश! आज से कई साल पहले मैं मर गया होता तो मुझे यह दिन न देखने पड़ते।"

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का रवैया देखा आपने कि आमने-सामने लड़ने वाले की मौत पर उन्हें किस क़द्र सदमा हुआ। इक्राम में फ़र्क़ नहीं आया। हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद व रिश्तेदारों के साथ ज़िन्दगी भर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मुहब्बत का मामला करते रहे।

नमाज़ अली की अच्छी और खाना तुम्हारा अच्छा है

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक दूसरी भी जंग है। हज़रत अली व मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के बीच खुदग़र्ज़ लोगों ने लड़ाई करा दी।

इस जंग के वाक़िआत में आता है कि एक साहिब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथी थे लेकिन खाने का वक़्त जब आता तो वह हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के दस्तरख़्वान पर नज़र आते।

जंग की सफ़ें लगतीं तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ। नमाज़ की सफ़ लगती तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इसके बारे में इल्म हुआ तो बुलाकर पूछा कि भाई यह क्या? खाना तो हमारे दस्तरख़्वान पर और नमाज़ व लड़ाई में उनके साथ, रहना-सहना उनके साथ।

उसने कहा कि नमाज़ तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अच्छी है, हाँ! खाना तुम्हारा अच्छा है। (अल्लाहु अक्बर। अल्लाह उन्हें अपनी रहमतों में ग़र्क़ करे)।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनको इजाज़त दे दी और साथियों से कह दिया कि उसे रोकना मत, दस्तरख़्वान पर खाने के लिए आए तो खाने देना।

रूम के बादशाह को हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु का जवाब

इस जंग के दौरान हज़रत मुआ़विया के पास 'क़ैसरे रूम' (रूम के बादशाह) का दूत आया और कहा कि तुम्हारी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से लड़ाई हो रही है। कहो तो मदद के लिए फ़ौज भेज दूँ? हज़रत मुआ़विया ने जवाब दिया कि जाकर कह दो यह हमारी आपस की लड़ाई है, लेकिन अगर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिहाद के लिए लश्कर तैयार करें और यह ऐलान हो कि 'क़ैसरे रूम' पर हमला करेंगे तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लश्कर का सबसे पहला फ़ौजी मुआ़विया (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) होगा।

यह उन लोगों के अन्दर इख़्लास था कि नौबत क़त्ल व क़िताल की है लेकिन इक्राम में और दीन के तक़ाज़े के लिए अपनी अना और सरदारी का ख़्याल तक न हुआ।

यह जिहाद नहीं गृहयुद्ध है, हज़रत अ़ली का ऐलान

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की फ़तह होने पर लोग उनके पास आए और कहा कि जो लोग मुक़ाबिल के शहीद हो गए तो क्या उनकी औरतों को हम बाँदी बना लें? उनके लड़कों को हम अपना ग़ुलाम बना लें? मरने वालों के माल को हम आपस में माले ग़नीमत के तौर पर तक़सीम कर लें?

अल्लाह तआ़ला हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपनी रहमतों में ग़र्क़ करे, हज़रत अ़ली खड़े हो गए और ऐलान कर दयाः

"ख़बरदार! यह जिहाद नहीं है, आपस का गृहयुद्ध है। इसलिए जो शहीद हो गए उनकी औ़रतें बिल्कुल आज़ाद हैं। उनके बच्चे बिला शुब्हा आज़ाद हैं। माल उनका कुरआन के मुताबिक़ उनके रिश्तेदारों में तक़सीम होगा।

हज़रत अ़ली के दौर के गृहयुद्ध में मुसलमानों के लिए रहनुमाई

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में आपस की जो ख़ाना-जंगी (गृहयुद्ध) हुई, अगर यह न हुई होती हो क़ियामत तक मुसलमानों के अन्दर आपस की लड़ाईयों में क्या करना होगा? कितना मुश्किल होता। कुरआन पाक के अन्दर एक आयत हैः

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِىْ تَبْغِىْ حَتّٰى تَفِىْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ (پاره-٢٦)

अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मिलाप करा दो। फिर अगर चढ़ा चला जाए उनमें से एक दूसरे पर, तो तुम

सब लड़ो उस चढ़ाई वाले से यहाँ तक कि लौट आये वह अल्लाह के हुक्म पर। फिर अगर लौट आया तो मिलाप करा दो उनमें बराबर और इन्साफ़ करो। बेशक अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करते हैं इन्साफ़ करने वालों से।

कुरआन पाक की इन आयतों का मतलब समझना बड़ा मुश्किल होता अगर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दौर के ये वाकिआ़त न होते।

ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का मक़ाम

रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा गए हैं:

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيْنَ ٥ (الحديث)

यानी ऐ मुसलमानो! मेरे तरीक़े को मज़बूती से पकड़ लो। क्योंकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब दुनिया से पर्दा फ़रमा गए तो वह दौर आया है जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दौर तक कभी नहीं आया था।

नबी तो और भी पर्दा फ़रमा गए लेकिन नबी के दुनिया से जाने के बाद फिर दूसरे नबी के आने का दुनिया में इन्तिज़ार रहता था। हमारे नबी ऐसे गए कि अब दूसरा नबी नहीं आएगा।

ख़िलाफ़त क्या है?

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस दुनिया से चले जाने के बाद फिर यह उम्मत नबियों वाला काम कैसे करे? इस बात का पता चलेगा ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के दौर से।

ख़िलाफ़त क्या है? नबी की ज़ात के बाद नुबुव्वत वाला काम नबी वाले तरीक़े पर करना।

यह है ख़िलाफ़त, और यह ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के दौर से मालूम होगा।

ख़िलाफ़त के दौर से मिलने वाले राहनुमा सबक़

इजाज़त दीजिए कि मैं अपनी पिछली बात एक बार फिर दोहरा दूँ:

दौरे सिद्दीक़ी हमें बताता है कि चारों तरफ़ से जब फ़ितने खड़े हो जाएँ और दीन मिटना शुरू हो जाए तो काम करने वाले क़ुरबानियों के लिए आगे बढ़ें। चुनाँचे क़ुरबानी में उम्मत को आगे बढ़ाया और अल्लाह ने फ़ितने दूर कर दिये।

दौरे फ़ारूक़ी ने बताया कि जब मुख़्लिस काम करने वालों पर दुनिया हलाल बनकर आ जाए बग़ैर माँगे हुए तो उस वक़्त में सादगी के अन्दर फ़र्क़ न आये और जितना माल हो सके दीन के काम पर लगा दिया जाए। क़ुरआन व हदीस के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ख़र्च किया जाए।

दौरे उस्मानी ने क्या बताया कि दीन के काम करने वालों पर जब मुसीबत आ जाए और ग़रज़-परस्त लोग घुसकर उनमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद और मनमुटाव) करा दें, तो संयम, बरदाशत, और सब्र से काम लिया जाए। लेकिन अल्लाह व रसूल के हुक़ूक़ न छोड़े जाएँ।

और अगर ख़ुदग़र्ज़ लोग इख़्लास वालों में जंग करा दें तो ऐसे मौक़े पर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले उसूल चलेंगे, कि इक्राम व एहतिराम और आपस की मुहब्बत में किसी क़िस्म का कोई फ़र्क़ नहीं आना चाहिए।

यह है ख़िलाफ़ते राशिदा का ख़ुलासा।

क़ियामत तक के लिए उसूल

क़ियामत तक इस उम्मत पर जितने हालात आने वाले हैं, मुल्कों में, ख़ानदानों में, क़ौमों में, घरों में, उन हालात के बारे में अल्लाह का क्या हुक्म है? और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का क्या तरीक़ा है? इसको समझने के लिए

तेईस साल रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाले, ढाई साल सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले, बारह साल हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले, बारह साल हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु वाले और पाँच साल हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ज़माना।

ये तमाम ज़माने क़ियामत तक उम्मत के लिए उसूल रहेंगे। हमारे जितने उलमा और दीन के बड़े दरमियान में गुज़रे, उम्मत पर बहुत-से हालात आए तो उन्होंने कुरआन को हाथ में लेकर देखा कि क्या करना है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीसों को लेकर देखा कि क्या करना है। और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी को सामने रखकर देखा कि अब हमें क्या करना है। उलमा और बुज़ुर्गों ने ग़ौर करके उम्मत की रहनुमाई (मार्गदर्शन) की है।

सहाबा हमारे लिए नमूना हैं

हमारे लिए तीन चीज़ हैः

एक तरफ़ कुरआन, एक तरफ़ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीसें और एक तरफ़ सहाबा-ए-किराम रिज़्वानुल्लाहि अ़लैहिम अ़ज्मईन की ज़िन्दगियाँ। क्योंकि कुरआन कहता हैः

وَالسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهَارُ خَالِدِیْنَ فِیْهَا اَبَدًا، ذٰلِکَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ○ (پاره– ۱۱)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि मुहाजिरीन और अन्सार से अल्लाह राज़ी है। दूसरे उन लोगों से भी राज़ी है जो मुहाजिरीन और अन्सार के पीछे-पीछे इख़्लास से चले।

कुरआन पाक की यह आयत बताती है कि क़ियामत तक सहाबा

की ज़िन्दगी हमारे लिए नमूना है।

जन्नत में जाने वाले लोग

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल के अन्दर बहत्तर फ़िर्के हुए और मेरी उम्मत के अन्दर तिहत्तर फ़िर्के होंगे। बहत्तर तो जहन्नम में जाएँगे और एक फ़िर्क़ा जन्नत के अन्दर जाएगा।

जन्नत के अन्दर जाने वाला फ़िर्क़ा कौन होगा?

مَآاَنَاعَلَيْهِ وَاَصْحَابِىْ

जिस रास्ते पर मैं और मेरे सहाबा हैं, जो इस रास्ते पर चलेगा वह जन्नत में जाएगा। और बाक़ी बहत्तर फ़िर्के जहन्नम में जाएँगे।

तो इस हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुआ कि हर सहाबी की ज़िन्दगी क़ियामत तक उम्मत के लिए नमूना है। मालूम हुआ कि क़ियामत तक मुसलमानों के लिए तीन बातें रहनुमा हैं:

एक तरफ़ कुरआन, एक तरफ़ हदीस, एक तरफ़ सहाबा की ज़िन्दगी।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के आपसी झगड़ों का राज़

अब रहा यह कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दरमियान बहुत-सी बातें ऐसी हुईं कि जिनके बारे में उनमें आपसी इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और विवाद) हुआ। मगर उसके अन्दर अल्लाह की बड़ी मस्लेहत यह भी है कि बाज़ ना-मुनासिब लोगों से दावत का काम दुनिया में लेना है तो किस उसूल से ऐसे ना-मुनासिब लोगों को मुनासिब रास्ते पर लाया जाए। इन इख़्तिलाफ़ात (झगड़ों और विवादों) में ये उसूल पोशीदा हैं और क़ियामत तक यही उसूल चलेंगे।

सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी हमारे सामने हो। कि ना-मुनासिब काम हो जाने के बाद उन्होंने रो-धोकर तौबा की तो अल्लाह ने उन्हें

माफ़ कर दिया। लिहाज़ा हर सहाबी "रज़ियल्लाहु अन्हु" हुआ। यानी अल्लाह उनसे राज़ी है।

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु बादशाहों के लिए नमूना हैं

ख़िलाफ़ते-राशिदा पूरी हुई। उसके बाद हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का दौर आया। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं। कुफ़्र व शिर्क की हालत में कुछ भी उन्होंने किया लेकिन जब वह मुसलमान हुए तो पिछले सारे गुनाह मिट गए जिनके बारे में अल्लाह तबारक व तआला क़ियामत में नहीं पूछेंगे। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु भी इस उम्मत के वास्ते रहबर हैं। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना बाद वाले ज़माने में होने वाले बादशाहों के वास्ते नमूना है। बादशाह लोग अपनी बादशाहत का निज़ाम कैसे चलाएँ? हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु उनके लिए नमूना हैं।

या अल्लाह! कोई मुझे टोकने वाला नहीं अमीर मुआविया का वाक़िआ

आप हज़रात को एक क़िस्सा सुनाऊँ!

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिन मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुतबा दिया और ख़ुतबे में इरशाद फ़रमाया कि:

"मुसलमानो! बैतुल्माल (इस्लामी सरकारी ख़ज़ाने) में मुसलमानों का जो सबका माल है, हमारा जहाँ जी चाहेगा हम ख़र्च करेंगे। जिसको जी चाहे दें और जिसको चाहें न दें।"

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुतबे में यह कहा और सारा मजमा ठंडा था। क्योंकि उनकी ही हुकूमत थी। तीन चार हफ़्ते

हर जुमा को खुतबे में यह बात कही। लेकिन मजमा चुप! फिर एक बार यह खुतबा दिया तो एक बड़े मियाँ खड़े हुए और भरे मजमे में कहा:

"हज़रत! मुसलमानों का जमा हुआ सबका माल बैतुल्माल का है। यह आपका नहीं है। यह मुसलमानों का है। बग़ैर मुसलमानों से मश्विरा किए आपको ख़र्च करने का इख़्तियार नहीं है।"

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु उन बड़े मियाँ को लेकर घर गए और उसके बाद वाले जुमा को तशरीफ़ लाए और खुतबा दिया और खुतबा देकर फ़रमाया कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक बात सुनी थी, वह इसके बारे में थी कि कौनसा बादशाह जन्नती है और कौनसा बादशाह जहन्नमी है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह बादशाह जहन्नमी होगा जो सबके इकट्ठे किये हुए माल को चाहे तब्लीग़ के अन्दर हो, चाहे किसी और इदारे में, उसका खाना जायज़ नहीं। जिस तरह यतीम के माल को हर एक के लिए खाना जायज़ नहीं। यतीम का जो कारोबार करेगा अगर वह ज़रूरत-मन्द नहीं है तो वह उसमें से एक पैसा न ले। लेकिन अगर एक आदमी तंगदस्त है और यतीम के कारोबार को संभाल रहा है तो कुरआन ज़रूर इतनी इजाज़त देता है कि अपनी ज़रूरत को पूरा कर ले। जो माल मुश्तरका (सब का) हो उसकी बहुत ही फ़िक्र ज़रूरी है। क़ियामत के दिन उसका हिसाब होगा।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने खुतबे में यह कहा कि यह हदीस मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी, अब मैंने यह बात कहकर देखना चाहा कि मैं जन्नती हूँ या जहन्नमी।

अल्लाह के करम से उम्मीद है कि जन्नत मिलेगी, क्योंकि एक टोकने वाला मिल गया

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब मैंने कई बार खुतबे दिए और सारा मजमा सन्नाटे में रहा। तो मैं सारे दिन दहाड़ें मार-मारकर रोता रहा कि:

"ऐ अल्लाह! तेरे नबी की बात झूठी हो नहीं सकती। मैं एक ग़लत बात पूरे मजमे में कह रहा हूँ, कोई मुझे टोकने वाला नहीं है। इस फ़रमान के मुताबिक़ तो मैं जहन्नमी हूँगा।"

इसलिए मैं रोता रहा लेकिन जिस दिन बड़े मियाँ ने खड़े होकर भरे मजमे में टोका तो मुझे इत्मीनान हुआ और मैं बहुत खुश हुआ कि ऐ अल्लाह! तेरे रहम व करम से उम्मीद है कि जन्नत मिलेगी। क्योंकि एक टोकने वाला मुझे मिल गया।

मौजूदा दौर कौनसा दौर है?

मोहतरम दोस्तो! एक क़िस्सा सुना दूँ!

एक जगह पुराने काम करने वाले अ़रब हज़रात हज़ारों की तायदाद में जमा हुए। हमारा बयान हुआ। मौज़ू (विषय) "खुलफ़ा-ए-राशिदीन का दौर" था। मैंने बहुत मुख़्तसर बयान किया और फिर अ़रबों (अ़रब के रहने वालों) से मैंने पूछा कि बताओ यह कौनसा दौर है? दौरे सिद्दीक़ी है, दौरे फ़ारूक़ी है, या दौरे उस्मानी है, या दौरे अ़लवी?

एक पुराने अ़रब खड़े हुए। उन्होंने कहा कि यह दौरे फ़ारूक़ी दिखाई देता है। मैंने कहा क्यों? उन्होंने कहा कि इस वजह से कि दीन का जो भी काम करने वाले हैं, उनके पास आज माल अच्छा-ख़ासा आ गया है।

दौरे फ़ारूक़ी माल आने से नहीं बनता

मैंने अर्ज़ किया कि दौरे फ़ारूक़ी सिर्फ़ माल आने से नहीं बनता। दौरे फ़ारूक़ी बनता है दौरे सिद्दीक़ी की कुरबानियों के नतीजे में। तो दौरे सिद्दीक़ी यह जड़ का दौर है। उसके अन्दर ख़ूब कुरबानियाँ हैं।

दौरे सिद्दीक़ी में ईमान में ताक़त पैदा की गई। दौरे सिद्दीक़ी में अख़्लाक़ में ख़ूब मज़बूती पैदा की गई। जिससे दीन का पेड़ ख़ूब निखरा। इसलिए दौरे नबवी और दौरे सिद्दीक़ी जड़ का दौर है और दौरे फ़ारूक़ी फल का दौर है। दौरे फ़ारूक़ी आता है दौरे सिद्दीक़ी के नतीजे में। ख़ाली माल आने से दौरे फ़ारूक़ी नहीं बनता।

दौरे फ़ारूक़ी कब बनता है?

दौरे फ़ारूक़ी उस वक़्त बनता है जबकि कुरबानियाँ देकर चारों तरफ़ दीन फैले। और फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला मुख़्लिसीन के क़दमों पर दुनिया हलाल बनाकर डाल दें। दुनिया बग़ैर माँगे आये, हलाल तरीक़े पर आये। तब यह दौरे फ़ारूक़ी है।

ग़ौर करो आजकल माल जितना आ रहा है, कारोबार के रास्ते से या किसी और रास्ते से उसमें अक्सर व बेशतर (ज़्यादातर) हराम मिलेगा। दूसरे से माल माँग, माँगकर जमा किया तो यह दौरे फ़ारूक़ी नहीं।

वहाँ माल माँगा नहीं गया था बग़ैर माँगे हलाल माल आया था। 'क़ैसर' व 'किस्रा' (रूम और ईरान के बादशाहों) के ख़ज़ाने हलाल माल बनकर बग़ैर माँगे हुए मुसलमानों के पास आए।

दीनी मदरसों के चन्दे को हराम कहने का हमारा मुँह नहीं

लेकिन मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! तुम लोग मदरसे वालों पर एतिराज़ मत करना कि ये लोग तो चन्दा माँग-माँगकर मदरसे चला रहे हैं।

चन्दा माँगना अगर हराम होता तो फिर जिन मदरसों में हम लोगों ने पढ़ा और बड़े-बड़े उलमा जो कुरआन व हदीस से वाकिफ़ हैं, जब उन्होंने चन्दे को हलाल कहा है तो चन्दे को हराम कहना यह हमारा-तुम्हारा मुँह नहीं होना चाहिए।

لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ (پارہ-۲۸)

जिस चीज़ को अल्लाह ने हलाल कर दिया है उसे तुम क्यों हराम करते हो।

यह उनके उसूल हैं। इन उसूलों पर वे अ़मल करते हैं। कैसा माँगना हलाल है और कैसा माँगना हराम है। उलमा यह चीज़ अच्छी तरह जानते हैं। इसपर हमें बिल्कुल एतिराज़ नहीं करना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि आदमी की जान बचाने के लिए मुर्दार खाना जायज़ हो जाता है। इसलिए इन मसाइल के अन्दर हमें बिल्कुल बोलना नहीं है।

मना किये हुए तरीक़े पर माल आया तो 'दौरे क़ारूनी' है

लेकिन दौरे फ़ारूक़ी उस वक़्त बनता है जबकि हलाल माल आए और बग़ैर माँगे आए। यानी ऐसे माँगे बग़ैर जिससे शरीअ़त ने मना किया है। फिर तो यह दौरे फ़ारूक़ी है। और अगर शरीअ़त के मना किए हुए तरीक़े पर माँगकर आया या हराम का आया तो फिर दौरे फ़ारूक़ी नहीं बनेगा बल्कि यह 'दौरे क़ारूनी' बनेगा।

वे लोग जिनके लिए यह दौर दौरे फ़ारूक़ी बन सकता है

इस 'दौरे क़ारूनी' के लिए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम वाली बेचैनी और बेक़रारी काम आएगी।

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! अगर दीन के काम करने वालों के

पास माल आया तो हमें हक़ नहीं है कि हम सब के बारे में यह कह दें कि यह दौरे क़ारूनी है। क्योंकि कुछ चीज़ें हर जगह अलग और क़ायदे से बाहर भी होती हैं। बहुत-से ऐसे भी हैं कि जिनके पास माल आया और बग़ैर माँगे आया और हलाल का आया तो उनके लिए हम दौरे क़ारूनी नहीं कह सकते। उनके लिए दौरे फ़ारूक़ी बन सकता है।

आ़म तौर से जो दिखाई देता है तो यही है कि माल हराम तरीक़े से आता है या माँगने से आता है, लेकिन अगर कहीं ऐसा नहीं तो फिर वहाँ दौरे फ़ारूक़ी है।

मौजूदा दौर दौरे उस्मानी नहीं बन सकता

जब मैंने यह बात कही तो वह अ़रब साहिब जिन्होंने दौरे फ़ारूक़ी बताया था बैठ गए। तब एक दूसरे अ़रब साहिब खड़े हुए और कहने लगे कि यह दौरे उस्मानी है!

मैंने कहा क्यों? उन्होंने कहा इसलिए कि आजकल दीन का काम करने वालों में बहुत इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और विवाद) है। मैंने कहा दौरे उस्मानी उस वक़्त बनता है जब दोनों तरफ़ मुख़्लिसीन हों और उनमें इख़्तिलाफ़ कराने वाले ग़रज़-परस्त और दुनिया हासिल करने वाले हों, तब तो दौरे उस्मानी बनेगा। लेकिन अगर दोनों तरफ़ ख़ुदग़र्ज़ हों, दोनों तरफ़ दुनिया के तालिब हों, दोनों तरफ़ माल की तलब रखने वाले हों तो फिर यह दौरे उस्मानी नहीं बनेगा। क्योंकि दोनों तरफ़ ग़र्ज़ वाले थे, उनमें इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और विवाद) हुआ। तो यह तो दौरे शैतानी बना और इसमें हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम वाले आँसू काम आएँगे।

वे लोग जिनके लिए यह दौर दौरे शैतानी नहीं बन सकता

ज़्यादातर जगह दीन का काम करने वालों में जब इख़्तिलाफ़ होता

है तो आ़म तौर से दोनों तरफ़ ग़र्ज़ी लोग होते हैं।

लेकिन अगर कहीं पर दोनों तरफ़ इख़्लास वाले हों और दुनिया के तालिब लोगों ने इख़्तिलाफ़ करा दिया हो तो वहाँ दौरे उस्मानी बनेगा। कुछ चीज़ें हर जगह मजमूई हुक्म से अलग और बाहर होती हैं। हमें इल्ज़ाम नहीं लगाना चाहिए कि जहाँ इख़्तिलाफ़ (मतभेद और विवाद) है उसको दौरे शैतानी कहना शुरू कर दें। हमें यह हक़ नहीं।

दौरे अ़लवी कब बनता है?

जब मैंने यह बात कही तो सारे अ़रब चुप, कि हमारी ज़बान पर यह भी नहीं आ रहा कि यह दौरे अ़लवी है। दौरे उस्मानी नहीं फिर दौरे अ़लवी क्यों नहीं? हर जगह मुसलमान आपस में लश्कर-बन्द होकर लड़ रहे हैं मगर फिर भी हमें हिम्मत नहीं कि कहें कि यह दौरे अ़लवी है।

क्योंकि यह दौर दौरे अ़लवी उस वक़्त बनेगा जब दोनों तरफ़ लड़ने वाले मुख़्लिसीन हों, यहाँ तो पूरी दुनिया में जितनी लड़ाईयाँ चल रही हैं वे तो मुल्क व माल के लिए चल रही हैं।

दूसरों के बारे में अच्छा गुमान, अपने बारे में चिन्तित

लेकिन एक बात खुलकर अ़र्ज़ कर दूँ कि पूरे आ़लम के अन्दर मुसलमानों की आपस की जितनी लड़ाईयाँ हैं, उन सबके बारे में हमें हक़ नहीं पहुँचता कि कह सकें कि ये अपनी ग़र्ज़ों के लिए लड़े। अगर कहीं कोई लड़ाई अल्लाह के दीन के लिए हो रही हो तो वहाँ दौरे अ़लवी बन सकता है। हक़ और दीन ज़िन्दा हो जाए अगर मुसलमान कहीं इसके लिए लड़ रहे हों तो यह दौरे अ़लवी बन जाएगा, उस जगह के लिए।

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! बात बहुत इशारों के साथ हो रही है। समझदार लोग समझ जाएँ और जिनकी समझ में न आए वे

समझने की कोशिश भी न करें।

देखिए हरगिज़-हरगिज़ किसी इदारे में दीन का काम करने वालों पर किसी तरह का इल्ज़ाम लगाने का हमें हक़ नहीं, हम अपना काम कर रहे हैं। हर आदमी अपनी फ़िक्र करे। दूसरे के बारे में अच्छा गुमान और अपने बारे में फ़िक्रमन्द (चिन्तित) हो तो यह आदमी बहुत तरक़्क़ी करेगा।

यह फ़ितनों का दौर है

फिर अ़रबों (अ़रब के रहने वालों) ने पूछा कि मौलवी साहिब! आप बता दीजिए। मैंने कहा कि आ़म तौर से पूरे आ़लम के जो हालात हैं उसमें इस वक़्त हर जगह फ़ितना है। झूठी नुबुव्वत के दावे हैं। और बाज़े ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हमारे लिए बस कुरआन है ये हदीस को नहीं मानते। बाज़े ऐसे हैं कि जो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मुहब्बत में इतने आगे बढ़ गए कि हद से ज़्यादा। बाज़ ऐसे हैं कि हमारे हाथों में हुकूमत आएगी तो दीन चलेगा। और हम कहते हैं कि हिक्मत होगी तो दीन चलेगा।

ईमान में ताक़त पैदा करो

हम ख़्वाह-मख़्वाह हुकूमत वालों से कहें कि तुम नीचे को आओ हम तुम्हारी जगह पर आएँगे और इस्लाम को पूरी दुनिया में चलाएँगे। तो यह पूरी दुनिया से लड़ाई का मोल लेना है। और अगर हम यह कह दें ऐ हुकूमत वालो! और ऐ बड़े-बड़े ताजिरो! माल तुम्हारे हाथ में रहे! ऐ जागीरदारो! ज़मीन तुम्हारे हाथ में रहे! ऐ ओ़हदेदारो! ओ़हदा तुम्हारे हाथ में रहे! हम एक कौड़ी तुमसे नहीं ले रहे हैं। हम सिर्फ़ तुम से यह कहते हैं कि तुम अपने अन्दर ईमान में ताक़त पैदा करो और अल्लाह की बड़ाई दिलों में पैदा करो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लाए हुए पाक तरीक़े के अन्दर लोगों का यक़ीन

पैदा करो। पाक कलिमे वाला यक़ीन लोगों के दिलों में पैदा करो और नमाज़ 'ख़ुशू व ख़ुज़ू' (पूरे ध्यान और आजिज़ी) वाली सीखो। और पूरी ज़िन्दगी के अन्दर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े का इल्म लेकर उसके तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो।

जो भी करो क़ियामत के ध्यान के साथ करो

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह पाक का ज़िक्र इतना करो कि हर वक़्त अल्लाह का ध्यान जमा रहे। आख़िरत की फ़िक्र रहे। इसलिए कि क़ियामत के दिन तुम्हें अल्लाह के सामने जाना है। और दुनिया के अन्दर हम जो कुछ कर रहे हैं वह सब का सब बाक़ायदा लिखा जा रहा है। चाहे भला हो या बुरा। और सारे का सारा क़ियामत के दिन हर एक के सामने खुलकर आ जायेगा। और अल्लाह पाक फ़रमायेगा कि अपना रजिस्टर तुम देख लो। अपना हिसाब तुम कर लो। इसलिए क़ियामत के ध्यान और ख़्याल के साथ ताजिर अपनी तिजारत चलाए। खेती करने वाला खेती करे। हुकूमत चलाने वाला हुकूमत चलाए। विज्ञान वाले वैज्ञानिक तरक़्क़ियाँ करें।

लेकिन अल्लाह की बड़ाई हमारे दिलों में हो, हम हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दामन हाथ से छूटने न दें। और हर वक़्त आख़िरत का ध्यान हो।

अल्लाह पाक फ़रमाते हैं।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا○ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ، كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا○ (پاره- ۱۵)

हर इनसान भला या बुरा जो कुछ कर रहा है वह उसके गले का हार है और लिखने वाले लिख रहे हैं। और वह रजिस्टर हर आदमी के सामने रख दिया जाएगा। और कह दिया जाएगा कि अपना रजिस्टर खुद पढ़ ले। अपना हिसाब तू खुद कर।

यह बड़ी दर्द भरी आयत है। जब आदमी अपना रजिस्टर देखेगा तो तन्हाईयों के अन्दर जो काम किए होंगे और तन्हाईयों के अन्दर जो बातें की होंगी वे सारी की सारी उसके अन्दर लिखी हुई मिलेंगी। इसलिए कि अल्लाह के इल्म से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं। वह सब के सब फ़रिश्ते लिखते हैं।

क़ियामत के दिन जब वह नामा-ए-आमाल यानी रजिस्टर सामने आएगा तो इनसान हैरान रह जाएगा और यूँ कहेगाः

مَالِ هٰذَا الْكِتَابِ لَايُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّ لَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصَاهَا وَوَجَدُ وْامَاعَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا o (پاره–١٥)

"क्या हो गया इस रजिस्टर को, छोटी और बड़ी कोई चीज़ नहीं छोड़ी और हर कोई अ़मल जो दुनिया में किया था वह सब इसके अन्दर आ गया।"

आख़िरत आमाल के बदले की जगह है

दुनिया में जितने भी अ़मल हम करते हैं, भले अ़मल करते हैं तो जन्नत में हूरों, बाग़ों, नहरों और महलों की शक्ल में बदल जाएँगे, और बुरे आमाल ज़न्जीरों हथकड़ियों, बेड़ियों और साँप-बिच्छू की शक्ल इख़्तियार कर लेंगे। अल्लाह पाक और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमें इसकी ख़बर दे रहे हैं।

سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ

"सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर" हमने इन कलिमात को ज़बान से अदा किया और जन्नत के अन्दर पेड़ लग गए। ज़कात अदा नहीं की तो बहुत बड़ा अज़्दहा बन गया। ज़कात अदा नहीं की तो सोने-चाँदी के पतरे बनाकर क़ियामत के दिन दाग़ा जाएगा। और अगर हम कोई अच्छा अ़मल करेंगे तो वह किसी नेमत की शक्ल क़ियामत के दिन इख़्तियार करेगा।

अल्लाह के ख़ज़ाने तो देख....

इसकी मिसाल दुनिया में लीजिए! जैसे:

एक गुठली है आम की। मामूली सी। उसको आपने ज़मीन के अन्दर डाला, पानी से सींचा, तो उसके अन्दर से पूरा पेड़ निकल आया और सैकड़ों फल आ गए। उन सैकड़ों आमों में से हर एक के अन्दर एक गुठली और हर एक में सैकड़ों आम। तो इस तरह सदियों तक करोड़ों आम बनेंगे जो सिर्फ़ एक गुठली के अन्दर छुपे हुए हैं और उन्हें अल्लाह पाक ने निकाला है।

इसी तरह मर्द और औरत जब मिलते हैं तो 'मनी' (वीर्य) के दो क़तरे जमा होने से बच्चा पैदा हुआ। अब बच्चा बड़ा हुआ तो उसके दस बच्चे हुए। फिर उन दस बच्चों में से हर एक के पाँच-पाँच लड़के हुए। इस तरह सैकड़ों साल तक लाखों इनसान तैयार होंगे। और वे छुपे हुए थे 'मनी' के दो क़तरों में। अल्लाह पाक कह रहे हैं कि इस पर ग़ौर करो। मेरी कुदरत तो देख कितनी बड़ी है। मेरे ख़ज़ाने तो देख कितने बड़े हैं।

ख़ुदा की नेमतों का भंडार ख़त्म नहीं होता

दुनिया में इस वक़्त रोज़ाना तीन लाख बच्चे पैदा हो रहे हैं। हर बच्चे के दो-दो आँखें हैं। इस तरह अल्लाह के ख़ज़ाने से हर रोज़ छह-छह लाख आँखें सप्लाई हो रही हैं। और इतने ही कान, इतने ही हाथ, लेकिन अल्लाह ने कभी ऐलान नहीं किया कि आँखों का स्टॉक ख़त्म हो गया। इसलिए कि अल्लाह के ख़ज़ाने बेशुमार हैं।

وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَانُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ (پاره– ١٤)

हर चीज़ के बेशुमार ख़ज़ाने हमारे पास मौजूद हैं। लेकिन उसमें से जो चीज़ हम उतारते हैं वह तरतीब के साथ उतारते हैं।

दीन में आगे बढ़ने वालों की फ़ज़ीलत

वे लोग जो दीन के काम में आगे बढ़ने वाले हैं, जिनके हाथों दूसरे भी दीन से लगते हैं, उनकी अल्लाह तआ़ला ने बड़ी फ़ज़ीलत (बड़ाई और खुसूसियत) बताई है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:

وَالسَّابِقُوْنَ السَّابِقُوْنَ اُولٰٓئِکَ الْمُقَرَّبُوْنَ (پارہ– ۲۷)

यानी दीन के काम में आगे आने वाले क़ियामत के दिन अल्लाह के क़रीब होंगे।

فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ٥ (پارہ– ۲۷)

नेमतों वाले बाग़ीचों में होंगे।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ وَقَلِیْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ٥ (پارہ– ۲۷)

पहले ज़माने में ज़्यादा होते थे और बाद में थोड़े-थोड़े हो जाएँगे।

عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّکِئِیْنَ عَلَیْهَا مُتَقَابِلِیْنَ ٥ (پارہ– ۲۷)

सोने के तारों में जुड़े हुए तख़्तों पर तकिए लगाकर ये जन्नती आमने-सामने बैठे होंगे।

یَطُوْفُوْنَ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ٥ (پارہ– ۲۷)

छोटी उम्र के ख़िदमत गुज़ार (सेवक) चक्कर लगा रहे होंगे। खाने-पीने की चीज़ें लेकर।

بِاَکْوَابٍ وَّاَبَارِیْقَ وَکَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ٥ (پارہ– ۲۷)

कप, गिलास, प्याले शराब से भरे होंगे। शराब गन्दी नहीं होगी। जिसे लेकर फिर रहे होंगे। ये बरतन प्याले ऐसे होंगे जिनसे शराब झलक भी रही होगी और छलक भी रही होगी। यानी देखने में पुर-तकल्लुफ़ होंगे।

لَا یُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا یُنْزِفُوْنَ ٥ (پارہ– ۲۷)

शराब ऐसी होगी कि उस शराब के पीने के बाद सड़क पर चक्कर नहीं लगाएँगे और न मुंह से बकवास करेंगे।

और खाने में क्या मिलेगा?

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ٥ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ٥ (پاره– ٢٧)

जौनसे मेवे तू चाहे पसन्द करे, और जौनसे परिन्दे का गोश्त तू चाहे पसन्द करे।

एक ज़रूरत इनसान की बीवी की भी है, वह भी अल्लाह पाक मुहैया फ़रमाएँगे:

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ٥ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ٥ (پاره– ٢٧)

और बहुत ही ख़ूबसूरत बीवियाँ जैसे छुपे हुए मोती हों, अल्लाह पाक इनायत फ़रमाएँगे।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ये कहाँ से मिलेंगी?

جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ٥ (پاره– ٢٧)

दुनिया में जो अ़मल करोगे वही अ़मल वहाँ यह शक्ल इख़्तियार करेगा।

وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا .(پاره– ١٥)

जो कुछ भी अ़मल किया वह हाज़िर हो गया और नेमतें बन गईं।

आगे इरशाद है:

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ٥ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ٥ (پاره –٢٧)

किसी क़िस्म की बेहूदा बात जन्नत के अन्दर सुनने में नहीं आएगी। बस हर तरफ़ एक ही आवाज़ होगी "सलामन् सलामन्" यानी आपस में सलाम करेंगे। फ़रिश्ते आकर सलाम करेंगे। और जब अल्लाह की मुलाक़ात होगी तो अल्लाह तबारक व तआ़ला कहेंगे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَآاَهْلَ الْجَنَّةِ (الحديث)

قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ٥

ऐ जन्नत वालो तुम पर सलामती हो। यह जब अल्लाह से मुलाक़ात होगी, अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाएँगे।

मुज्रिमों के साथ ख़ुदा का मामला

मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह तआ़ला इनामात का मामला जिनके साथ करेंगे उनका यह ज़िक्र था। जिन्होंने भले अ़मल किए। सही रास्ते पर चले, दावत वाली फ़िज़ा जिन्होंने बनाई। बहुत-से लोगों को लेकर चले और ख़ुद भी चले, यह उनका ज़िक्र था।

लेकिन अगर ख़ुदा को नाराज़ करने वाले रास्ते पर चले। उस रास्ते पर चले जो अल्लाह के ग़ज़ब के हक़दारों का है। उस रास्ते पर चले जो गुमराह लोगों का है, तो क़ियामत के दिन कह दिया जाएगा:

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ٥ (پاره- ٢٣)

अलग हो जाओ ऐ जुर्म करने वालो!

ऐ मुज्रिमो! अब तुम भलों के साथ मत रहो। दुनिया में भले-बुरे साथ रहे, तो रहे। अब ऐ मुज्रिमो! तुम अलग हो जाओ। फिर जो मुज्रिम हैं उनके लिए हैरत में डालने वाली सज़ाएँ मुसल्लत होंगी। बहुत परेशान होंगे। अल्लाह पाक हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और तुम्हारी भी। आमीन।

इसकी ज़रूरत है कि सलाहियत वाले लोगों में दीन आ जाए

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं जो अ़र्ज़ कर रहा था वह यह कि हम किसी से कहें कि भाई तू हुकूमत छोड़ दे, हम हुकूमत चलाएँगे। इस्लाम का क़ानून चलाएँगे। इसकी ज़रूरत नहीं।

इसके बजाए हम हुकूमत वाले से, जागीरदारों से भी और मज़दूरों

से भी जाकर कहें किः

तुम्हारी हुकूमत तुम्हें मुबारक! तुम्हारा माल तुम्हें मुबारक! तुम एक अल्लाह की बड़ाई अपने दिल के अन्दर पैदा कर लो और नमाज़ें जानदार पढ़नी शुरू कर दो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े का इल्म हासिल करो। अल्लाह का ज़िक्र करके अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करो। क़ियामत का ध्यान और फ़िक्र करो और दूसरों के साथ मामलात अच्छे रखो और हर काम अल्लाह को राज़ी करने के लिए करो। दावत के काम को अपना काम बनाओ और तुम अपनी हुकूमतों में रहो।

कितना ही बड़ा दीनदार हो, उसको अगर हुकूमत दे दी जाए तो हुकूमत का चलाना कोई आसान काम नहीं है। हुकूमत का चलाना बड़े-बड़े ओ़हदों का डील करना यह सलाहियत वालों का काम होता है, बस उन सलाहियत वाले लोगों के अन्दर दीन आ जाये। अगर यह काम आप हज़रात ने पूरे आ़लम के अन्दर किया इस तरीक़े पर जो तरीक़ा आपको बताया गया है तो एक तरफ़ अल्लाह तआ़ला से जोड़ पैदा होगा और एक तरफ़ इनसानों का आपस में जोड़ होगा।

एकता और संगठन पैदा करने का तरीक़ा

इज्तिमाईयत (एकता और संगठन) पैदा करने का तरीक़ा यह है कि हर आदमी दूसरे को नफ़ा पहुँचाए। दूसरे से नफ़ा लेने की फ़िक्र न करे। अल्लाह से लेना और बन्दों को देना, इससे एकता और इत्तिहाद पैदा होता है। अल्लाह से लेने का नाम इबादत है, और बन्दों को देने का नाम ख़िलाफ़त है। यानी एक हाथ फैला रहे अल्लाह से लेने के लिए और दूसरा हाथ फैला रहे बन्दों की तरफ़, देने के लिए।

हम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से बेपरवाह नहीं हो सकते

अहले-बातिल (गुमराह और ग़ैर-हक़ वालों) में जो लोग समझ-बूझ वाले हैं वे उम्मत को सहाबा से दूर करने की चाल चलते हैं, हालाँकि ज़बान पर इस्लाम और कुरआन का नाम होता है।

वे सारे वाक़िआत जो मैंने ज़िक्र किए तथा इनके अलावा बहुत से वाक़िआत हैं जिन्हें ये लोगों को जमा करके सुनाते हैं।

कहते हैं कि ये जिस तरह आपस में लड़ते रहे और जिसने ज़िना भी किया हो, शराब भी पी हो, वग़ैरह वग़ैरह, क्या ये लोग हमको कुरआन सिखाएँगे। हम तो कुरआन को बिना किसी वास्ते के खुद समझेंगे।

कुरआन को जितना सहाबा ने समझा है बाद वाले उसे उतना नहीं समझेंगे। क्योंकि उनके सामने कुरआन उतरा, कुरआन नाज़िल होने पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बात इरशाद फ़रमाई वह उन्होंने अपने कानों से सुनी है। इसलिए उनकी बात जितनी सही है बाद वाले अगर महज़ कुरआन को सामने रखकर समझेंगे तो यह बात बिल्कुल सही नहीं होगी। बात सही उनकी ही होगी जिन्होंने बिना वास्ते के (अप्रत्यक्ष रूप से) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सुनी होगी।

जिसने सुना उसने समझा

इसकी मिसाल मैं दे दूँ कि जैसे एक शख़्स ने अपने पहरेदार को कहलवाया कि ऐ फ़लाँ! मोटर आ रही है, **उसे रोको, मत जाने दो।**

उस मुलाज़िम (नौकर) ने जिससे हाकिम ने कहा, दूसरे से कहा। दूसरे ने तीसरे से और फिर उसने असल ज़िम्मेदार के पास पर्चा लिख दिया कि **मोटर को रोको, मत जाने दो।**

पर्चा जिसको मिला वह "रोको" के बजाए "मत" पर रुका। और मामले को बिल्कुल उल्टा कर दिया।

तो जिसने सुना, उसने समझा **रोको, मत जाने दो**। उसने समझा "**रोको मत, जाने दो**"। तो देखो! पन्द्रह लोगों के वास्ते से बात पहुँची तो लफ़्ज़ वही रहा मायने बदल गये।

जुमला एक, मायने अलग-अलग

एक आदमी दस्तरख़्वान पर बैठा हुआ है और कह रहा है "पानी लाओ" तो उसका मतलब क्या है कि "गिलास में लाओ।"

एक आदमी ग़ुसलख़ाने (बाथरूम) में जाते वक़्त कह रहा है "पानी लाओ!" तो उसका मतलब है "बालटी में लाओ।" एक आदमी बैतुल्ख़ला (शौचालय) में जाते वक़्त कहे कि पानी लाओ"। तो उसका मतलब है "लोटे में लाओ"। एक आदमी दम करने के लिए कह रहा है "पानी लाओ!" तो उसका मतलब होगा कि शीशी में लाओ। तो जुमला एक ही है। मगर मायने अलग-अलग हो गए। यह कौन समझेगा? वही जिसने सुना। तो सहाबा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात को जितना समझेंगे उनके अ़लावा कोई नहीं समझ सकता।

यह उनकी चाल है कि सहाबा से इनको काटो। इस क़िस्म के वाक़िआत बयान करो और डायरेक्ट कुरआन को समझो। मैंने ये सारे वाक़िआत तफ़सीली क्यों बताए? इसलिए कि सहाबा की ज़िन्दगी से क़ियामत तक उसूल इस उम्मत को मिलेंगे। इसलिए बताए गए ताकि उनकी इत्तिबा (पैरवी) के ज़रिये कामयाबी क़द चूमे। सहाबा से हम बेपरवाह नहीं हो सकते।

शैतान की बड़ी चाल

देखो! कुरआन पाक की खुली हुई आयतें हमारे सामने हैं। मगर एक आदमी डायरेक्ट कुरआन को समझने वाला तारीख़ की किताब

"इब्नुल असीर" को सामने रखकर कुरआन की आयतों का मुक़ाबला कर रहा है।

यह शख़्स डिब्बे के अन्दर से सुअर का गोश्त निकाल-निकाल कर खा रहा है। हमारे साथी ने कहा "भाई यह तो हराम है। यह तो सुअर का गोश्त है।" यह नाराज़ हो गया और कहा कि तुम 'हिदाया' (एक किताब का नाम है) के सिवा कुछ जानते ही नहीं। कुरआन को तुम लोग जानते ही नहीं। यह तो कुरआन में है।

मेरे साथी ने कहा "अरे कुरआन में सुअर का गोश्त हलाल है? उसने कहा हाँ! और कुरआन की यह आयत पढ़ी:

وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ (پاره- ٦)

"यानी अहले किताब (यहूदियों व ईसाइयों) का खाना तुम्हारे लिए हलाल और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है।

तो देखो डायरेक्ट कुरआन समझने वाला सुअर खा रहा है या नहीं खा रहा है?

हमारा भाई समझदार था। उसने कहा कुरआन की दूसरी आयत खुल्लम-खुल्ला हराम क़रार दे रही है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ (پاره- ٦)

"यानी मुर्दार, ख़ून और सुअर का गोश्त हराम है।"

इसपर डायरेक्ट कुरआन समझने वाला क्या कहता है, कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने का ख़िन्ज़ीर (सुअर) हराम है जो गन्दगी खाता था, आजके ज़माने का ख़िन्ज़ीर अच्छी ग़िज़ा खाता है इसलिए हलाल है।

देखो! यह कितनी बड़ी शैतान और अहले-बातिल की चाल है कि हलाल व हराम का महकमा अपने हाथ में है।

तमाम सहाबा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस आयत का जो मतलब बताया वह यह है कि अहले-किताब यहूदी

व ईसाई का ज़िबह किया हुआ चन्द शर्तों के साथ हलाल है। हमने तो यह समझा। और यह क़ुरआन को सामने रखकर एक घन्टे के लिए जमा होने वाले क़ुरआन की आयतें पढ़कर कहेंगे कि वकील साहिब अपनी राय बताईए। डॉक्टर साहिब अपनी राय बताईए। यह रोने की चीज़ें हैं रोने की चीज़ें।

हमें कोई ग़म नहीं

मोहतरम दोस्तो! दावत का काम हम लोगों ने छोड़ दिया तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक दीन दुनिया से ख़त्म होकर दुनिया के करोड़ों इनसान जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं और हमारे दिलों को सदमा नहीं, हमारे दिलों के अन्दर दर्द व ग़म नहीं।

अगर बीवी को कैंसर की बीमारी लग गई और वह चारपाई पर तड़प रही हो, डॉक्टर ने कह दिया है कि अब बचेगी नहीं, तो कितना सदमा होता है कि दो जवान बेटियों की शादी का क्या होगा, और छोटे-छोटे बच्चे जो दूध माँग रहे हैं, ये बच्चे कह रहे होंगे कि माँ! माँ! दूध तो ला। मेरी माँ कहाँ गई। इस हालत में बच्चों को देखकर कितना रोना आता है।

मेरो दोस्तो! कहने की बात यह है कि बीवी की जुदाई पर जितना आज ग़म है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ दावत का काम उम्मत ने छोड़ा, इसकी वजह से आज करोड़ों-करोड़ों इनसान बग़ैर कलिमे के जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं और इसका हमारे दिलों के अन्दर कोई ग़म नहीं है। न कोई इसका दर्द है, न बेचैनी है, न बेक़रारी है। हमारी रातों की नींदें उड़ जानी चाहिएँ कि या अल्लाह! यह क्या हो रहा है?

चार-चार महीने जमाअ़तों के अन्दर फिरकर और अपने मक़ाम पर रहकर, मस्जिदवार जमाअ़त बनाकर गश्तों में, तालीमों में, घर वालों के साथ ज़ेहन बनाने में, लोगों के दर-दर घर-घर जाकर ठोकर

खाने में और उनकी कड़वी-कसेली सुनना और बरदाश्त करना, जो तकलीफ़ आए उसे बरदाश्त करना और अल्लाह तआ़ला से रातों को उठ-उठकर दुआएँ माँगना कि ऐ अल्लाह! तेरे हाथ में है कि तू इनसानी दुनिया में हिदायत की हवाएँ चला दे।

इस तरीक़े से चारों तरफ़ रातों को रोने वाले और चारों तरफ़ दिन को खुशामद करने वाले और हर तरह की तकलीफ़ें बरदाश्त करने वाले, अगर वजूद में आ गए तो मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह पाक खुश हो जाएँगे। और जब अल्लाह फ़ैसला कर देंगे तो अल्लाह पाक बड़े क़ादिरे-मुतलक़ हैं, क्या अ़जब है कि कोने के कोने और मुल्क के मुल्क ईमान की तरफ़ आने शुरू हो जाएँ। और मस्जिदें आबाद होनी शुरू हो जाएँ। और बड़े-बड़े दीन के दाई (दावत देने वाले) तैयार हो जाएँ। और चारों तरफ़ दीन की दावत की फ़िज़ा तैयार हो जाए। जैसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दौर के अन्दर कितनी मुख़ालफ़त करने वाले थे लेकिन कैसे रातों को रोने वाले बन गए। और उनके अन्दर कैसा उम्मत का दर्द बस गया। आज के हालात में हमें कामयाबी उनके रास्ते पर चलने से ही मिलेगी।

उनके तौर-तरीक़ों को ज़िन्दगियों में राईज करने पर ही मिलेगी।

अल्लाह पाक हमें और तुम्हें इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(आमीन)